E-mail:-adhuniksamachar2014@gmail.com website:www.adhuniksamachar.com

आधुनिक समाचार

आधुनिक भारत का आधुनिक नजरिया

प्रयागराज से प्रकाशित हिन्दी दैनिक

वर्ष -12 अंक - 115 प्रयागराज, शुक्रवार 14 अगस्त, 2026 पृष्ठ- 8 मूल्य : 3.00 रूपये

रिपोर्ट- ईरान को पता था ट्रम्प तुर्किए में कहां हैं, फ्लोर तक की जानकारी थी, इसके चलते सुरक्षा एजेंसियों ने आखिरी वक्त पर प्लेन बदला

वॉशिंगटन डीसी। तुर्किये में नाटो समिट के दौरान ईरानी एजेंटों को अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प के ठिकाने की जानकारी मिल गई थी। अमेरिकी अखबार द न्यूयॉर्क टाइम्स ने रिपोर्ट में यह दावा किया है। रिपोर्ट के मुताबिक ईरानी एजेंटों को ट्रम्प के ठहरने वाली बिल्डिंग ही नहीं, बल्कि उनके फ्लोर तक का पता था। अमेरिकी इंटेलिजेंस ने इसे ट्रम्प की सुरक्षा के लिए बड़ा खतरा माना, जिसके बाद सुरक्षा एजेंसियों ने उनका ट्रेवल प्लान बदलकर दूसरे विमान से रवाना किया। 11 अगस्त को ट्रम्प ने भी इस घटना की पुष्टि की। पत्रकारों से बातचीत में उन्होंने कहा कि जिस विमान से वे तुर्किये पहुंचे थे, उसी पर हमले का सबसे ज्यादा खतरा था। ट्रम्प ने बताया कि उन्हें एयरपोर्ट के केटरिंग ट्रक में बैठाकर चुपचाप दूसरे विमान तक ले जाया गया। ऐसा इसलिए किया गया, ताकि एयरपोर्ट पर मौजूद किसी भी व्यक्ति को उनकी आवाजाही की भनक न लगे। ट्रम्प पर खतरे की जानकारी मिली-रिपोर्ट में दावा किया गया कि ट्रम्प को ले जाने वाले किसी भी विमान पर जमीन से हवा में

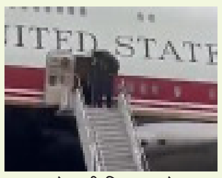

मार करने वाली मिसाइल से हमला किया जा सकता था। अमेरिकी इंटेलिजेंस को पता चला कि नाटो समिट के आसपास एक व्यक्ति को कंधे से दागी जाने वाली मिसाइल के साथ भी देखा गया था। इसके बाद सीक्रेट सर्विस और सीनियर अधिकारियों ने ट्रम्प को तुर्किये से निकालने के लिए ऑपरेशन तैयार किया। ट्रम्प के साथ रक्षा मंत्री, दो मंत्री अलग प्लेन में गए-सीबीएस न्यूज की रिपोर्ट के मुताबिक, ट्रम्प ने रक्षा मंत्री पीट हेगसेथ के साथ प्लेन बदलकर तुर्किये की यात्रा की। वहीं, विदेश मंत्री मार्को रूबियो और वित्त मंत्री स्कॉट बेसेंट ट्रम्प के साथ जाने के बजाय पहले प्लेन से गए, ताकि प्रेसिडेंट के साथ कोई हादसा हो जाए तो अमेरिका में सत्ता संभालने की व्यवस्था बनी रहे। अमेरिका में अगर राष्ट्रपति की मौत हो जाए या वे काम करने की स्थिति में न रहें तो सबसे पहले उपराष्ट्रपति को राष्ट्रपति की जिम्मेदारी मिलती है। उनके बाद प्रतिनिधि सभा (हाउस ऑफ रिप्रेजेंटेटिव्स) के स्पीकर, फिर सीनेट के प्रेसिडेंट का नंबर आता है। इसके बाद विदेश मंत्री और फिर वित्त मंत्री का नंबर आता है। कतर के गिफ्ट किए प्लेन में बैठकर गए, मिलिट्री प्लेन से लौटे-इससे पहले वॉशिंगटन पोस्ट ने दावा किया था कि 8 जुलाई को अंकारा से रवाना होते समय ट्रम्प कैमरों के सामने बोइंग 747-8 एयरफोर्स वन में सवार हुए थे। यह विमान उन्हें कतर ने गिफ्ट किया था। इसके बाद एयरपोर्ट पर सामान और खाना पहुंचाने वाली केटरिंग गाड़ी की मदद से उन्हें चुपचाप अमेरिकी वायुसेना के वीआईपी सैन्य विमान सी-32ए तक ले जाया गया।

मेक्सिको में फंसे पंजाबी युवक का रोते हुए आया वीडियो,बोला- भागने पर पिटाई की, चल नहीं पा रहा हूं, डंकी रूट से न आए कोई

मेक्सिको। पंजाबी सिख युवक ने रोते हुए एक वीडियो जारी किया है। इसमें वह मेक्सिको में फंसे होने की बात बताते हुए लोगों से वहां न आने की अपील कर रहा है। वीडियो

में युवक कमरे के अंदर बिस्तर पर लेटा हुआ दिखाई दे रहा है। वह हाथ जोड़कर अपने साथ हुई मारपीट के बारे में बता रहा है। वीडियो पर कैप्शन लिखा है- 'मेक्सिको में भारतीय सिख के साथ घिनौना व्यवहार।' युवक ने बताया कि वह डंकी रूट के जरिए मेक्सिको पहुंचा था। वहां से निकलने और भागने की कोशिश की, लेकिन उसके साथ मारपीट की गई। युवक का कहना है कि मारपीट के कारण वह ठीक से चल भी नहीं पा रहा है। वीडियो में युवक काफी परेशान और डरा हुआ नजर आ रहा है। वह रोते हुए लोगों से अपील करता है कि वे मेक्सिको जाने की कोशिश न करें। साथ ही, उसने लोगों से कहा कि वे किसी एजेंट के झांसे में न आएं और डंकी रूट के जरिए विदेश जाने से बचें। डंकी रूट पर निकले युवक मेक्सिको में फंसे: यह वीडियो कल (13 अगस्त को) टिकटॉक अकाउंट @amol__singh पर अपलोड किया है, जिसे बाद में एक्स (पूर्व ट्वीटर) पर @Jkaur0304 समेत कई यूजर्स ने शेयर किया। कैप्शन में लिखा है कि गुरुद्वारा की मदद से चलने वाले डंकी रूट पर निकले युवक मेक्सिको में फंसे हैं। उनके लिए प्रार्थना की जा रही है। कोई यहां भागने की कोशिश न करें: 33 सेकंड के वीडियो में युवक दोनों हाथ जोड़कर राते हुए दिख रहा है। उसने लोगों से अपील करते हुए कहा कि उसके जैसी गलती कोई न करे। यहां से भागने की कोशिश न करें। युवक ने बताया कि उसने भागने की कोशिश की, जिसके बाद उसकी हालत खराब हो गई। वह ठीक से चल भी नहीं पा रहा। हाथ जोड़कर माफी मांगता नजर आया: वीडियो बनाने वाले की ओर इशारा करते हुए उसने कहा कि यही व्यक्ति उसे यहां तक लेकर आया था। युवक ने गलती मानते हुए कहा कि उसे इसकी सजा मिल गई। उसके साथ बुरा व्यवहार हुआ। अंत में वह हाथ जोड़कर माफी मांगता नजर आया। डंकी रूट का खर्चा 50 से 70 लाख रुपए-भारत से एक डंकी के अमेरिका पहुंचने का औसत खर्च 20 से 50 लाख रुपए है। कभी-कभी ये खर्च 70 लाख तक पहुंच जाता है। एजेंट वादा करता है कि डंकी को कम परेशानी झेलनी पड़ेगी, लेकिन असल में ऐसा कुछ नहीं होता। ज्यादातर पेमेंट तीन किस्तों में होती है। पहली भारत से निकलने पर, दूसरी कोलंबिया बॉर्डर पहुंचने पर, तीसरी अमेरिकी बॉर्डर के पास पहुंचने पर। पैसों का भुगतान नहीं होने पर एजेंटों के गिरोह मैक्सिको या पनामा में डंकी की हत्या करके पीछा छुड़ा लेते हैं। डंकी रूट से क्यों विदेश जाते हैं लोग-अब सवाल उठता है कि लोग लीगल तरीके से क्यों नहीं जाते। दरअसल, ये लोग कम एजुकेटेड होते हैं और विदेशों में बसने के लिए होने वाले एग्जाम क्रैक नहीं कर पाते। यहां तक कि वे ठीक से अंग्रेजी भी नहीं बोल पाते। कुछ समय पहले तक डंकी रूट लेने वाले सबसे ज्यादा लोग पंजाब से हुआ करते थे और ये कनाडा ही जाते थे।

वांगचुक बोले- 2047 तक भारत विकसित देश नहीं बन पाएगा,श्रीलंका-बांग्लादेश जैसे देश हमसे आगे सही नेतृत्व मिले, इसके लिए शांतिपूर्ण क्रांति जरूरी

हिमांचल। एक्टिविस्ट सोनम वांगचुक ने भारत की प्रति व्यक्ति आय का जिक्र करते हुए कहा कि अगर मौजूदा स्थिति जारी रही

तो 2047 तक भारत विकसित देश नहीं बन पाएगा। वांगचुक के मुताबिक श्रीलंका-बांग्लादेश जैसे देश भारत से आगे निकल चुके हैं। देश को सही नेतृत्व चुनने के लिए शांतिपूर्ण क्रांति की जरूरत है। उन्होंने गुरुवार देर रात एक वीडियो किया। इसमें उन्होंने कहा कि पिछले कुछ दिनों से उनकी तबीयत ठीक नहीं थी। इस दौरान उन्होंने देश और उसके भविष्य को लेकर काफी सोचा। सोनम वांगचुक एक्टिविस्ट-'सबसे बड़ी कमी हमारे नेतृत्व को चुनने में है। जब तक नेता सही नहीं होंगे, पूरा देश गलत दिशा में जाता रहेगा। संसद के करीब एक तिहाई सांसदों पर हत्या, दुष्कर्म और अपहरण जैसे गंभीर आरोप हैं।' वीडियो में वांगचुक ने 5 बातें कहीं- 50 साल पहले भारत से पीछे और बराबर रहने वाले कई पड़ोसी देश अब काफी आगे निकल चुके हैं। थाईलैंड, मलेशिया, इंडोनेशिया, श्रीलंका और बांग्लादेश इसका उदाहरण है। अगर भारत को 2047 तक दुनिया में एक सम्मानित देश बने रहना है तो बड़े बदलाव की जरूरत है। देश में शासन और व्यवस्था से जुड़ी समस्याओं को किसी एक राजनीतिक पार्टी तक सीमित नहीं किया जा सकता। अलग-अलग पार्टियों की सरकारों के दौरान भी विरोध की आवाजों को दबाया गया है। 2012-13 के भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन के बाद राजनीतिक बदलाव हुआ। सरकार बदलने के बावजूद भ्रष्टाचार और अन्याय खत्म नहीं हुआ। अब इन समस्याओं ने एक नया रूप ले लिया है और पहले से ज्यादा गंभीर हो गई हैं। देश को आगे बढ़ाने के लिए राजनीतिक नेतृत्व चुनने के तरीके में बदलाव जरूरी है। भारत को शांतिपूर्ण क्रांति की जरूरत है, ताकि देश को सही नेतृत्व मिल सके। ऐसे लोगों की तलाश है, जो निस्वार्थ, निडर, चरित्रवान और सक्षम हों। पता नहीं ऐसे लोग देश में कहां हैं। लोगों से अपील है की वे अपने क्षेत्र और देश से कम से कम एक ऐसे व्यक्ति का नाम सुझाएं। इन लोगों के नाम मेरे लिए स्वतंत्रता दिवस का तोहफा होगा। ऐसे लोगों से मिलना चाहता हूं, जो देश का नया नक्शा बनाने में मदद कर सकें। शिक्षा मंत्री के इस्तीफे के बाद भी उन्हें नए मंत्री से बड़े बदलाव की उम्मीद नजर नहीं आ रही है। देश की तरक्की उसकी शिक्षा व्यवस्था से सीधे जुड़ी हुई है। जब तक शिक्षा पीछे रहेगी, देश का भविष्य भी पीछे रहेगा।

अमेरिका में एआई की मदद से मां-भाई की हत्या का आरोप,भारतीय मूल का लड़का वारदात के बाद फरार हुआ, पुलिस ने पार्किंग लॉट से पकड़ा

मैसाचुसेट्स। अमेरिका के मैसाचुसेट्स राज्य में भारतीय मूल के 17 वर्षीय अर्जुन अरविंद पर अपनी मां और छोटे भाई की हत्या का आरोप लगा है। पुलिस ने उसे

बुधवार सुबह गिरफ्तार किया। अधिकारियों के मुताबिक, उसने अपनी 45 वर्षीय मां सुधा वेंकटेशन और 14 वर्षीय भाई सिद्धार्थ अरविंद की हत्या की। उसके खिलाफ हत्या के दो मामलों के अलावा परिवार के सदस्यों पर हमला, मारपीट और बिना इजाजत मां की कार लेकर फरार होने समेत कई अन्य आरोप भी लगाए गए हैं। जांच के दौरान सामने आया कि अर्जुन पिछले कुछ समय से इंटरनेट और ChatGPT पर अपने परिवार की हत्या से जुड़ी काल्पनिक कहानियां और ऐसे विषयों पर जानकारी खोज रहा था। पुलिस अब उसकी ऑनलाइन गतिविधियों को भी जांच का हिस्सा मानकर पड़ताल कर रही है। अलग-अलग जगह पड़े मिले मां-बेटे के शव-घटना का खुलासा उस समय हुआ, जब मंगलवार शाम करीब साढ़े छह बजे एक ट्यूटर पढ़ाने के लिए घर पहुंची। काफी देर तक दरवाजा नहीं खुला तो उसने अर्जुन के पिता को फोन किया। पिता भी पत्नी और बेटे से संपर्क नहीं कर सके। इसके बाद उन्होंने पुलिस से घर जाकर हालचाल देखने को कहा। पुलिस जब घर पहुंची तो बेसमेंट में सुधा वेंकटेशन और पहली मंजिल पर सिद्धार्थ अरविंद का शव मिला। अधिकारियों ने बताया कि दोनों के शरीर पर गंभीर चोटों के निशान थे। हालांकि मौत की वजह और वारदात में इस्तेमाल किए गए हथियार की जानकारी अभी सामने नहीं आई है। इसकी जांच जारी है। हत्या के बाद कार समेत गायब था आरोपी-वारदात के बाद अर्जुन और उसकी मां की कार दोनों घर से गायब थीं। इससे पुलिस को शक हुआ कि आरोपी घटनास्थल से कार लेकर भागा है। इसके बाद पुलिस ने तुरंत उसकी तलाश शुरू की और आसपास के सभी शहरों की पुलिस को अलर्ट जारी कर दिया। बुधवार सुबह मैसाचुसेट्स के वेइलैंड इलाके में एक पार्किंग में पुलिस को संदिग्ध कार खड़ी मिली। अधिकारियों ने कार की घेराबंदी की और जांच करने पर अंदर अर्जुन मौजूद मिला। पुलिस ने उसे बिना किसी विरोध या झड़प के हिरासत में ले लिया। बाद में पूछताछ और शुरुआती जांच के आधार पर उसे अपनी मां सुधा वेंकटेशन और 14 वर्षीय भाई सिद्धार्थ अरविंद की हत्या के आरोप में गिरफ्तार कर लिया। फिलहाल पुलिस मामले की जांच कर रही है और यह पता लगाने की कोशिश कर रही है कि वारदात के बाद अर्जुन कहां-कहां गया और उसका मकसद क्या था। ChatGPT से काल्पनिक कहानियां लिखने में मदद मांगी-जांच में पता चला है कि अर्जुन पिछले कुछ समय से इंटरनेट और ChatGPT पर परिवार की हत्या जैसे विषयों पर जानकारी खोज रहा था। उसने ChatGPT से हत्या और रहस्य से जुड़ी काल्पनिक कहानियां लिखने में भी मदद मांगी थी। इन कहानियों में ऐसे किरदार थे, जो अपने ही परिवार के लोगों की हत्या करते हैं। उसने ChatGPT से इस तरह के कई सवाल भी पूछे थे। हालांकि, जांच एजेंसियों ने यह नहीं कहा है कि ChatGPT ने उसे हत्या करने का तरीका बताया या योजना बनाने में मदद की।

मोदी से मिलने के सातवें दिन सुखबीर पर हुआ हमला,एक्सपर्ट बोले- बादल के प्रति कट्टरपंथियों में नफरत,बीजेपी से नजदीकियां बनाने पर भी रोष

लुधियाना/नयी दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से 7 अगस्त को शिरोमणि अकाली दल (एसएडी)

के प्रधान सुखबीर बादल ने मुलाकात की थी। इसके ठीक 6 दिन बाद (13 अगस्त को) महाराष्ट्र के नांदेड में गुरुद्वारा माता साहिब में निहंग ने उन पर हमला कर दिया। सुखबीर बादल पर निहंग के हमले का सीधा-सीधा इंपेक्ट पंजाब की पॉलिटिक्स पर भी दिखने को मिल सकता है। पॉलिटिकल एक्सपर्ट्स का मानना है कि सुखबीर बादल से कट्?टरपंथी लोग राम रहीम केस और बेअदबी के मुद्दों को लेकर नफरत करते हैं। यही नहीं, कट्टरपंथियों को सुखबीर बादल का प्रधानमंत्री मोदी से मिलना भी पसंद नहीं है। सुखबीर बादल से कट्?टरपंथी पहले ही नफरत करते थे। अब जब वह प्रधानमंत्री से मिले तो उनमें गुस्सा और भड़क गया, जिसका नजीता यह है कि नांदेड़ साहिब में सुखबीर बादल पर हमला हो गया। सुखबीर बादल पर हमले के ये 3 राजनीतिक मायने-एसएडी के खिलाफ पुरानी नाराजगी:- एसएडी अपने कैडर और पारंपरिक समर्थकों को एकजुट करने में जुटा है। उधर, कट्?टरपंथी विचारधारा के लोग उनकी खिलाफत करने में जुटे हैं। हमले की सभी ने निंदा की, लेकिन विपक्षी दल इसे बेअदबी मामलों, 2015 के गोलीकांड और डेरा विवाद को लेकर पंथक समर्थकों में सुखबीर बादल के प्रति गुस्सा बता रहे हैं। पॉलिटिकल एक्सपर्ट प्रमोद बातिश का कहना है कि इस घटना से सिख मतदाताओं को पुरानी यादें ताजा करवाकर एसएडी से दूर किया जा सकता है। पंथक स्पेस में सीधा दावेदार: पॉलिटिकल एक्सपर्ट प्रोफेसर डॉ. केके रत्तू का कहना है कि पंथक वोट अगर सुखबीर बादल के साथ एकजुट होता है तो इससे एसएडी को विधानसभा चुनाव में फायदा मिल सकता है। ऐसे में पंथक वोट को एसएडी से दूर करने के लिए विपक्षी दल लगातार 2015 की बेअदबियों का जिक्र कर रहे हैं। पिछली बार यह वोट एसएडी से खिसककर आप की तरफ डायवर्ट हुआ, लेकिन इस बार पंथक वोट के पास अकाली दल (वारिस पंजाब दे) नया विकल्प है। बीजेपी-एसएडी के संभावित गठबंधन पर असर: पंजाब में बीजेपी-एसएडी गठबंधन की अटकलें चल रही हैं। सुखबीर बादल की हाल में ही पीएम मोदी से मुलाकात हुई। उसके बाद पंजाब में गठबंधन की चर्चा शुरू हुई। पॉलिटिकल एक्सपर्ट पवनदीप शर्मा का कहना है कि पिछली बार जब गठबंधन सरकार थी तो हिंदू-सिख एकता पर फोकस किया गया। इसी आधार पर दोबारा सरकार रिपीट हुई। तब एसएडी ने कट्टरपंथियों के मुद्दों को किनारे किया और डेवलपमेंट की राजनीति की। उसी दौरान बेअदबियां हो गई। केंद्र सरकार ने खेती कानून बनाए और उसमें एसएडी की सहमति की बात कही गई। हालांकि, एसएडी ने नाम वापस लिया। कट्?टरपंथी इस बात से भी नाराज हैं कि सुखबीर बादल भाजपा के नजदीक जा रहे हैं और उनके मुद्दे फिर से पीछे हो जाएंगे। ऐसी स्थिति में भाजपा एसएडी के संभावित गठबंधन पर असर पड़ सकता है। पॉलिटिकल एक्सपर्ट ने क्या कहा, जानिए--भाजपा के सिख नेता भी निशाना बन सकते हैं: पॉलिटिकल एक्सपर्ट प्रोफेसर केके रत्तू का कहना है कि पंजाब में प्रकाश सिंह बादल की सरकार की सबसे बड़ी उपलब्धि यह रही कि उन्होंने हिंदू-सिख एकता को बनाए रखा। सुखबीर बादल ही नहीं, बल्कि किसी भी पॉलिटिकल फिगर पर इस तरह का हमला होना साधारण घटना नहीं है। सुखबीर बादल के प्रति कट्टरपंथियों में नफरत है और उसी नफरत का परिणाम है कि बादल पर बार-बार हमले हो रहे हैं।

कोलंबिया भूकंप के 2 दिन बाद मलबे में मिला नवजात,5 मंजिला इमारत गिरी थी

कोलंबिया। साउथ अमेरिकी देश कोलंबिया में सोमवार रात

आए 7.4 तीव्रता के भूकंप के करीब 48 घंटे बाद मलबे से एक बच्चे को जिंदा निकाला गया। बच्चा एक गिरी हुई पांच मंजिला

रेस्क्यू टीम को आवाज देकर बोला शख्स- यहां बच्चे के साथ हूं

रिहायशी इमारत के मलबे में फंसा था। उसके साथ एक आदमी भी दबा हुआ था। यह रेस्क्यू बुधवार को भूकंप के बाद चल रहे तीसरे दिन के सर्च ऑपरेशन के दौरान हुआ। सीएनएन की रिपोर्ट के मुताबिक, रेस्क्यू टीम ने बताया कि उन्हें मलबे के नीचे से एक आदमी की आवाज सुनाई दी। आदमी ने कहा- 'हां, मैं यहीं हूं। मैं एक बच्चे के साथ हूं।' इसके बाद मौके पर मौजूद रेस्क्यू टीम और बाकी लोगों ने तुरंत हाथों से मलबा हटाना शुरू कर दिया। एक भारी कंक्रीट स्लैब के नीचे एक शख्स और नवजात बच्चा फंसा हुआ था। लोगों ने स्लैब को उठाया और दोनों को बचाया गया। प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक, बच्चे का सिर नीला पड़ गया था, क्योंकि उसे सांस लेने में परेशानी हो रही थी। भारत बोला- हम हर संभव मदद के लिए तैयार-भारत के विदेश मंत्री एस जयशंकर ने मंगलवार को सोशल मीडिया पर पोस्ट कर कहा कि कोलंबिया में जान-माल के नुकसान से वे बेहद दुखी हैं। उन्होंने मृतकों के परिवारों के प्रति संवेदना जताई और घायलों के जल्द ठीक होने की कामना की। उन्होंने कहा कि भारत जरूरत पड़ने पर कोलंबिया को हर संभव मदद देने के लिए तैयार है। बेघर लोगों को आर्थिक मदद देगा कोलंबिया-कोलंबिया के राष्ट्रपति अबेलार्डो डे ला एस्प्रिएला ने प्रभावित इलाकों का दौरा कर राहत और बचाव कार्यों की समीक्षा की। उन्होंने रिसाराल्दा प्रांत में प्रभावित लोगों को 3 महीने तक घरेलू सेवाओं के बिल से राहत देने का आदेश दिया है। जिन लोगों के घर पूरी तरह तबाह हो गए हैं, उन्हें अस्थायी आवास के लिए आर्थिक मदद दी जाएगी। बाद में घरों की मरम्मत और दोबारा निर्माण में भी सहायता दी जाएगी। परेरा में सबसे ज्यादा मौतें-परेरा शहर में अकेले 60 लोगों की मौत हुई है। करीब 5 लाख की आबादी वाला यह शहर भूकंप के केंद्र से 64 किलोमीटर से भी कम दूरी पर है। राजधानी बोगोटा समेत कई शहरों में भी तेज झटके महसूस किए गए। एहतियात के तौर पर लोग इमारतों से बाहर निकलकर सड़कों पर आ गए। चोको और रिसाराल्डा में भारी नुकसान-अमेरिकी भूगर्भीय सर्वेक्षण के मुताबिक, भूकंप सोमवार सुबह करीब 7:34 बजे आया।

इसका केंद्र चोको इलाके में सैन जोसे डेल पालमार के पास था। भूकंप की गहराई 107 किलोमीटर थी।

हिमाचल के चंबा में 3.0 तीव्रता का भूकंप,महाराष्ट्र के नासिक में भी झटके महसूस हुए

लखनऊ। हिमाचल प्रदेश के चंबा में शुक्रवार सुबह 6:30 बजे

3 तीव्रता का भूकंप आया। नेशनल सेंटर फॉर सीस्मोलॉजी (एनसीएस) के मुताबिक केंद्र चंबा में 33.131 अक्षांश और 76.585 देशांतर पर था। भूकंप की गहराई जमीन से 5 किमी नीचे थी। उधर, महाराष्ट्र के नासिक में भी कुछ घंटों के अंतराल में दो बार भूकंप के झटके महसूस किए गए। नेशनल सेंटर फॉर सिस्मोलॉजी के मुताबिक, पहला भूकंप रात 12:05 बजे आया, जिसकी तीव्रता 3.5 थी।

इसके बाद सुबह 5:32 बजे 3.4 तीव्रता का दूसरा भूकंप आया।

इनमें किसी तरह के नुकसान की खबर नहीं है।

लाल किला धमाका अलकायदा ने कराया,यूएन की रिपोर्ट में दावा,एनआईए की जांच में भी यही निकला था-11 मौतें हुई थीं

नयी दिल्ली। लाल किले के पास हुए धमाके में अलकायदा से जुड़े संगठन का हाथ था। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (यूएनएससी)

की 38वीं रिपोर्ट में यह दावा किया गया है। 10 नवंबर 2025 की शाम लाल किले के पास हुए इस धमाके में 11 लोगों की मौत हुई थी, जबकि कई अन्य लोग घायल हुए थे। रिपोर्ट के मुताबिक अलकायदा इन द इंडियन सबकॉन्टिनेंट (एक्यूआईएस) ने इस धमाके को अंजाम दिया। इसमें कहा गया है कि एक्यूआईएस अब छोटे-छोटे सेल के जरिए काम कर रहा है और उसने अपना लॉजिस्टिक्स, फाइनेंशियल नेटवर्क भी तैयार कर लिया है। इससे पहले आई यूएनएससी की 37वीं रिपोर्ट में एक सदस्य देश ने इस हमले के पीछे जैश-ए-मोहम्मद (JeM) का हाथ बताया था। यानी इस हमले को लेकर संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की लगातार दो रिपोर्टों में दो अलग-अलग आतंकी संगठनों के नाम सामने आए हैं। हालांकि, एनआईए की चार्जशीट में दावा किया गया था कि आरोपी एक्यूआईएस से जुड़े थे। एक्यूआईएस बांग्लादेश में भी अपने आतंकी सेल बनाने की कोशिश कर रहा-यूएनएससी की एनालिटिकल सपोर्ट एंड सेंक्शंस मॉनिटरिंग टीम की यह रिपोर्ट 10 अगस्त को जारी की गई। इसमें कहा गया है कि एक्यूआईएस अब बिखरे हुए छोटे आतंकी संगठन की बजाय एक क्षेत्रीय आतंकी नेटवर्क के रूप में विकसित हो चुका है। संगठन ने अपना लॉजिस्टिक्स और फाइनेंशियल नेटवर्क तैयार कर लिया है और अब बड़े समूहों के बजाय छोटे-छोटे, अलग-अलग सेल के जरिए काम कर रहा है। इस रिपोर्ट में कहा गया है कि एक्यूआईएस बांग्लादेश में भी अपने आतंकी सेल बनाने की कोशिश कर रहा है। रिपोर्ट में इसे क्षेत्रीय सुरक्षा के लिए गंभीर चिंता का विषय बताया गया है। रासायनिक और जैविक हथियार बनाने की कोशिश में जुटा अलकायदा-रिपोर्ट में कहा गया है कि अलकायदा और इस्लामिक स्टेट (ISIL/दाएश) लंबे समय से ऐसे जहरीले रासायनिक और जैविक हथियार बनाने की कोशिश कर रहे हैं,**आगे की खबर पेज संख्या 07 पर..**

आधुनिक समाचार
हिन्दी दैनिक

फेडरेशन ऑफ पंजाबी एसोसिएशन के संकल्प समारोह में उमड़ा पंजाबी समाज, मदन लाल खुराना पंजाबी रत्न अवार्ड से प्रो. जगदीश मुखी सम्मानित

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। फेडरेशन ऑफ पंजाबी एसोसिएशन द्वारा 12 अगस्त

2026 को आयोजित भव्य संकल्प समारोह में पंजाबी समाज की एकता, संगठन और सामाजिक शक्ति का अद्भुत प्रदर्शन देखने को मिला। कार्यक्रम में देशभर से पंजाबी समाज के गणमान्य व्यक्तियों, जनप्रतिनिधियों, सामाजिक संस्थाओं एवं विभिन्न पंजाबी संगठनों के पदाधिकारियों ने बड़ी संख्या में सहभागिता की। कार्यक्रम में समाज के गणमान्य व्यक्तियों की रही सहभागिता- कार्यक्रम के मुख्य अतिथि उत्तर प्रदेश विधानसभा अध्यक्ष सतीश महाना रहे। समारोह में पूर्व राज्यपाल एवं वरिष्ठ भाजपा नेता प्रो. जगदीश मुखी, हरियाणा विधानसभा के उपाध्यक्ष डॉ. कृष्ण मिड्ढा, सांसद डॉ. महेश शर्मा, सहारनपुर विधायक राजीव गम्बर, आदर्श नगर विधायक राजकुमार भाटिया, विधायक चंद्र शर्मा, राज्य मंत्री कैप्टन विकास गुप्ता, पूर्व महिला आयोग अध्यक्ष श्रीमती विमला बाथम, फोनरवा अध्यक्ष योगेंद्र शर्मा, डीडीआरडब्लूए अध्यक्ष एन.पी. सिंह, रवि मिश्रा, अशोक चौहान, नोएडा मीडिया क्लब अध्यक्ष आलोक द्विवेदी, संजय बाली, त्रिलोक शर्मा, नवीन गुप्ता, टी.एन. गोविल सहित अनेक गणमान्य अतिथियों ने अपनी गरिमामयी उपस्थिति दर्ज कराई। मदन लाल खुराना पंजाबी रत्न अवार्ड की शुरुआत-समारोह का एक विशेष एवं गौरवपूर्ण आकर्षण 'श्री मदन लाल खुराना पंजाबी रत्न अवार्ड' रहा। यह सम्मान पंजाबी समाज के गौरव, सामाजिक योगदान, राष्ट्रसेवा एवं समाज के प्रति समर्पण को सम्मानित करने के उद्देश्य से शुरू किया गया है। इस वर्ष 'मदन लाल खुराना पंजाबी रत्न अवार्ड' से प्रो. जगदीश मुखी को सम्मानित किया गया। सार्वजनिक जीवन में रहते हुए समाज एवं राष्ट्र के प्रति उनके उल्लेखनीय योगदान के लिए उन्हें यह सम्मान प्रदान किया गया।इस सम्मान की शुरुआत की सराहना करते हुए फेडरेशन के चीफ पैट्रन सुरेंद्र मेहता, जसविंदर खोक्हर, सतपाल आनंद एवं सतपाल सचदेवा, अश्विनी छाबड़ा, कमल अरोरा, सहित अनेक वरिष्ठ पदाधिकारियों एवं समाज के गणमान्य व्यक्तियों ने कहा कि यह पुरस्कार पंजाबी समाज की महान विभूतियों के योगदान को सम्मानित करने की एक सराहनीय पहल है। उन्होंने फेडरेशन से आग्रह किया कि इस सम्मान को प्रत्येक वर्ष निरंतर जारी रखा जाए। सभी ने संकल्प समारोह की भव्य सफलता के लिए आयोजकों एवं पूरी टीम को बधाई दी तथा उपस्थित सभी अतिथियों का आभार व्यक्त किया। फेडरेशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष वीरेंद्र मेहता ने कहा कि 'मदन लाल खुराना जी पंजाबी समाज के गौरव और प्रेरणा के प्रतीक रहे हैं। उनके नाम पर शुरू किया गया यह सम्मान आने वाली पीढ़ियों को समाज, संस्कृति और राष्ट्र के लिए समर्पित होकर कार्य करने की प्रेरणा देगा। फेडरेशन का प्रयास रहेगा कि इस सम्मान की गरिमा को बनाए रखते हुए हर वर्ष समाज और राष्ट्र के लिए उल्लेखनीय योगदान देने वाली विभूतियों को सम्मानित किया जाए।'वीरेंद्र मेहता ने कहा कि यह संकल्प समारोह केवल एक कार्यक्रम नहीं, बल्कि पंजाबी समाज की एकता, विरासत और सामाजिक शक्ति को मजबूत करने की दिशा में एक ऐतिहासिक कदम है। फेडरेशन के राष्ट्रीय महासचिव सुनील मेहता एवं राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष सुभाष जैन ने कार्यक्रम की सफलता के लिए फेडरेशन की पूरी टीम, सभी पदाधिकारियों, मातृशक्ति, सामाजिक संस्थाओं, सहयोगियों एवं देशभर से पहुंचे पंजाबी समाज के प्रतिनिधियों का दिल की गहराइयों से आभार एवं धन्यवाद व्यक्त किया। राष्ट्रीय मीडिया प्रभारी संजय अदलखा ने फेडरेशन के प्रयासों की सराहना करते हुए पंजाबी समाज को एक मजबूत राष्ट्रीय मंच पर संगठित करने की आवश्यकता पर बल दिया। समारोह में मंच संचालन की जिम्मेदारी योगेंद्र चोपड़ा एवं गगन कोर ने बेहद प्रभावशाली एवं गरिमापूर्ण ढंग से निभाई।

मदरसा अनवारुल उलूमसे छात्रों ने निकाली गई तिरंगा यात्रा

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज। आजादी के पर्व को

लेकर मिर्ज़ा ग़ालिब रोड स्थित मदरसा अनवारुल उलूम से छात्रों ने तिरंगा यात्रा निकाली। यात्रा में मदरसे के छात्र हाथों में तिरंगा लेकर देशभक्ति के नारों के साथ शामिल हुए। इस दौरान मदरसे का स्टाफ भी छात्रों के साथ मौजूद रहा। तिरंगा यात्रा मदरसे से शुरू होकर आसपास के मार्गों से होते हुए आगे बढ़ी। यात्रा के दौरान छात्रों में खासा उत्साह देखने को मिला। हाथों में तिरंगा लिए छात्र देशभक्ति की भावना से ओतप्रोत नजर आए। मदरसा स्टाफ ने भी छात्रों का उत्साह बढ़ाया और यात्रा में उनके साथ कदम से कदम मिलाकर शामिल हुए। विभिन्न मार्गों से भ्रमण करने के बाद तिरंगा यात्रा वापस मदरसे पहुंची, जहां इसका समापन किया गया। इस मौके पर मदरसा स्टाफ ने छात्रों को राष्ट्रीय ध्वज के सम्मान और देश की एकता एवं अखंडता के महत्व के बारे में जानकारी दी।यात्रा के दौरान क्षेत्र में देशभक्ति का माहौल बना रहा। प्रधानाचार्य मौलाना जव्वादुल हैदर रिज़वी, मौलाना रज़ी हैदर,मौलाना ज़रग़ाम हैदर, मौलाना मोहम्मद अब्बास, मौलाना शहरयार रिज़वी, मौलाना शज़ान जव्वादी, मौलाना मुन्तज़िर हुसैन,जावेद रिज़वी,कमाल हैदर मोहम्मद रिज़वी आदि मौजूद रहे।

कमला नेहरू पीजी कॉलेज में रोजगार मेला संपन्न, नामी कंपनियों ने किया चयन

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। कमला नेहरू

स्नातकोत्तर महाविद्यालय, तेजगांव, रायबरेली में दिनांक 13 अगस्त 2026, गुरुवार को रोजगार मेले का सफल आयोजन किया गया। कार्यक्रम के संरक्षक श्री सुरेंद्र बहादुर सिंह (पूर्व विधायक) रहे। रोजगार मेले में फ्लिपकार्ट, सैमसंग एवं नोकिया सहित देश की कई प्रतिष्ठित कंपनियों ने प्रतिभाग किया तथा योग्य अभ्यर्थियों का साक्षात्कार लेकर रोजगार हेतु चयन किया। मेले में महाविद्यालय के बी.ए. एवं बी.एससी. अंतिम वर्ष तथा उत्तीर्ण छात्र-छात्राओं, एम.ए. अंतिम वर्ष एवं उत्तीर्ण विद्यार्थियों के साथ-साथ अन्य महाविद्यालयों के लगभग 300 छात्र-छात्राओं ने भी बढ़-चढ़कर प्रतिभाग किया।रोजगार मेले को लेकर युवाओं में विशेष उत्साह देखने को मिला।

इस अवसर पर महाविद्यालय के समस्त शिक्षकगण एवं शिक्षणेतर कर्मचारी उपस्थित रहे और आयोजन को सफल बनाने में सक्रिय सहयोग प्रदान किया। प्राचार्या डॉ सारिका गौतम ने कहा, 'इस प्रकार के रोजगारपरक आयोजनों से विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्र के युवाओं को प्रतिष्ठित कंपनियों से जुड़ने तथा रोजगार के बेहतर अवसर प्राप्त करने का मंच मिलता है। महाविद्यालय छात्र-छात्राओं के उज्ज्वल भविष्य एवं करियर निर्माण के लिए भविष्य में भी इस प्रकार के कार्यक्रमों का आयोजन करता रहेगा।' रोजगार मेले का सफल आयोजन महाविद्यालय के लिए एक महत्वपूर्ण उपलब्धि रहा।

क्या रायबरेली अतिक्रमण मुक्त होगा–एक दिवास्वप्न? वी.आई.पी. शहर की सड़कों पर 'जनता के लिए जगह नहीं', न्यायालय से अस्पताल तक अतिक्रमण का साम्राज्य

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। भारतीय राजनीति के मानचित्र पर अपनी विशिष्ट पहचान रखने वाला रायबरेली जिला भले ही राजनीतिक रूप से वी.आई.पी. माना जाता हो, लेकिन शहर की सड़कों पर आम आदमी की हालत देखकर लगता है कि यहां वी.आई.पी. का अर्थ शायद 'वाहन, अतिक्रमण और परेशानी' हो गया है। बस स्टेशन हो, अस्पताल चौराहा हो, सुपर मार्केट हो, कैपरगंज हो या डिग्री कॉलेज चौराहा–शहर के प्रमुख मार्गों पर यातायात की स्थिति ऐसी है कि सड़क पर चलने वाले नागरिक को कई बार यह तलाशना पड़ता है कि आखिर सड़क बची भी है या नहीं। सबसे गंभीर स्थिति दीवानी न्यायालय के गेट नंबर-1 के आसपास दिखाई देती है। न्यायालय के बाहर से बस स्टैंड की ओर बढ़ती वाहनों की लंबी कतार, न्यायालय की बाउंड्री से सटी दुकानें, दुकानों के सामने खड़े वाहन और उसके बाद तेज रफ्तार से निकलते वाहनों का दबाव–यह पूरा दृश्य किसी सामान्य यातायात अव्यवस्था से अधिक संभावित दुर्घटना का निमंत्रण प्रतीत होता है। न्यायालय और अस्पताल के आसपास भी 'अतिक्रमण की स्वतंत्रता'! न्यायालय और चिकित्सालय जैसे क्षेत्र सामान्य बाजार नहीं होते। ये ऐसे संवेदनशील क्षेत्र हैं जहां आपातकालीन आवागमन, पैदल यात्रियों की सुरक्षा और निर्बाध यातायात को सर्वोच्च प्राथमिकता मिलनी चाहिए। लेकिन रायबरेली में स्थिति देखकर कभी-कभी ऐसा लगता है कि कानून की किताबों में सड़क जनता के लिए है और जमीन पर सड़क किसी और की सुविधा के लिए! विडंबना तो यह है कि न्यायालय परिसर के निकट ही यदि अतिक्रमण, अव्यवस्थित पार्किंग और यातायात अवरोध लगातार दिखाई दें तो सवाल केवल अतिक्रमणकारियों से नहीं, बल्कि प्रवर्तन तंत्र की प्रभावशीलता से भी पूछा जाना स्वाभाविक है। और जब बात जिलाधिकारी आवास के गेट नंबर-1 तक पहुंच जाए तो व्यंग्य अपने आप जन्म लेता है– जब प्रशासन के सबसे बड़े अधिकारी के दरवाजे के आसपास भी सड़क पूरी तरह 'मुक्त' नहीं है, तब आम नागरिक से सुरक्षित और सुगम यातायात की उम्मीद शायद लोकतांत्रिक आशावाद की पराकाष्ठा है! दो दिन की सख्ती, फिर 'ढाक के तीन पात' रायबरेली में अतिक्रमण हटाओ अभियान कोई नई कहानी नहीं है। समय-समय पर प्रशासन और पुलिस की सक्रियता दिखाई देती है। कुछ घंटों या दो-चार दिनों के लिए सड़कें खुलती हैं, वाहन सुचारु होते हैं और नागरिकों को लगता है कि शायद अब व्यवस्था सुधर गई। फिर धीरे-धीरे वही दुकानें, वही ठेले, वही वाहन, वही सड़क किनारे कब्जे और वही जाम वापस लौट आते हैं। मानो अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई नहीं, अतिक्रमण और प्रशासन के बीच 'आओ-जाओ, फिर मिलेंगे' का समझौता चल रहा हो! प्रश्न यह नहीं है कि अतिक्रमण हटाने के लिए जेसीबी कब आएगी। असली प्रश्न यह है कि हटाए जाने के बाद अतिक्रमण दोबारा कैसे लौट आता है? यदि सार्वजनिक मार्ग एक बार खाली कराया गया और कुछ दिनों बाद फिर उसी स्थान पर कब्जा हो गया, तो यह केवल अतिक्रमणकारी की समस्या नहीं रह जाती। यह निगरानी, प्रवर्तन और उत्तरदायित्व की समस्या भी बन जाती है। कानून भी है, आदेश भी हैं–फिर सड़क क्यों नहीं? सड़क, फुटपाथ और सार्वजनिक मार्ग किसी व्यक्ति की निजी जागीर नहीं हैं। उच्चतम न्यायालय ने विभिन्न मामलों में सार्वजनिक मार्गों, फुटपाथों और स्ट्रीट वेंडिंग के संबंध में यह संतुलन स्पष्ट किया है कि आजीविका का अधिकार महत्वपूर्ण है, लेकिन सार्वजनिक मार्गों पर निर्बाध आवागमन और सार्वजनिक हित की भी रक्षा आवश्यक है। R.K. Mittal & Others v. State of U.P. & Others में सर्वोच्च न्यायालय ने नियोजन कानूनों और स्वीकृत उपयोग के अनुरूप प्रशासनिक कार्रवाई की आवश्यकता पर जोर दिया तथा यह स्पष्ट किया कि प्राधिकरण कानून और स्वीकृत योजना के विपरीत गतिविधियों को प्रोत्साहित नहीं कर सकते। इसी तरह Gainda Ram v. MCD तथा Maharashtra Ekta Hawkers Union v. Municipal Corporation, Greater Mumbai जैसे मामलों में सर्वोच्च न्यायालय ने स्ट्रीट वेंडरों के अधिकारों और सार्वजनिक मार्गों के उपयोग के बीच संतुलन की आवश्यकता को रेखांकित किया। अर्थात समाधान यह नहीं कि गरीब वेंडर को बिना कानूनी प्रक्रिया के उठाकर फेंक दिया जाए और न ही यह कि वेंडिंग के नाम पर सार्वजनिक मार्ग को स्थायी बाजार बना दिया जाए। कानून का रास्ता बीच में है–नियमितीकरण जहां संभव हो, पुनर्स्थापन जहां आवश्यक हो और वास्तविक अतिक्रमण पर प्रभावी कार्रवाई। नो-वेंडिंग जोन है तो फिर 'नो-एक्शन जोन' क्यों? Street Vendors (Protection of Livelihood and Regulation of Street Vending) Act, 2014 की धारा 12 के अनुसार जिस क्षेत्र को विधि के अनुसार न्द-न्नह्ग्हुँदहा के रूप में निर्धारित किया गया है, वहां स्ट्रीट वेंडिंग नहीं की जा सकती। साथ ही धारा 18 ceW relocation DeLekee eviction की व्यवस्था है। लेकिन यहां एक महत्वपूर्ण कानूनी अंतर समझना भी जरूरी है। हर फुटपाथ पर खड़ी दुकान को केवल 'अतिक्रमणकारी' कह देना पर्याप्त नहीं है। यदि संबंधित व्यक्ति Street Vendors Act के दायरे में आता है तो सर्वेक्षण, वेंडिंग प्रमाण-पत्र, Town Vending Committee और निर्धारित प्रक्रिया जैसे वैधानिक पहलुओं को ध्यान में रखना होगा। वहीं यदि कोई स्थान विधिवत No-Vending Zone है अथवा कोई व्यक्ति बिना वैध अनुमति सार्वजनिक मार्ग पर कब्जा कर रहा है, तो संबंधित स्थानीय प्राधिकरण कानून के अनुसार कार्रवाई कर सकता है। ऐसी कार्रवाई में परिस्थितियों के अनुसार नोटिस, सुनवाई/वैधानिक प्रक्रिया, हटाने या पुनर्स्थापन की कार्रवाई, सामान की जब्ती जहां कानून अनुमति देता हो, जुर्माना तथा पुनः अतिक्रमण रोकने के लिए प्रवर्तन जैसे कदम शामिल हो सकते हैं। यानी कानून प्रशासन के हाथ बांधता नहीं है; वह प्रशासन से यह अपेक्षा करता है कि कार्रवाई मनमानी नहीं बल्कि विधिसम्मत हो। सवाल वेंडर से भी, वाहन मालिक से भी और व्यवस्था से भी अतिक्रमण केवल ठेले और दुकानों से नहीं होता। सड़क पर अवैध या अव्यवस्थित पार्किंग, दुकान के बाहर सामान फैलाना, सड़क की पटरी घेर लेना और यातायात नियमों की अनदेखी–ये सभी मिलकर सड़क की वास्तविक चौड़ाई कम करते हैं। इसलिए यदि प्रशासन वास्तव में शहर को अतिक्रमण मुक्त करना चाहता है तो कार्रवाई चयनात्मक नहीं, समग्र होनी चाहिए। जहां दुकान सड़क पर फैल रही है, वहां कार्रवाई हो। जहां वाहन सड़क घेर रहे हैं, वहां कार्रवाई हो। जहां फुटपाथ पैदल यात्रियों के बजाय व्यापार का स्थल बन गया है, वहां कार्रवाई हो। और जहां जिम्मेदार विभाग की लापरवाही से बार-बार वही कब्जा लौट रहा है, वहां प्रशासनिक जवाबदेही भी तय हो।

वरना 'अतिक्रमण मुक्त रायबरेली' केवल भाषण में ही मुक्त रहेगा-शहर की जनता को अभियान नहीं, स्थायी व्यवस्था चाहिए। उसे ऐसी सड़क चाहिए जहां एंबुलेंस जाम में न फंसे, न्यायालय जाने वाला व्यक्ति सड़क पर खड़े वाहनों से न जूझे, पैदल यात्री फुटपाथ पर चल सके और जिलाधिकारी आवास के बाहर भी सड़क को देखकर यह विश्वास हो कि प्रशासन को अपनी ही व्यवस्था पर भरोसा है। अतिक्रमण हटाने के लिए एक दिन जेसीबी चलाना आसान है; अतिक्रमण दोबारा न होने देना असली प्रशासनिक परीक्षा है। इसलिए अब रायबरेली की जनता शायद यह पूछने को मजबूर है–क्या शहर वास्तव में अतिक्रमण मुक्त होगा?

या फिर हर कुछ महीनों में कुछ घंटों के लिए सड़कें खाली कराकर, फोटो खिंचवाकर और प्रेस विज्ञप्ति जारी कर यह मान लिया जाएगा कि अभियान सफल हो गया? क्योंकि यदि कार्रवाई के बाद फिर वही कब्जा, वही जाम और वही अव्यवस्था लौट आती है तो इसे अतिक्रमण हटाओ अभियान कहना भी शायद प्रशासन के प्रति अन्याय होगा।

इसे 'अतिक्रमण हटाओ–अतिक्रमण वापस लाओ' योजना कहना अधिक सटीक होगा। रायबरेली राजनीतिक रूप से कितना भी वी.आई.पी. क्यों न हो, सड़क पर चलने वाला नागरिक आखिर नागरिक ही है। उसे किसी वी.आई.पी. पास की नहीं, सिर्फ अपनी सड़क पर चलने की जगह चाहिए। और यदि न्यायालय, अस्पताल तथा प्रशासनिक प्रतिष्ठानों के आसपास भी निर्बाध मार्ग सुनिश्चित नहीं हो पाता, तो सवाल अतिक्रमणकारियों से आगे बढ़कर उस पूरी व्यवस्था से पूछा जाना चाहिए जिसके पास कानून भी है, अधिकार भी हैं और कार्रवाई की जिम्मेदारी भी। अब देखना यह है कि रायबरेली को अतिक्रमण मुक्त सड़कें मिलती हैं या फिर 'अतिक्रमण मुक्त शहर' का सपना भी शहर के बाकी सपनों की तरह अगले अभियान की तारीख का इंतजार करता रहेगा।

जिलाधिकारी की अध्यक्षता में बाढ़ एवं सूखा प्रबंधन की समीक्षा बैठक सम्पन्न

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। बुधवार को जिलाधिकारी सरनीत कौर ब्रोका की अध्यक्षता में बाढ़ एवं

सूखा प्रबंधन से संबंधित समीक्षा बैठक सम्पन्न हुई। बैठक में जिलाधिकारी ने निर्देशित किया कि आपदा प्रबंधन एवं राहत कार्यों में किसी भी स्तर पर लापरवाही अथवा उदासीनता किसी भी दशा में क्षम्य नहीं होगी। सभी विभाग अपने-अपने दायित्वों का समयबद्ध, प्रभावी एवं आपसी समन्वय के साथ निर्वहन सुनिश्चित करें। निर्देशों के अनुपालन में किसी भी प्रकार की शिथिलता अथवा लापरवाही पाए जाने पर संबंधित अधिकारी/कर्मचारी का उत्तरदायित्व निर्धारित करते हुए आपदा प्रबंधन अधिनियम एवं प्रचलित नियमों के अंतर्गत कठोर कार्रवाई की जाएगी। जिलाधिकारी ने मुख्य चिकित्सा अधिकारी को विशेष रूप से निर्देशित किया कि बाढ़ एवं वर्षा के दृष्टिगत एंटी स्नेक वेनम तथा एंटी रेबीज वैक्सीन/इम्युनोग्लोबुलिन की पर्याप्त उपलब्धता सुनिश्चित की जाए। सभी स्वास्थ्य केंद्रों पर आवश्यक दवाओं एवं जीवनरक्षक औषधियों का पर्याप्त स्टॉक उपलब्ध रहे तथा आकस्मिक परिस्थितियों में तत्काल चिकित्सा सुविधा सुनिश्चित की जाए। आपदा प्रबंधन से संबंधित स्वास्थ्य सेवाओं में किसी भी प्रकार की लापरवाही अथवा संसाधनों की कमी पाए जाने पर संबंधित अधिकारी/कर्मचारी का उत्तरदायित्व निर्धारित करते हुए आपदा प्रबंधन अधिनियम एवं प्रचलित नियमों के अंतर्गत कठोर कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने राजस्व विभाग के अधिकारियों को बाढ़ एवं अतिवृष्टि से प्रभावित क्षेत्रों में तत्काल स्थलीय निरीक्षण कर जनहानि, पशुहानि, मकान एवं फसल क्षति का समयबद्ध आकलन करते हुए पात्र प्रभावितों को नियमानुसार राहत उपलब्ध कराने के निर्देश दिए गए। उन्होंने सिंचाई विभाग के अधिकारियों को तटबंधों, नदियों, नालों एवं संवेदनशील स्थलों की सतत निगरानी करते हुए कटान एवं जलस्तर की स्थिति पर तत्काल आवश्यक कार्रवाई सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए। जिलाधिकारी ने नगर निकाय एवं पंचायती राज विभाग के अधिकारियों को जलभराव वाले क्षेत्रों में जल निकासी की प्रभावी व्यवस्था, नालियों की सफाई तथा आवश्यकतानुसार पंप एवं अन्य संसाधनों की उपलब्धता सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए। उन्होंने पशु पशुपालन विभाग के अधिकारियों को बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में पशुओं के लिए पर्याप्त चारा, पेयजल एवं आवश्यक पशु चिकित्सा सेवाओं की व्यवस्था तथा टीकाकरण सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए। उन्होंने विद्युत विभाग के अधिकारियों को बाढ़ एवं जलभराव वाले क्षेत्रों में विद्युत सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए क्षतिग्रस्त विद्युत लाइनों एवं ट्रांसफार्मरों की तत्काल मरम्मत सुनिश्चित की जाए। साथ ही ट्रांसफार्मर, केबल, विद्युत पोल एवं अन्य आवश्यक विद्युत सामग्री का पर्याप्त स्टॉक सुरक्षित रखा जाए, ताकि आपदा की स्थिति में विद्युत व्यवस्था को तत्काल बहाल किया जा सके। विद्युत आपूर्ति की बहाली में अनावश्यक विलंब अथवा तैयारियों में किसी भी प्रकार की शिथिलता पाए जाने पर संबंधित अधिकारी का उत्तरदायित्व निर्धारित किया जाएगा। खाद्य एवं रसद विभाग के अधिकारी को बाढ़ एवं सूखा प्रभावित क्षेत्रों में खाद्यान्न की पर्याप्त उपलब्धता एवं निर्बाध वितरण सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए। उन्होंने कृषि विभाग के अधिकारियों को अतिवृष्टि एवं सूखे की स्थिति को देखते हुए फसलों की नियमित निगरानी तथा प्रभावित किसानों को आवश्यक तकनीकी मार्गदर्शन एवं विभागीय योजनाओं का लाभ उपलब्ध कराने के निर्देश दिए गए। उन्होंने पी डब्लू डी विभाग के अधिकारियों को क्षतिग्रस्त सड़कों, पुल-पुलियों एवं संपर्क मार्गों की सतत निगरानी कर आवागमन बाधित होने की स्थिति में तत्काल आवश्यक कार्रवाई सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए। अग्निशमन एवं रेस्क्यू टीम के अधिकारियों को रेस्क्यू उपकरण, नाव, लाइफ जैकेट एवं अन्य आवश्यक संसाधनों की उपलब्धता एवं कार्यशीलता सुनिश्चित रखने तथा आवश्यकता पड़ने पर तत्काल रेस्क्यू कार्य प्रारंभ करने के निर्देश दिए गए। जिलाधिकारी ने समस्त विभागीय अधिकारियों को पुनः कड़े निर्देश देते हुए कहा कि आपदा की स्थिति में किसी भी प्रकार की लापरवाही, शिथिलता, सूचना देने में विलंब अथवा निर्देशों की अवहेलना को गंभीरता से लिया जाएगा। संबंधित अधिकारी/कर्मचारी की जिम्मेदारी निर्धारित करते हुए आपदा प्रबंधन अधिनियम एवं प्रचलित नियमों के अंतर्गत कठोर कार्रवाई की जाएगी। सभी अधिकारी अपने-अपने विभाग की तैयारियों की नियमित समीक्षा करते हुए आवश्यक संसाधनों की उपलब्धता सुनिश्चित करें। बैठक में अपर जिलाधिकारी (वित्त एवं राजस्व) सहदेव मिश्र, समस्त उपजिलाधिकारी, तहसीलदार, जिला आपदा विशेषज्ञ अंकित पाण्डेय सहित संबंधित विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे।

डीएम की अध्यक्षता में सीएम डैश बोर्ड (राजस्व संकेतक) की समीक्षा बैठक सम्पन्न

राजस्व वसूली में तेजी लाने, लंबित प्रकरणों के समयबद्ध निस्तारण एवं जनशिकायतों के प्रभावी समाधान के दिए निर्देश

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। जिलाधिकारी

सरनीत कौर ब्रोका की अध्यक्षता में विकास भवन सभागार में सीएम डैश बोर्ड (राजस्व संकेतक) की समीक्षा बैठक सम्पन्न हुई। बैठक में जिलाधिकारी ने राजस्व विभाग से संबंधित विभिन्न संकेतकों की बिंदुवार समीक्षा करते हुए अधिकारियों को शासन की प्राथमिकताओं के अनुरूप कार्यों में तेजी लाने तथा निर्धारित लक्ष्यों को समयबद्ध ढंग से पूर्ण करने के निर्देश दिए। बैठक में जिलाधिकारी ने राजस्व वसूली, लंबित राजस्व वादों, तहसीलवार राजस्व प्रकरणों, भूमि संबंधी मामलों, नामांतरण, वरासत, पैमाइश एवं अन्य राजस्व कार्यों की प्रगति की समीक्षा की। उन्होंने कहा कि सीएम डैश बोर्ड पर प्रदर्शित संकेतकों में जनपद की प्रगति बेहतर हो, इसके लिए संबंधित अधिकारी नियमित रूप से अपने विभागीय कार्यों की समीक्षा करें तथा जिन बिंदुओं पर प्रगति अपेक्षाकृत कम है, उनमें विशेष प्राथमिकता के साथ सुधार सुनिश्चित करें। उन्होंने अधिकारियों को निर्देशित किया कि राजस्व न्यायालयों में लंबित प्रकरणों का गुणवत्तापूर्ण एवं समयबद्ध निस्तारण सुनिश्चित किया जाए। पुराने एवं लंबित मामलों को प्राथमिकता के आधार पर चिन्हित कर उनका नियमानुसार शीघ्र निस्तारण कराया जाए। साथ ही नामांतरण, वरासत, पैमाइश आदि से संबंधित प्रकरणों में अनावश्यक विलंब न हो और आमजन को राजस्व सेवाओं का लाभ निर्धारित समयसीमा में उपलब्ध कराया जाए। जिलाधिकारी ने राजस्व वसूली की प्रगति की समीक्षा करते हुए संबंधित अधिकारियों को लक्ष्य के अनुरूप वसूली में तेजी लाने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि शासन द्वारा निर्धारित राजस्व लक्ष्यों की नियमित समीक्षा की जाए तथा बकायेदारों से नियमानुसार प्रभावी कार्रवाई करते हुए वसूली सुनिश्चित की जाए। उन्होंने यह भी निर्देश दिए कि जनसुनवाई एवं जनशिकायतों के निस्तारण में पूरी गंभीरता बरती जाए। प्राप्त शिकायतों का निस्तारण केवल औपचारिकता तक सीमित न रहे, बल्कि शिकायतकर्ता की समस्या का गुणवत्तापूर्ण समाधान सुनिश्चित किया जाए। शिकायतों के निस्तारण की नियमित समीक्षा करते हुए किसी भी स्तर पर लापरवाही पाए जाने पर संबंधित की जवाबदेही निर्धारित की जाए। बैठक में अपर जिलाधिकारी (वित्त एवं राजस्व) सहदेव मिश्र, अपर जिलाधिकारी (प्रशासन) सिद्धार्थ,समस्त उप जिलाधिकारी, तहसीलदार एवं संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे।

डीएम ने जिला कारागार में निर्माणाधीन कार्यो का किया स्थलीय निरीक्षण,जिला कारागार में 120 क्षमता की बैरक एवं 160 मीटर इन्क्लोजर वाल का कराया जा रहा है निर्माण

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। जिलाधिकारी सरनीत कौर ब्रोका ने जिला कारागार रायबरेली में आधारभूत सुविधाओं के सुदृढ़ीकरण एवं विस्तार के लिए कराये जा रहे विभिन्न निर्माणाधीन कार्यो का स्थलीय निरीक्षण किया। निरीक्षण के समय कार्यदायी संस्था उ0प्र0 राज्य निर्माण सहकारी संघ लि0 (यूपीआरएनएसएस), निर्माण प्रखण्ड लखनऊ-2 के अधिशाषी अभियन्ता ए0के0 सिंह ने अवगत कराया कि जिला कारागार रायबरेली में 120 क्षमता की बैरक एवं लगभग 300 मीटर इन्क्लोजर वाल का निर्माण कराया जा रहा है। परियोजना की स्वीकृत लागत 712.57 लाख रुपये है, जिसके सापेक्ष 356.29 लाख रुपये कार्यदायी संस्था को प्राप्त हो चुके हैं तथा 87.86 लाख रुपये व्यय किए जा चुके हैं। प्रस्तावित 300 मीटर इन्क्लोजर वाल में से 230 मीटर पर लगभग 6 फीट ऊंची चिनाई एवं कॉलम ढलाई का कार्य पूर्ण हो चुका है। वहीं, 120 क्षमता की चार बैरकों (दो भूतल एवं दो प्रथम तल) के निर्माण में नींव का कार्य प्रगति पर है। इसके अतिरिक्त, जिला कारागार रायबरेली की नवनिर्मित पाकशाला के चारों ओर लगभग 160 मीटर दीवार/इन्क्लोजर वाल (गेट सहित) का निर्माण भी कराया जा रहा है। इस कार्य की स्वीकृत लागत 119.89 लाख रुपये है, जिसकी पूरी धनराशि कार्यदायी संस्था को प्राप्त हो चुकी है। इसमें से 86.25 लाख रुपये व्यय किए जा चुके हैं। प्रस्तावित 160 मीटर इन्क्लोजर वाल में से 135 मीटर में नींव एवं सुपर स्ट्रक्चर का कार्य प्रगति पर है, जबकि शेष 25 मीटर में नींव का कार्य चल रहा है।

यूपी में महिलाओं को मिलेंगे 50-50 हजार रुपए,चुनाव से पहले 20 हजार, फिर 10-10 हजार, योगी सरकार की तैयारी

लखनऊ। यूपी सरकार विधानसभा चुनाव से पहले महिला वोटबैंक को साधने के लिए बड़ी योजना लागू कर सकती है। इसके तहत 50 लाख से ज्यादा महिलाओं को 50-50 हजार रुपए की आर्थिक सहायता दी जाएगी। चुनाव से पहले 20 हजार रुपए की पहली किस्त दी जाएगी। चुनाव के बाद भाजपा की सरकार बनने पर 10-10 हजार रुपए की 3 किस्तें दी जाएंगी। सरकार में योजना को लेकर मंथन शुरू हो गया है। चुनाव अगले साल जनवरी-फरवरी में हो सकते हैं। दरअसल, पिछले साल बिहार विधानसभा चुनाव में बड़ी जीत दर्ज करने के बाद भाजपा की नजर अब यूपी पर है। बिहार में चुनाव से ठीक पहले महिलाओं के खातों में 10-10 हजार रुपए भेजे गए थे। उसी तर्ज पर यूपी में भी योजना शुरू की जाएगी। चुनाव से पहले महिलाओं को साधेगी सरकार-योगी सरकार जेन-जी आंदोलन के बीच वोटबैंक को साधने के लिए महिला सहायता, स्वरोजगार और आर्थिक स्वावलंबन के लिए योजना लाने की तैयारी में है। महिला कल्याण विभाग के जरिए योजना प्रस्तावित की जाएगी। योजना के तहत महिलाओं को 50 हजार रुपए की आर्थिक सहायता देने पर विचार हो रहा है। गरीबी रेखा से नीचे के परिवार की महिलाओं को प्राथमिकता-सरकार योजना में एससी, एसटी परिवारों की महिलाओं के साथ बीपीएल परिवारों की महिलाओं

और आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों की महिलाओं को प्राथमिकता देगी। इसमें ऐसे परिवारों की महिलाओं को शामिल किया जा सकता है, जिनकी आय 12 लाख रुपए से ज्यादा नहीं है। गेमचेंजर होगी महिलाओं की योजना-सरकार के लोगों का मानना है कि महिलाओं को नकद प्रोत्साहन की योजना विधानसभा चुनाव में गेमचेंजर साबित हो सकती है। इस तरह की योजना सबसे पहले मध्यप्रदेश, फिर महाराष्ट्र और बिहार विधानसभा चुनाव में लागू की गई थी। उन योजनाओं के कारण वहां भाजपा की सरकार बनी थी। राजनीतिक विश्लेषक वीरेंद्रनाथ भट्?ट का मानना है कि मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र और बिहार में महिलाओं को नकद सहायता देने का चुनाव में फायदा मिला है। अगर यूपी में भी इस तरह की योजना सरकार लागू करती है, तो निश्चित तौर पर उसका भाजपा को चुनाव में फायदा होगा। प्रदेश में करीब 5.67 करोड़ महिला वोटर हैं। बिहार की तरह यूपी में भी महिलाएं ही गेमचेंजर-बिहार विधानसभा चुनाव में भाजपा की बड़ी जीत हुई थी। एनडीए ने वहां 202 सीटें जीती थीं। एनडीए की उम्मीद से ज्यादा जीत में महिलाओं के अभूतपूर्व समर्थन और वोटों को आधार माना गया। महिलाओं के एनडीए के लिए इस झुकाव का कारण चुनाव से पहले जीविका दीदी के खाते में 10-10 हजार रुपए भेजना माना गया। प्रदेश सरकार के मंत्री, भाजपा के पदाधिकारी और राजनीतिक विश्लेषक भी यह मानते हैं। इसीलिए मध्यप्रदेश की लाडली बहना योजना, महाराष्ट्र की सीएम माझी बहन लड़की, हरियाणा की दीनदयाल लाडो लक्ष्मी के बाद यूपी में भी महिलाओं और बेटियों के वोट को साधने के लिए भाजपा गेमचेंजर योजना लागू करने वाली है।

हरियाणा, महाराष्ट्र, दिल्ली और बिहार में भाजपा-एनडीए की जीत हुई थी। इसके बाद यूपी के सीएम योगी, भाजपा के लिए यूपी विधानसभा चुनाव- 2027 किसी चुनौती से कम नहीं है। बिहार में प्रचंड जीत के बाद दबाव यूपी में बढ़ गया है। जानिए बिहार का जीविका दीदी मॉडल क्या है? बिहार में सीएम नीतीश कुमार के नेतृत्व वाली एनडीए सरकार ने विधानसभा चुनाव से ठीक पहले मुख्यमंत्री महिला रोजगार योजना लागू की थी। इसका उद्देश्य हर परिवार की एक महिला को स्वरोजगार से जोड़ना था। इसके लिए हर परिवार की एक महिला को चुनाव से पहले 10 हजार रुपए की आर्थिक सहायता दी गई।

42वीं वाहिनी पीएसी, नैनी में 'हर घर तिरंगा' अभियान का शंखनाद एवं पवित्र संगम क्षेत्र में भव्य तिरंगा रैली

देशभक्ति के उल्लास के बीच जवानों को वितरित किए गए राष्ट्रीय ध्वज, पीएसी बैंड की मधुर धुन पर हुआ अनुशासित मार्च,सेनानायक श्री राजेश कुमार श्रीवास्तव (आईपीएस) ने राष्ट्रीय ध्वज के गौरव, इतिहास एवं झंडा संहिता के नियमों की दी जानकारी,वाहिनी के समस्त आवासीय एवं अनावासीय परिसरों में ससम्मान फहराया गया राष्ट्रध्वज,संगम क्षेत्र में मोटरबोट पर राष्ट्रीय ध्वज फहराकर श्रद्धालुओं एवं आमजन को 'हर घर तिरंगा' के लिए किया गया जागरूक

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज। देशभर में चल रहे

हर घर तिरंगा अभियान-2026' के सफल क्रियान्वयन के क्रम में आज 42वीं वाहिनी पीएसी नैनी, प्रयागराज द्वारा वाहिनी परिसर, आसपास के प्रमुख मार्गों तथा पवित्र त्रिवेणी संगम क्षेत्र में देशभक्ति एवं राष्ट्रीय गौरव की भावना से ओतप्रोत विभिन्न जन-जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। संपूर्ण कार्यक्रम सेनानायक श्री राजेश कुमार श्रीवास्तव (आईपीएस) के गरिमामयी नेतृत्व एवं कुशल मार्गदर्शन में संपन्न हुआ। वाहिनी परिसर में भव्य तिरंगा रैली-रैली

के शुभारंभ से पूर्व वाहिनी के अधिकारियों एवं जवानों को पूर्ण गरिमा एवं सम्मान के साथ राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा वितरित किया गया। इसके पश्चात सेनानायक महोदय ने स्वयं हाथ में राष्ट्रीय ध्वज धारण कर पीएसी बैंड की मधुर एवं देशभक्ति से ओतप्रोत धुनों के बीच अनुशासित कदमताल करते हुए तिरंगा रैली का नेतृत्व किया। पीएसी जवानों के अनुशासित मार्च, गगनभेदी राष्ट्रभक्ति के नारों एवं हाथों में लहराते तिरंगे से पूरा क्षेत्र देशभक्ति के रंग में रंग गया। रैली के दौरान उपस्थित नागरिकों को 'हर घर तिरंगा' अभियान से जुड़ने तथा स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर अपने घरों, दुकानों एवं प्रतिष्ठानों पर सम्मानपूर्वक राष्ट्रीय ध्वज फहराने के लिए प्रेरित किया गया। राष्ट्रीय ध्वज के गौरव एवं झंडा संहिता की दी जानकारी-तिरंगा रैली के समापन अवसर पर सेनानायक श्री राजेश कुमार श्रीवास्तव द्वारा उपस्थित समस्त बल को संबोधित किया गया। उन्होंने राष्ट्रीय ध्वज के गौरवशाली इतिहास, उसके महत्व तथा राष्ट्र की एकता, अखंडता एवं गौरव में उसकी भूमिका पर प्रकाश डाला। साथ ही जवानों को झंडा संहिता के महत्वपूर्ण प्रावधानों एवं राष्ट्रीय ध्वज फहराने के नियमों की जानकारी देते हुए ध्वज की गरिमा एवं सम्मान सदैव बनाए रखने का आह्वान किया। अभियान के अंतर्गत वाहिनी के समस्त आवासीय एवं अनावासीय परिसरों में राष्ट्रीय ध्वज को ससम्मान फहराया गया। पवित्र संगम क्षेत्र में

मोटरबोट पर निकली तिरंगा रैली-'हर घर तिरंगा अभियान-2026' के जन-जागरूकता कार्यक्रम को व्यापक स्वरूप प्रदान करते हुए 42वीं वाहिनी पीएसी के जवानों द्वारा पवित्र त्रिवेणी संगम क्षेत्र में मोटरबोट पर राष्ट्रीय ध्वज फहराते हुए भव्य तिरंगा रैली निकाली गई। संगम की पावन धाराओं में लहराता विशाल तिरंगा और मोटरबोट पर अनुशासित रूप से आगे बढ़ते पीएसी जवान श्रद्धालुओं एवं आमजन के आकर्षण का प्रमुख केंद्र रहे। इस अनूठे आयोजन से संगम क्षेत्र में राष्ट्रभक्ति का वातावरण और अधिक सशक्त हुआ। इस अवसर पर पीएसी बल द्वारा संगम तट पर उपस्थित श्रद्धालुओं, स्थानीय नागरिकों, बच्चों, वयोवृद्धों एवं मीडिया प्रतिनिधियों से संवाद कर उन्हें 'हर घर तिरंगा' अभियान के उद्देश्य से अवगत कराया गया तथा आगामी स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर अपने-अपने घरों एवं प्रतिष्ठानों पर पूरे सम्मान और गौरव के साथ तिरंगा फहराने के लिए प्रेरित किया गया। रैली के दौरान पीएसी जवानों द्वारा लगाए गए राष्ट्रभक्ति के नारों से संपूर्ण संगम क्षेत्र गुंजायमान हो उठा। स्थानीय जनता एवं तीर्थयात्रियों द्वारा 42वीं वाहिनी पीएसी की इस पहल की सराहना की गई। इस गौरवशाली राष्ट्रीय अभियान को सफल बनाने में ङसहायक सेनानायक प्रथम श्री देव नारायण यादव, सहायक सेनानायक द्वितीय श्री सियाराम, वाहिनी चिकित्सक डॉ. ओम प्रकाश, शिविरपाल श्री अरविंद कुमार सिंह, सहायक शिविरपाल श्री हरदास एवं सूबेदार मेजर श्री सुधांशु कुमारङ सहित वाहिनी के समस्त अधिकारी एवं कर्मचारीगण का महत्वपूर्ण योगदान रहा। 'हर घर तिरंगा' केवल एक अभियान नहीं, बल्कि राष्ट्र के प्रति सम्मान, गौरव और एकता की सामूहिक अभिव्यक्ति है। 42वीं वाहिनी पीएसी द्वारा इस अभियान के माध्यम से नागरिकों में राष्ट्रप्रेम एवं राष्ट्रीय ध्वज के प्रति सम्मान की भावना को और अधिक प्रबल बनाने का संदेश दिया गया।

हर घर तिरंगा अभियान के अंतर्गत तिरंगा मेला, तिरंगा म्यूजिकल कॉन्सर्ट एवं तिरंगा प्रदर्शनी का भव्य आयोजन,डीएम ने स्वदेशी उत्पादों को बढ़ावा देकर स्वयं सहायता समूहों की महिलाओं को सशक्त बनाने का दिया संदेश

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। स्वतंत्रता दिवस के

उपलक्ष्य में हर घर तिरंगा अभियान के अंतर्गत सामुदायिक केन्द्र, रतापुर में ''तिरंगा मेला, तिरंगा म्यूजिकल कॉन्सर्ट एवं तिरंगा प्रदर्शनी'' का भव्य आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ जिलाधिकारी सरनीत कौर ब्रोका द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया, कार्यक्रम में देशभक्ति की भावना से ओत-प्रोत विभिन्न सांस्कृतिक प्रस्तुतियों ने उपस्थित लोगों में उत्साह एवं राष्ट्रप्रेम का संचार किया।कार्यक्रम के दौरान जिलाधिकारी ने राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (एनआरएलएम) के अंतर्गत स्वयं सहायता समूहों की महिलाओं द्वारा लगाए गए विभिन्न स्टालों का अवलोकन किया। उन्होंने समूह की महिलाओं द्वारा तैयार किए जा रहे विभिन्न स्वदेशी एवं हस्तनिर्मित उत्पादों की जानकारी ली तथा उनके उत्पादों की सराहना की। जिलाधिकारी ने स्वयं सहायता समूहों द्वारा तैयार किए गए उत्पादों की खरीद भी की और महिलाओं का उत्साहवर्धन किया।जिलाधिकारी ने कहा कि स्वयं सहायता समूहों की महिलाएं विभिन्न प्रकार के स्थानीय एवं स्वदेशी उत्पाद तैयार कर आत्मनिर्भरता की दिशा में महत्वपूर्ण कार्य कर रही हैं। उन्होंने जनपदवासियों से अपील की कि स्वयं सहायता समूहों की महिलाओं द्वारा तैयार किए गए स्वदेशी उत्पादों को अधिक से अधिक खरीदें तथा उनके उत्पादों को प्रोत्साहित कर महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने में सहयोग करें। उन्होंने कहा कि स्थानीय उत्पादों को बढ़ावा देने से ग्रामीण महिलाओं की आय में वृद्धि होगी और उन्हें स्वरोजगार के बेहतर अवसर प्राप्त होंगे। कार्यक्रम में विभिन्न विद्यालयों के छात्र-छात्राओं द्वारा देशभक्ति से ओत-प्रोत सांस्कृतिक कार्यक्रम, गीत एवं अन्य मनमोहक प्रस्तुतियां दी गईं। बच्चों की प्रस्तुतियों ने उपस्थित लोगों को भावविभोर कर दिया तथा कार्यक्रम स्थल देशभक्ति के रंग में रंग गया। तिरंगा प्रदर्शनी के माध्यम से राष्ट्रध्वज के महत्व, स्वतंत्रता संग्राम की गौरवगाथा एवं देश के प्रति नागरिकों के कर्तव्यों की जानकारी भी प्रदान की गई। मुख्य विकास अधिकारी अंजुलता ने कहा कि कार्यक्रम का उद्देश्य हर घर तिरंगा अभियान को जनभागीदारी के माध्यम से जनआंदोलन का स्वरूप देना, नागरिकों में राष्ट्रप्रेम एवं राष्ट्रीय ध्वज के प्रति सम्मान की भावना को और मजबूत करना। मंच का संचालन एस0एस0 पाण्डेय द्वारा किया गया।

इस अवसर पर उपायुक्त श्रम रोजगार प्रमोद सिंह, परियोजना निदेशक डीआरडीए मुनेश चन्द्र, जिला विकास अधिकारी वर्षा सिंह, उपायुक्त उद्योग परमहंस मौर्या, जिला पंचायत राज अधिकारी विनय सिंह, जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी राहुल सिंह, जिला प्रोबेशन अधिकारी शक्ति त्रिपाठी, जिला पिछड़ा वर्ग कल्याण अधिकारी पीयूष चन्द्र राय सहित संबंधित अधिकारी, कर्मचारी, स्वयं सहायता समूहों की महिलाएं, विद्यालयों के छात्र-छात्राएं एवं बड़ी संख्या में लोग उपस्थित रहे।

जिलाधिकारी ने सीवर लाइन योजना के कार्य का किया निरीक्षण,सुपर मार्केट समेत विभिन्न स्थानों पर चल रहे कार्यों की जमीनी हकीकत परखी, अधिकारियों को दिए आवश्यक निर्देश

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। जिलाधिकारी सरनीत कौर ब्रोका ने नगर पालिका क्षेत्र में सुपर मार्केट समेत विभिन्न स्थानों

पर कराए जा रहे सीवर लाइन योजना के कार्यों का स्थलीय निरीक्षण किया। जिलाधिकारी ने मौके पर पहुंचकर सीवरेज लाइन बिछाने के कार्य की प्रगति और कार्य की गुणवत्ता का जायजा लिया।निरीक्षण के दौरान जिलाधिकारी ने अलग-अलग स्थानों पर चल रहे कार्यों को बारीकी से देखा और संबंधित अधिकारियों एवं कार्यदायी संस्था के कर्मचारियों से कार्य की स्थिति के संबंध में जानकारी ली। उन्होंने यह भी देखा कि निर्धारित मानकों के अनुरूप सीवर लाइन का कार्य किया जा रहा है अथवा नहीं।जिलाधिकारी ने मौके पर मौजूद अधिकारियों को निर्देशित किया कि सीवर लाइन योजना का कार्य निर्धारित मानकों और गुणवत्ता के साथ समयबद्ध तरीके से पूरा कराया जाए। उन्होंने कहा कि निर्माण कार्य में किसी भी प्रकार की लापरवाही नहीं होनी चाहिए और कार्य की नियमित निगरानी सुनिश्चित की जाए।

मेरठ में लाइट जाते ही व्यापारी से 75 हजार लूटा,असलहा दिखाकर बदमाशों ने बैग छीना

मेरठ। गंगानगर इलाके में गुरुवार देर रात बिजली कटौती के दौरान एक किराना व्यापारी से तमंचे के बल पर 75 हजार रुपए लूट लिए गए। दुकान बंद कर घर लौट रहे व्यापारी को बाइक सवार तीन बदमाशों ने रास्ते में रोक लिया, बैग छीन लिया और गोली मारने की धमकी देकर फरार हो गए। वारदात के बाद इलाके में हड़कंप मच गया। व्यापारी के शोर मचाने पर आसपास के लोगों ने बदमाशों का पीछा भी किया, लेकिन अंधेरे का फायदा उठाकर तीनों फरार हो गए। हैरानी की बात यह है कि व्यापारी के लूट का आरोप लगाने के बावजूद पुलिस फिलहाल इसे लूट मानने को तैयार नहीं है और जांच के बाद ही स्थिति साफ होने की बात कह रही है। दुकान बंद कर घर लौट रहे थे व्यापारी-शिवलोक कॉलोनी निवासी विपिन कुमार रस्तौगी की तिलकपुरम कॉलोनी में गणपति किराना स्टोर है। गुरुवार रात करीब साढ़े 11 बजे वह दुकान बंद कर घर लौट रहे थे। तभी पीछे से बाइक पर आए तीन युवकों ने उन्हें रास्ते में रोक लिया।

माई लाइफस्टाइल कंपनी के 13 वर्ष कंप्लीट करने पर मैहर में किया गया वृहद वृक्षा रोपण

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) मैहर। मी लाइफस्टाइल ने अपनी

स्थापना के 13 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में गुरुवार को मैहर एवं सतना टीम के संयुक्त तत्वावधान में माँ शारदा देवी धाम प्रांगण में भव्य कार्यक्रम आयोजित किया। इस अवसर पर पर्यावरण संरक्षण का संदेश देते हुए बृहद वृक्षारोपण किया गया तथा केक काटकर कंपनी की 13वीं वर्षगांठ उत्साहपूर्वक मनाई गई।

कार्यक्रम में उपस्थित वक्ताओं ने कहा कि सामाजिक उत्तरदायित्व के तहत पर्यावरण संरक्षण आज समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है। वृक्षारोपण जैसे अभियान समाज को हरित एवं स्वच्छ वातावरण प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सभी सदस्यों ने अधिक से अधिक पौधे लगाने एवं उनके संरक्षण का संकल्प लिया। इस अवसर पर आईटीसी लीडर अनूप सिंह, प्रतिभा सिंह एवं विकास गुप्ता, एसटीसी लीडर बरमेंद्र सिंह, कुलदीप सिंह, पूजा सिंह, विकास सिंह, दिनेश यादव, प्रीतू कुशवाहा, डॉ. राजपाल सिंह, गजेंद्र सिंह, मंजू भैया, सुनीता गौतम, सपना सोनी, लक्ष्मी पटेल, कलावती यादव, मुकेश श्रीवास्तव, पुष्पा विश्वकर्मा, अन्नपूर्णा चौरसिया सहित वन मंडल अधिकारी एवं बड़ी संख्या में मैहर व सतना टीम के सदस्य उपस्थित रहे। कार्यक्रम का समापन कंपनी की निरंतर प्रगति, समाज सेवा एवं पर्यावरण संरक्षण के प्रति प्रतिबद्धता के संकल्प के साथ किया गया।

हर घर तिरंगा अभियान के तहत तिरंगा मेला, म्यूजिकल कॉन्सर्ट एवं तिरंगा प्रदर्शनी का भव्य आयोजन

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। स्वतंत्रता दिवस के

उपलक्ष्य में जनपद में देशभक्ति एवं राष्ट्रीय गौरव की भावना को जन-जन तक पहुंचाने के उद्देश्य से संचालित 'हर घर तिरंगा' अभियान के अंतर्गत सामुदायिक केन्द्र, रतापुर में 'तिरंगा मेला, तिरंगा म्यूजिकल कॉन्सर्ट एवं तिरंगा प्रदर्शनी' का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के समापन सत्र में मा0 सदर विधायक

मा0 सदर विधायक अदिति सिंह ने बच्चों की सांस्कृतिक प्रस्तुतियों का अवलोकन किया तथा प्रस्तुति देने वाले प्रतिभागी बच्चों को प्रशस्ति पत्र एवं मेडल प्रदान कर सम्मानित किया। उन्होंने बच्चों का उत्साहवर्धन करते हुए कहा कि ऐसे आयोजन बच्चों में

किया गया। वहीं, तिरंगा मेले एवं म्यूजिकल कॉन्सर्ट ने कार्यक्रम को आकर्षक एवं उत्साहपूर्ण बनाया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में लोगों ने सहभागिता कर 'हर घर तिरंगा' अभियान के प्रति अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त की। कार्यक्रम का उद्देश्य स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर आमजन में राष्ट्रीय ध्वज के प्रति सम्मान एवं गौरव की भावना को बढ़ावा देना तथा 'हर घर तिरंगा' अभियान को जनभागीदारी के माध्यम से जनआंदोलन का स्वरूप प्रदान करना रहा। मंच का संचालन एस0एस0 पाण्डेय द्वारा किया गया- कार्यक्रम

सांस्कृतिक प्रस्तुतियों ने बांधा समां, प्रतिभागी बच्चों को प्रशस्ति पत्र एवं मेडल देकर किया गया सम्मानित

अदिति सिंह ने मुख्य अतिथि के रूप में प्रतिभाग किया। कार्यक्रम के दौरान लोक गायक राहुल मिश्रा व विभिन्न विद्यालयों के बच्चों द्वारा सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के माध्यम से देशभक्ति, राष्ट्रीय एकता एवं राष्ट्रप्रेम का संदेश दिया गया। प्रस्तुत मनमोहक सांस्कृतिक कार्यक्रमों ने उपस्थित लोगों का उत्साह बढ़ाया और कार्यक्रम में देशभक्ति का वातावरण सृजित किया। देशभक्ति, अनुशासन और राष्ट्रीय ध्वज के प्रति सम्मान की भावना को और मजबूत करते हैं। इसके साथ ही मीना मंच की शिक्षिकाओं को भी सांस्कृतिक कार्यक्रम में उत्कृष्ट प्रस्तुति करने हेतु सम्मानित किया गया। तिरंगा प्रदर्शनी के माध्यम से स्वतंत्रता संग्राम, राष्ट्रीय ध्वज के महत्व तथा देश की गौरवशाली विरासत से संबंधित विभिन्न पहलुओं को प्रदर्शित में मुख्य विकास अधिकारी अंजुलता, उपायुक्त श्रम रोजगार प्रमोद सिंह, जिला विकास अधिकारी वर्षा सिंह, जिला विद्यालय निरीक्षक संजीव कुमार सिंह, जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी राहुल सिंह, जिला समाज कल्याण अधिकारी आर0वी0 सिंह, जिला पूर्ति अधिकारी उबैदुर रहमान सहित संबंधित अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

भाजपा नोएडा महानगर ने निकाली भव्य तिरंगा यात्रा

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। भाजपा नोएडा महानगर द्वारा प्रतीक वेस्टीरिया, सेक्टर-77 से स्पेक्ट्रम मॉल सेक्टर 75 तक जिला अध्यक्ष महेश चौहान के नेतृत्व में भव्य तिरंगा यात्रा का आयोजन किया गया। यात्रा में बड़ी संख्या में भाजपा कार्यकर्ताओं एवं आमजन ने हाथों में तिरंगा लेकर देशभक्ति और राष्ट्रगौरव का संदेश दिया। तिरंगा यात्रा के कार्यक्रम संयोजक अमित त्यागी, रामनिवास यादव, विपुल शर्मा रहे त यात्रा में अद्भुत झांकियां

निकाली गई एवं कार्यकर्ताओं द्वारा बनाया गया लकड़ी का राफेल देखने योग्य था। कार्यक्रम में उत्तर प्रदेश सरकार में मंत्री एवं गौतमबुद्ध नगर के प्रभारी मंत्री कुंवर ब्रजेश सिंह, पूर्व केंद्रीय मंत्री एवं गौतमबुद्ध नगर सांसद डॉ. महेश शर्मा तथा नोएडा विधायक पंकज सिंह प्रमुख रूप से उपस्थित रहे। तिरंगा यात्रा कार्यक्रम को संबोधित करते हुए प्रभारी मंत्री कुंवर ब्रजेश सिंह ने कहा कि तिरंगा हमारी आन, बान और शान का प्रतीक है। यह यात्रा देश के प्रति हमारे समर्पण और राष्ट्रभक्ति की भावना को और मजबूत करती है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में आज भारत आत्मविश्वास के साथ विश्व पटल पर आगे बढ़ रहा है।हम सभी को राष्ट्रहित को सर्वोपरि रखते हुए विकसित और आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में योगदान देना चाहिए। तिरंगा यात्रा को सम्बोधित करते हुए सांसद डॉ. महेश शर्मा ने कहा कि तिरंगा केवल एक ध्वज नहीं, बल्कि भारत की एकता, अखंडता और गौरव का प्रतीक है। आज की तिरंगा यात्रा में उमड़ा जनसैलाब देश के प्रति लोगों के प्रेम और समर्पण को दर्शाता है। उन्होंने कहा कि हमारे वीर स्वतंत्रता सेनानियों और जवानों के बलिदान से हमें राष्ट्रसेवा की प्रेरणा मिलती है। आइए, हम सभी मिलकर विकसित भारत के संकल्प को साकार करने के लिए आगे बढ़ें। नोएडा विधायक पंकज सिंह ने सभी को संबोधित करते हुए कहा कि तिरंगा यात्रा देश की एकता और राष्ट्रभक्ति की भावना को जन-जन तक पहुंचाने का माध्यम है। नोएडा की जनता ने जिस उत्साह के साथ इस यात्रा में सहभागिता की, वह अत्यंत गौरव का विषय है। हमारे लिए राष्ट्र प्रथम है और इसी भावना के साथ हम निरंतर जनसेवा के कार्यों को आगे बढ़ा रहे हैं। आइए, तिरंगे की शान को सदैव ऊंचा रखने का संकल्प लें। तिरंगा यात्रा में शामिल हुए सभी वरिष्ठ जनों, पार्टी कार्यकर्ताओं, समाजसेवी संगठनों, प्रोफेशनल्स को संबोधित करते हुए जिला अध्यक्ष महेश चौहान ने कहा कि भाजपा नोएडा महानगर द्वारा आयोजित यह भव्य तिरंगा यात्रा राष्ट्र के प्रति हमारी प्रतिबद्धता का प्रतीक है। कार्यक्रम के बाद नोएडा जिला अध्यक्ष महेश चौहान ने यात्रा में शामिल हुए सभी नागरिकों का धन्यवाद किया। तिरंगा यात्रा के दौरान कार्यकर्ताओं एवं उपस्थित नागरिकों ने भारत माता की जय और वंदे मातरम् के जयघोष के साथ देशभक्ति का उत्साहपूर्ण वातावरण बनाया। यात्रा ने क्षेत्र में राष्ट्रप्रेम, एकता और अखंडता का संदेश दिया। तिरंगा यात्रा में हजारों की संख्या में नोएडा निवासी नोएडा की अनेक संस्थाएं एवं भाजपा के वरिष्ठ पदाधिकारी कार्यकर्तागण उपस्थित हुए।

डॉक्टर के 8वीं मंजिल से कूदकर किआ सुसाइड,लिखा- मौत की जिम्मेदार ठग गरिमा; गोरखपुर में बेटी बोली- पापा लौट आओ

गोरखपुर। मेरी मौत की जिम्मेदार गरिमा सिंह और उसका गिरोह हैष्ठगुरुवार सुबह यह लाइन एक कागज पर लिखकर डॉ. परमात्मा सिंह ने सुसाइड कर लिया। वह सुबह 9:10 बजे अपने फ्लैट से निकले। सुसाइड नोट को पैंट की दाएं जेब में डाला और तेजी से पहले नीचे पार्क में गए। करीब 9:13 बजे पार्क से बेसमेंट की तरफ गए, वहां से लिफ्ट से 8वीं मंजिल पर पहुंचे। फिर सीढ़ियों के सहारे छत पर गए। इस दौरान वह कहीं एक बार भी नहीं रुके। सीधे छत पर जाकर 8वीं मंजिल से नीचे कूद गए। वह सिर के बल गिरे, 2 बार पलटकर फिर सीधे हो गए और वहीं पर तड़पकर दम तोड़ दिया। बसंत एनक्लेव अपार्टमेंट के सीसीटीवी में ये घटना कैद हो गई। अपार्टमेंट के लोग उन्हें नजदीकी प्राइवेट हॉस्पिटल ले गए। यहां डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। इस तरह केवल 5 मिनट के अंदर उनके शरीर से प्राण निकल गए। बेटी स्कूल से आई तो रोकर बोली- पापा प्लीज लौट आओ। उधर, बहन बीच-बीच में चीखने-चिल्लाने लगती है। कहती है कि भाभी से वादा किया था, दो दिन पहले आ जाती तो भैया को समझाकर बचा लेती। घर से 500 मीटर दूर गोरखपुर हॉस्पिटल से डॉक्टर का शव अपार्टमेंट में लाया गया। यहां बेसमेंट में जमीन पर ही रख दिया गया। तभी सेकेंड फ्लोर से उनकी पत्नी डॉ. सुमित्रा सिंह रोते चीखते हुए आईं।

विश्वकर्मा श्रम सम्मान योजना के तहत अभ्यर्थियों का साक्षात्कार 17, 18 एवं 20 अगस्त को,दर्जी ट्रेड के लिए 17 व 18 अगस्त तथा हलवाई ट्रेड के लिए 20 अगस्त को होगा साक्षात्कार

अभ्यर्थियों को आवश्यक मूल अभिलेखों एवं छायाप्रतियों के साथ उपस्थित होने के निर्देश

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। वित्तीय वर्ष 2026-27 के अंतर्गत विश्वकर्मा श्रम सम्मान योजना के तहत प्रशिक्षण एवं टूलकिट प्रदान किए जाने के लिए ऑनलाइन आवेदन करने वाले अभ्यर्थियों के चयन हेतु साक्षात्कार आयोजित किया जाएगा। कार्यालय में 01 अप्रैल 2026 के बाद से पोर्टल पर प्राप्त तथा 07 अगस्त 2026 तक प्राप्त ऑनलाइन आवेदनों के अभ्यर्थियों को निर्धारित तिथियों पर साक्षात्कार में प्रतिभाग करना है। उपायुक्त उद्योग श्री विनोद कुमार चौधरी ने बताया कि दर्जी ट्रेड के अभ्यर्थियों का साक्षात्कार 17 एवं 18 अगस्त 2026 तथा हलवाई ट्रेड के अभ्यर्थियों का साक्षात्कार 20 अगस्त 2026 को आयोजित किया जाएगा। साक्षात्कार निर्धारित तिथियों पर प्रातः 11:00 बजे से जिला उद्योग प्रोत्साहन तथा उद्यमिता विकास केन्द्र, सोनभद्र में होगा।उन्होंने संबंधित अभ्यर्थियों से निर्धारित तिथि एवं समय पर उपस्थित होने की अपील की है। अभ्यर्थियों को साक्षात्कार के समय आधार कार्ड, शैक्षिक योग्यता प्रमाण-पत्र, जाति प्रमाण-पत्र, आय प्रमाण-पत्र एवं अनुभव प्रमाण-पत्र सहित संबंधित सभी आवश्यक अभिलेखों की दो प्रतियां–एक मूल एवं दूसरी छायाप्रति– साथ लाना अनिवार्य होगा। उपायुक्त उद्योग ने कहा कि अभ्यर्थी निर्धारित समय पर आवश्यक अभिलेखों के साथ उपस्थित होकर चयन प्रक्रिया में प्रतिभाग करना सुनिश्चित करें, ताकि योजना के अंतर्गत प्रशिक्षण एवं टूलकिट प्रदान किए जाने की प्रक्रिया समयबद्ध ढंग से पूरी की जा सके।

पीएम विश्वकर्मा लाभार्थियों के लिए ब्रांडिंग एवं मार्केटिंग पर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। सूक्ष्म, लघु और मध्यम

उद्यम मंत्रालय, भारत सरकार के एमएसएमई विकास कार्यालय, वाराणसी द्वारा पंचायत रिसोर्स सेंटर, विकास भवन, सोनभद्र में पीएम विश्वकर्मा लाभार्थियों के लिए ब्रांडिंग एवं मार्केटिंग पर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि सुश्री जागृति अवस्थी, आईएएस, मुख्य विकास अधिकारी, सोनभद्र रहीं। कार्यक्रम में एमएसएमई विकास कार्यालय के सहायक निदेशक श्री वी.के. राणा एवं श्री राजेश कुमार चौधरी सहित संबंधित अधिकारी एवं विशेषज्ञ उपस्थित रहे। तकनीकी सत्र में डॉ. मनीष अरोड़ा, बीएचयू द्वारा पैकेजिंग एवं ब्रांडिंग, श्री संजय रस्तोगी द्वारा उद्यमिता विकास तथा श्री मोहम्मद तफाशीर खान, शाखा प्रबंधक, इंडिया पोस्ट पेमेंट्स बैंक, सोनभद्र द्वारा डिजिटल मार्केटिंग एवं पीएम विश्वकर्मा योजना के लाभों के संबंध में जानकारी दी गई। कार्यक्रम में पीएम विश्वकर्मा लाभार्थियों को उत्पादों की गुणवत्ता, आकर्षक पैकेजिंग, ब्रांडिंग, डिजिटल मार्केटिंग तथा बाजार तक पहुंच बढ़ाने के संबंध में व्यावहारिक जानकारी दी गई। साथ ही प्रतिभागियों की समस्याओं एवं सुझावों पर खुली चर्चा की गई। कार्यक्रम का समापन धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

अवैध कच्ची शराब के ठिकानों पर आबकारी विभाग की दबिश, 25 लीटर शराब बरामद

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। जिलाधिकारी

सरनीत कौर ब्रोका के आदेशानुसार अवैध शराब के

निर्माण, बिक्री एवं तस्करी के विरुद्ध चलाए जा रहे प्रवर्तन अभियान के तहत आबकारी निरीक्षक क्षेत्र-2 रोबिन आर्य के नेतृत्व में आबकारी टीम ने महराजगंज तहसील के थाना शिवगढ़ अंतर्गत ग्राम बोधि खेड़ा, इंदुखेड़ा एवं हरिहरपुर में अवैध कच्ची शराब बनाने के अड्डों एवं संदिग्ध घरों पर दबिश दी। कार्रवाई के दौरान टीम ने 25 लीटर अवैध कच्ची शराब बरामद की तथा मौके पर 80 किलोग्राम लहन नष्ट किया।

इस कार्रवाई के संबंध में आबकारी अधिनियम के अंतर्गत कुल 02 अभियोग पंजीकृत किए गए।

सावन सिंधारा झूला उत्सव हर्षोल्लास के साथ मनाया गया

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)सोनभद्र। श्री राणी सती

दादीजी का वार्षिक सावन सिंधारा झूला उत्सव बुधवार, 12 अगस्त को श्रीमती सुनीता झुनझुनावाला द्वारा हर्षोल्लास एवं पारंपरिक रीति-रिवाजों के साथ मनाया गया। इस अवसर पर भजन-कीर्तन का आयोजन हुआ, जिससे पूरा मंदिर परिसर भक्तिमय हो गया। उत्सव के दौरान महिलाओं ने पारंपरिक रूप से लाल एवं हरी साड़ियां पहनकर, हाथों में मेहंदी लगाकर और सोलह श्रृंगार कर उत्सव में भाग लिया। दादीजी के दरबार और झूले को ताजे रंग-बिरंगे फूलों, गुब्बारों और लताओं से आकर्षक रूप से सजाया गया। सभी भक्त महिलाओं ने बारी-बारी से दादीजी को श्रद्धापूर्वक झूला झुलाया। इस शुभ अवसर पर महिलाएं आपस में बांटने के लिए सोलह श्रृंगार की सामग्री,

विभिन्न प्रकार की मिठाइयां, टॉफियां, चॉकलेट और फल भी लेकर आईं तथा प्रसाद एवं उपहार के रूप में एक-दूसरे को वितरित किए।इससे उत्सव का माहौल और भी आनंदमय हो गया। इस अवसर पर '13 सतियां झूल रहीं', 'सावण री तीजा आई', 'आयो तीजां रो त्योहार' और 'झूला-धमाल' जैसे लोकप्रिय भजन व गीत गाए गए।भजनों और भक्तिमय वातावरण से श्रद्धालु महिलाएं उत्साह और भक्ति में सराबोर नजर आईं। आयोजन को सफल बनाने में श्री राणी सती दादी भक्त महिला मंडल की अध्यक्ष एडवोकेट अनीता थरड, कोषाध्यक्ष मीरा जालान एवं सचिव पूनम खेतान की महत्वपूर्ण भूमिका रही। कार्यक्रम में रितु जालान, पूजा झुनझुनावाला, सुनीता सावरियाँ, अनिता कनोडिया, उषा जालान, चांदनी अग्रवाल, वीना झुनझुनावाला, सुनीता शराफ, अनिता गोयल एवं सुलोचना सावरियाँ सहित अनेक महिलाएं उपस्थित रहीं।

'हर घर हर घाट तिरंगा' अभियान के अंतर्गत सांस्कृतिक कार्यक्रम, शपथ एवं तिरंगा यात्रा आयोजित

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। 'हर घर हर घाट

तिरंगा' अभियान 2026 के अंतर्गत जिला गंगा समिति, सोनभद्र द्वारा जिलाधिकारी महोदय के निर्देशन में जनभागीदारी, राष्ट्रप्रेम एवं राष्ट्रीय ध्वज के सम्मान की भावना को बढ़ावा देने के उद्देश्य से विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गए। राजकीय पॉलिटेक्निक, रॉबर्ट्सगंज में जिला गंगा समिति के तत्वावधान में सांस्कृतिक कार्यक्रम, राष्ट्रगीत गायन एवं 'हर घर हर घाट तिरंगा' शपथ कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में विद्यार्थियों द्वारा समूह गायन, एकल गायन, एकल नृत्य एवं समूह नृत्य की आकर्षक प्रस्तुतियां दी गईं। समूह गायन में श्रेया व अन्य विद्यार्थियों तथा विभिन्न सांस्कृतिक प्रस्तुतियों में प्रियंका चौहान, सूरज, श्वेता पाठक, निशिता, श्वेता एवं अन्य विद्यार्थियों ने प्रतिभाग किया। कार्यक्रम के दौरान विद्यार्थियों को राष्ट्रीय ध्वज के सम्मान, देशभक्ति एवं राष्ट्र के प्रति कर्तव्यों के साथ-साथ जल संरक्षण, नदियों की स्वच्छता एवं पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक किया गया। विद्यार्थियों को 'हर घर हर घाट तिरंगा' अभियान को जनभागीदारी के साथ सफल बनाने तथा अपने आसपास स्वच्छता एवं जल

संरक्षण का संदेश पहुंचाने के लिए प्रेरित किया गया। कार्यक्रम में प्रधानाचार्य श्री प्रमोद, श्री श्याम नारायण कुशवाहा, सुश्री श्वेता, श्री प्रदीप पटेल, श्री अरुण कुशवाहा, श्री प्रियतेश जैन, श्री वैभव यादव सहित अन्य अध्यापकगण एवं शिक्षार्थी उपस्थित रहे। कार्यक्रम में समाजसेवी श्रीमती कविता यादव, श्री प्रमोद (पर्यावरण समिति), श्री अभिषेक यादव (गंगा वॉलेंटियर) भी उपस्थित रहे। जिला परियोजना अधिकारी महेंद्र गौतम द्वारा विद्यार्थियों को राष्ट्रध्वज के सम्मान के साथ जल, नदी एवं पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक किया गया। इसी क्रम में राजा शारदा महेश इंटर कॉलेज में दैनिक जागरण, सोनभद्र एवं माध्यमिक शिक्षा विभाग के संयुक्त तत्वावधान में तिरंगा यात्रा निकाली गई। प्रधानाचार्य डॉ. बृजेश के नेतृत्व में यात्रा विद्यालय से मुख्य बाजार, शीतला मंदिर चौराहा होते हुए रामलीला मैदान तक गई तथा पुनः विद्यालय पहुंचकर संपन्न हुई। तिरंगा यात्रा में मुख्य अतिथि अपर जिलाधिकारी श्री वागीश कुमार शुक्ला, अपर पुलिस अधीक्षक श्री सुनील सहित जिला गंगा समिति के जिला परियोजना अधिकारी महेंद्र गौतम, ब्लॉक प्रमुख रॉबर्ट्सगंज, सीओ सिटी, दैनिक जागरण ब्यूरो चीफ एवं उनकी टीम व अन्य गणमान्यजन ने सहभागिता की। जिला गंगा समिति, सोनभद्र द्वारा आयोजित इन कार्यक्रमों के माध्यम से युवाओं एवं आमजन को राष्ट्रप्रेम, राष्ट्रीय ध्वज के सम्मान, स्वच्छता, जल संरक्षण तथा नदियों एवं पर्यावरण की सुरक्षा का संदेश दिया गया।

तिरंगा महोत्सव में देशभक्ति के रंग में रंगा सोनभद्र स्वामी हरसेवानंद पब्लिक स्कूल चुर्क में आयोजित हुआ भव्य कार्यक्रम

सोनभद्र। हर घर तिरंगा अभियान के अंतर्गत बुधवार को स्वामी हरसेवानंद पब्लिक स्कूल, चुर्क में तिरंगा महोत्सव, तिरंगा मेला एवं भव्य प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। तिरंगे के रंगों में सजे विद्यालय परिसर में देशभक्ति से ओत-प्रोत सांस्कृतिक प्रस्तुतियों, आकर्षक रंगोली और कला प्रदर्शनी ने संपूर्ण वातावरण को राष्ट्रप्रेम से सराबोर कर दिया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि उत्तर प्रदेश सरकार के सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम विभाग के राज्य मंत्री व जिले के प्रभारी मंत्री हंसराज विश्वकर्मा, विशिष्ट अतिथि समाज कल्याण राज्य मंत्री संजीव कुमार गोंड, उत्तर प्रदेश राज्य पिछड़ा वर्ग आयोग के उपाध्यक्ष अजीत सिंह खरवार, सदर विधायक भूपेश चौबे, मुख्य विकास अधिकारी जागृति अवस्थी, भाजपा जिलाध्यक्ष नंदलाल गुप्ता तथा जिलाधिकारी चर्चित गौड़ मुख्य रूप से उपस्थित रहे। कार्यक्रम के शुभारंभ पर अतिथियों ने विभिन्न विद्यालयों के छात्र-छात्राओं द्वारा लगाई गई कला प्रदर्शनी और देशभक्ति पर आधारित आकर्षक रंगोली का अवलोकन किया। बच्चों ने अपनी रचनात्मकता के

माध्यम से स्वतंत्रता संग्राम, राष्ट्रीय ध्वज के इतिहास और विविधता में एकता के संदेश को बखूबी प्रदर्शित किया। अतिथियों ने विद्यार्थियों की प्रतिभा और प्रयास की भूरि-भूरि प्रशंसा की। महोत्सव में स्वामी हरसेवानंद पब्लिक स्कूल, डीएवी स्कूल, बेसिक विद्यालय रौंप तथा समाज कल्याण विभाग के राजकीय आश्रम पद्धति विद्यालय के छात्र-छात्राओं ने एक से बढ़कर एक देशभक्ति पूर्ण सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। इसमें आंगनबाड़ी के नन्हे-मुन्ने बच्चों की राष्ट्रभक्ति प्रस्तुति विशेष आकर्षण का केंद्र रही। अभियान के प्रथम एवं द्वितीय चरण के तहत विद्यालयों में आयोजित पेंटिंग, रंगोली, वाद-विवाद तथा निबंध प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले मेधावी विद्यार्थियों को अतिथियों द्वारा प्रशस्ति पत्र एवं मेडल प्रदान कर सम्मानित किया गया। प्रभारी मंत्री हंसराज विश्वकर्मा ने कहा राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा हमारे स्वाभिमान, एकता और अनगिनत स्वतंत्रता सेनानियों के त्याग व बलिदान का प्रतीक है। हर घर तिरंगा अभियान देश के प्रत्येक नागरिक को राष्ट्रप्रेम के धागे में पिरोने का सशक्त माध्यम है। युवा पीढ़ी देश का भविष्य है, उनमें राष्ट्र धर्म की भावना विकसित करना हम सभी का दायित्व है। समाज कल्याण राज्य मंत्री संजीव गोंड ने कहा कि तिरंगे के नीचे हम सभी एक हैं और यही हमारे भारत देश की सबसे बड़ी ताकत है। नई पीढ़ी के दिलों में राष्ट्रप्रेम की भावना से ही विकसित भारत के सपने को साकार किया जा सकता है। जिलाधिकारी चर्चित गौड़ ने कहा कि तिरंगा महोत्सव का मुख्य उद्देश्य युवाओं और बच्चों को राष्ट्रीय ध्वज के महत्व से जोड़ना है। समस्त जनपदवासी अपने-अपने घरों पर तिरंगा फहराएं और ध्वज संहिता का पालन करते हुए राष्ट्रीय ध्वज की गरिमा का सदैव ध्यान रखें। इस भव्य तिरंगा महोत्सव ने सोनभद्र जनपद में हर घर तिरंगा, हर दिल तिरंगा के संदेश को घर-घर पहुँचाकर राष्ट्रीय एकता और सामाजिक समरसता की भावना को और अधिक प्रगाढ़ किया।

सोनभद्र में जमीन के बंटवारे को लेकर छोटे भाई पर कुल्हाड़ी से हमला

सोनभद्र। अनपरा थाना क्षेत्र के कुलडोमरी टोला लोझरा में गुरुवार को बड़े भाई ने आपसी विवाद के दौरान छोटे भाई पर कुल्हाड़ी से हमला कर दिया। इस हमले में छोटा भाई गंभीर

रूप से घायल हो गया, जिसे प्राथमिक उपचार के बाद जिला अस्पताल रेफर किया गया है। अनपरा थाना क्षेत्र के कुलडोमरी गांव के लोझरा टोला निवासी मान सिंह पुत्र स्व. महादेव खरवार पैर से दिव्यांग हैं। उनके माता-पिता का निधन हो चुका है और उनकी पत्नी लगभग छह माह पहले उन्हें छोड़कर चली गई थीं। वह अकेले जीवनयापन कर रहे थे।मान सिंह ने बताया कि उसकी पुश्तैनी जमीन को लेकर कुछ दिनों से मझले भाई से विवाद चल रहा था। ग्रामीणों के अनुसार, यह विवाद भूमि बंटवारे को लेकर शुरू हुआ था। विवाद बढ़ने पर बड़े भाई ने कथित तौर पर मान सिंह पर कुल्हाड़ी से हमला कर दिया, जिससे वह गंभीर रूप से घायल होकर गिर पड़े।

परिजनों और स्थानीय लोगों की सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंची। पुलिस ने घायल मान सिंह को तत्काल संयुक्त अस्पताल डिबुलगंज पहुंचाया। वहां प्राथमिक उपचार के बाद चिकित्सकों ने चोट की गंभीरता को देखते हुए उन्हें बेहतर इलाज के लिए जिला अस्पताल रेफर कर दिया। घायल मान सिंह का जिला अस्पताल मे इलाज जारी है।

थाना प्रभारी इंचार्ज उपनिरीक्षक अशोक सिंह ने बताया कि पीड़ित की चचेरी बहन की तहरीर पर आरोपी भाई को हिरासत में ले लिया गया है।

पुलिस आपसी विवाद के कारणों और घटना से जुड़े अन्य पहलुओं की जांच के आधार पर आवश्यक विधिक कार्रवाई कर रही है।

सोनभद्र के बनबहुवार में 300 मीटर सड़क बनी ग्रामीणों की मुसीबत कीचड़ से बदहाल रास्ते पर धान रोपकर जताया अनोखा विरोध

सोनभद्र। जनपद सोनभद्र के बनबहुवार गांव में करीब 300 मीटर लंबी सड़क इन दिनों स्थानीय ग्रामीणों और राहगीरों के लिए भारी मुसीबत का कारण बनी हुई है। हालिया बारिश के बाद सड़क पर भीषण जलभराव और कीचड़ फैल जाने से स्थिति बेहद बदहाल हो गई है। आलम यह है कि बनबहुवार और निपनिया गांव के बीच का सीधा संपर्क पूरी तरह प्रभावित हो चुका है। सड़क की इस दुर्दशा से क्षुब्ध ग्रामीणों ने अनोखे अंदाज में विरोध जताते हुए पानी और कीचड़ से लबालब सड़क पर ही धान की रोपाई कर अपना आक्रोश व्यक्त किया। सड़क पर जलभराव और बड़े-बड़े गड्ढों के कारण यह मार्ग अब रास्ते से ज्यादा किसी पानी भरे खेत जैसा नजर आ रहा है, जिससे दोपहिया व पैदल चलने वालों का निकलना भी दुश्वार हो गया है। स्थानीय ग्रामीणों के अनुसार, सड़क की खस्ताहाली का सबसे बुरा असर स्कूल जाने वाले बच्चों और गंभीर मरीजों पर पड़ रहा है। बरसात के दिनों में बच्चों को कीचड़ भरे रास्ते से होकर जाना पड़ता है, जिससे अक्सर दुर्घटनाएं होती रहती हैं। वहीं गांव में किसी के बीमार पड़ने पर एंबुलेंस या अन्य वाहन कीचड़ के कारण गांव के भीतर तक नहीं पहुंच पाते, जिससे मरीजों को

अस्पताल ले जाना अत्यंत जोखिम भरा हो जाता है। विरोध प्रदर्शन का नेतृत्व कर रहे स्थानीय ग्रामीण बुधीराम यादव का कहना है कि सड़क के निर्माण और मरम्मत को लेकर कई बार प्रशासनिक अधिकारियों तथा क्षेत्रीय जनप्रतिनिधियों से गुहार लगाई जा चुकी है। ग्रामीणों का आरोप है कि क्षेत्रीय विधायक भूपेश चौबे और सांसद छोटेलाल खरवार को भी कई बार इस जनसमस्या से अवगत कराया गया, परंतु आश्वासन के सिवा अब तक कोई ठोस कदम नहीं उठाया गया। बुधीराम यादव (स्थानीय ग्रामीण) ने कहा कि सड़क की स्थिति इतनी खराब हो चुकी है कि वाहनों का चलना तो दूर, पैदल चलना भी दूभर है। हमने जनप्रतिनिधियों से लेकर अधिकारियों तक शिकायत की, लेकिन कोई सुनवाई नहीं हुई। मजबूरी में हमें सड़क पर धान रोपकर अपना विरोध दर्ज कराना पड़ा। प्रदर्शन में शामिल स्थानीय महिला कुमारी देवी ने अपना दर्द साझा करते हुए कहा कि हर चुनाव के दौरान जनप्रतिनिधियों द्वारा सड़क बनवाने के बड़े-बड़े वादे किए जाते हैं, लेकिन चुनाव बीतते ही जनता को उनके हाल पर छोड़ दिया जाता है। बरसात आते ही गांव का संपर्क बाहरी दुनिया से कटने की नौबत आ जाती है। कुमारी देवी (स्थानीय ग्रामीण) ने कहा कि वोट मांगने के समय सब आते हैं और सड़क बनाने का वादा करते हैं, लेकिन चुनाव खत्म होते ही सब भूल जाते हैं। हम बारिश में किस नरकीय स्थिति में जी रहे हैं, यह देखने वाला कोई नहीं है। कलेक्ट्रेट घेराव की चेतावनी गांव वालों ने जिला प्रशासन से मांग की है कि मामले का तत्काल संज्ञान लेते हुए सड़क का निर्माण या कम से कम डस्ट व गिट्टी डालकर तत्काल मरम्मत का कार्य शुरू कराया जाए ताकि आवागमन बहाल हो सके। ग्रामीणों ने स्पष्ट चेतावनी दी है कि यदि जल्द ही सड़क निर्माण हेतु ठोस पहल नहीं की गई, तो वे कलेक्ट्रेट परिसर पहुँचकर जिलाधिकारी कार्यालय का घेराव करेंगे और व्यापक आंदोलन के लिए बाध्य होंगे।

जिलाधिकारी के पहल से अटल आवासीय विद्यालय के छात्रों ने देखी 'बॉर्डर 2' फिल्म

सोनभद्र। गुरमूरा स्थित अटल आवासीय विद्यालय में

अध्यनरत कक्षा 10 के सैकड़ों छात्र-छात्राओं को गुरुवार को 'बॉर्डर 2' फिल्म दिखाई गई। यह फिल्म उन्हें रावर्टसगंज के राज सिनेमा हॉल में दिखाई गई। विद्यालय के प्रधानाचार्य विनोद कुमार मंडल ने बताया कि यह पहल जिलाधिकारी के निर्देश पर की गई थी। छात्र-छात्राओं को बृहस्पतिवार को सिनेमा हॉल ले जाया गया। फिल्म देखने के बाद छात्र-छात्राओं के चेहरे खुशी से खिल उठे।

जिला प्रशासन की इस पहल से बच्चे काफी उत्साहित नजर आए।

स्पोर्ट्स

चमत्कारी फल है सी-बकथॉर्न, जानिए इसके उपयोग और औषधीय लाभ के बारे में

हिमाचल। सी-बकथॉर्न एक चमत्कारी, अमृत तुल्य आयुर्वेदिक फल है। यह एक झाड़ी होती है जो नारंगी-पीले रंग के खाने योग्य बेरों का उत्पादन करती है। यह बहुत ऊंचाई पर उत्पन्न होने वाला एक पादप है। इसे हिमालयन बेरी भी कहते हैं। औषधि बनाने के लिए इसकी पत्तियों, फूलों और फलों का उपयोग किया जाता है। यह पौधा मुख्य रूप से हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड के ऊंचाई वाले पहाड़ी इलाकों में पाया जाता है। सो बकथॉर्न बेरी को वंडर बेरी, लेह बेरी और लाल गोल्ड के नाम से भी जाना जाता है। इस फल में ऐसे पोषक तत्व पाए जाते हैं जो बाकी फलों और सब्जियों में नहीं मिलते हैं। इसमें प्रो- विटामिन जैसे ए, बी-2 और सी के अलावा ओमेगा ऑयल भी होता है। यह फल 43 डिग्री तापमान से लेकर ±40 डिग्री के तापमान पर विकास कर लेता है। इसी अनोखे गुण से हम इसे ठंडे रेगिस्तान का फल कहते हैं। यह पर्यावरण में नाइट्रोजन गैस सन्तुलन को स्थिर रखता है और पहाड़ी क्षेत्र में भूमि क्षरण को रोकता है। सी -बकथॉन एक ऐसा आयुर्वेदिक फल है जिसमें हमारे शरीर की हर जरूरी पोषक तत्व की भरपूर मात्रा होती है; जैसे कि ओमेगा फैटी एसिड 3, 6, 7 और 9 आदि इसमें पर्याप्त मात्रा में एंटीऑक्सीडेंट्स पाया जाता है। इसके अलावा इसमें विटामिन - सी, ई, अमीनो अम्ल, लिपिड, बीटा कैरोटीन, लाइकोपिन के अलावा प्रो-विटामिन, खनिज और बॉयोलॉजिकल एक्टिव तत्व पाए जाते हैं। यह इम्यून सिस्टम को मजबूत बनाने के लिए एक उत्तम फल है। डीआरडीओ भी कर रहा है शोध-वर्ष 2010 में पर्यावरण मंत्रालय और डिफेंस रिसर्च एंड डेवलपमेंट ऑर्गनाइजेशन (डीआरडीओ) ने एक विशाल राष्ट्रीय पहल की शुरुआत की थी। हिमाचल प्रदेश के स्पीति गांव के लोग भारी बर्फबारी की वजह से पूरे छह माह तक बाहरी दुनिया से कटे रहते हैं। ऐसे में उन्हें एक ऐसे विकल्प की तलाश थी जो उन्हें मुश्किल समय के साथ नियमित तौर पर रोजगार मुहैया करवाता रहे। शोध संस्थानों द्वारा एक ऐसी पद्धति की खोज की गई है जिसके द्वारा एसिडिक एसिड की सबसे ज्यादा मात्रा वाले इस फल का जूस तैयार किया गया। इस फल का जूस सियाचिन या द्रास या फिर कारगिल जैसे इलाकों में जमता नहीं है। इस पेटेंट टेक्नोलॉजी को सहायता ग्रुप, कुछ एनजीओ और स्थानीय उद्यमियों को ट्रांसफर किया गया। इसके बाद कुछ और उत्पाद जैसे- हर्बल टी, एंटी-ऑक्सीडेंट सप्लीमेंट, सीप्रिकॉट जूस, जैम, जैली, सी-बकथॉर्न ऑयल सॉफ्ट जैल कैप्सूल, यूवी प्रोटेक्टिव ऑयल, बेकरी प्रॉडक्ट्स और जानवरों का चारा तैयार किया गया। सी-बकथॉर्न का उपयोग, सी-बकथॉर्न ड्राई बेरीज, सी-बकथॉर्न एक्स्ट्रेक्ट सॉफ्ट जैल, कैप्सूल, सी-बकथॉर्न इम्यूनिटी बूस्टर जूस, सी-बकथॉर्न ब्यूटी केयर प्रॉडक्ट्स, सी-बकथॉर्न का ऑयल लिक्विड एक्स्ट्रेक्ट, एनर्जी ड्रिंक, सीप्रिकॉट जूस, जैम, जैली, सी-बकथॉर्न के औषधीय लाभ-सी-बकथॉर्न की चाय में विटामिन डी, एंटीऑक्सीडेंट, प्रोटीन, अमीनो अम्ल, फैटी एसिड और मिनरल्स आदि पोषक तत्व होते हैं और यह ब्लड प्रेशर के मरीजों के लिए फायदेमंद होती है। यह चाय ब्लड कॉलेस्ट्रॉल कम करती है और इम्यूनिटी को बढ़ाने के लिए बहुत फायदेमंद है। इसका सेवन करने से यह शरीर की वृद्धि, विकास और शरीर को स्वस्थ रखता है। अन्य कोशिकीय संरचनाओं के लिए निर्माण ब्लॉक के रूप में काम करता है। ठंडे शरीर में इंसुलेशन देता है। सी-बकथॉन की पत्तियों और फूलों का उपयोग गठिया, गाउट, स्किन समस्या, गैस्ट्रोइंटेस्टाइनल अल्सर जैसी बीमारियों के उपचार में किया जाता है।यह एथलीट को बेहतर प्रदर्शन में भी मदद करता है। एथलीटों की सहनशक्ति बढ़ाने के साथ-साथ प्रतियोगिता के बाद उन्हें दोबारा स्वस्थ रखता है।शोधकर्ताओं के अनुसार, इसमें मौजूद फॉस्फेटिडाइलसेरिन (पीएस) शरीर के ऊतकों को टूटने से बचाता है। मानसिक तनाव को दूर करता है। कैंसर में फायदेमंद। डायबिटीज में लाभप्रद। मांसपेशियों को मजबूत बनाता है। थायरॉइड को कंट्रोल करता है। लीवर को हृष्टपुष्ट रखता है। इसमें पाया जाने वाला एंटीऑक्सीडेंट ब्रेन ट्यूमर के विकास को रोकता है। रेडियोप्रोटेक्टिव गुण होने के कारण शरीर को विकिरण से बचाता है। रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है। वजन नियंत्रण करने में सहायक। बाल, नाखून और स्किन को स्वस्थ रखता है। आंखों को स्वस्थ रखता है। अल्जाइमर से निजात दिलाने में मददगार है। सिरोसिस, एक्जिमा, झाइयां और मुहांसों में भी फायदेमंद है।

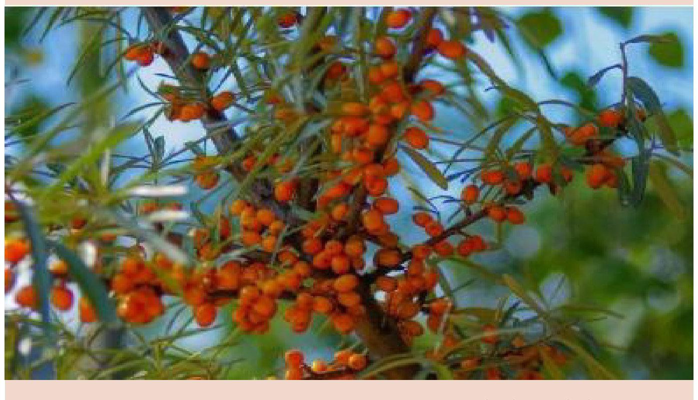

10 हार के बाद भी गंभीर के समर्थन में मिश्रा, बोला-कोच के साथ खिलाड़ियों को भी जिम्मेदारी लेनी होगी, रेड-बॉल क्रिकेट को देना होगा समय

स्पोर्ट डेस्क। भारतीय हेड कोच गौतम गंभीर के लिए अब तक का सफर आसान नहीं रहा है। टेस्ट में 10 हार के बाद भी पूर्व भारतीय लेग स्पिनर अमित मिश्रा ने उनका समर्थन किया है। मिश्रा ने कहा कि इस दौर के लिए सिर्फ कोच को जिम्मेदार ठहराना सही नहीं होगा। उनके मुताबिक, खिलाड़ियों को भी ज्यादा जिम्मेदारी लेने की जरूरत है और गंभीर को रेड-बॉल क्रिकेट में समय मिलना चाहिए। व्हाइट-बॉल क्रिकेट में टीम इंडिया ने शानदार नतीजे दिए हैं, लेकिन टेस्ट क्रिकेट में प्रदर्शन को लेकर सवाल उठे हैं। इसी वजह से टीम के कोचिंग सेटअप और खासतौर पर गंभीर की भूमिका पर चर्चा होती रही है। टेस्ट में गंभीर पर क्यों उठे सवाल- गंभीर के कार्यकाल में न्यूजीलैंड ने भारत को घरेलू मैदान पर 3-0 से हराया, जबकि साउथ अफ्रीका के खिलाफ भारत को घर में 2-0 की हार झेलनी पड़ी। भारत ने ऑस्ट्रेलिया में बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी 3-1 से गंवाई। इसके बाद इंग्लैंड के खिलाफ टेस्ट सीरीज 2-2 से बराबर रही।

पिता की मौत पर मेसी का भावनात्मक पोस्ट, लिखा- लगता नहीं अधिक समय फुटबॉल खेल पाऊंगा- रोनाल्डो का कमेंट- हिम्मत रखो लियो

स्पोर्ट डेस्क। फुटबॉलर लियोनेल मेसी ने पिता की मौत के बाद बुधवार को इंस्टाग्राम पर इमोशनल पोस्ट किया। उन्होंने लिखा- 'मैंने सिर्फ फुटबॉल खेला है। अब मुझे नहीं लगता कि आपके बिना इसे ज्यादा समय तक जारी रख पाऊंगा।' इस पोस्ट पर पुर्तगाल के फुटबॉलर क्रिस्टियानो रोनाल्डो ने कमेंट किया है। उन्होंने लिखा- 'इस मुश्किल वक्त में आपको और आपके परिवार को ह्यूज हग। लियो, हिम्मत रखो लियो।' पिता की मौत के बाद मेसी ने फुटबॉल से अनिश्चितकाल के लिए ब्रेक लिया है। 7 अगस्त को 68 साल की उम्र में मेसी के पिता जॉर्ज मेसी का निधन हो गया। वे लंबे समय से बीमार थे। अर्जेंटीना के शहर रोसारियो के एक मेडिकल क्लिनिक में उन्होंने दम तोड़ा। मेसी बोले- तुम्हारे बिना क्या करुंगा-मेसी ने पोस्ट में लिखा- 'मैं तुम्हारे बिना क्या करूंगा, यह नहीं जानता। मुझे

नहीं पता कि आगे कैसे बढ़ना है।' उन्होंने कहा- 'तुम शुरुआत से मेरे साथ थे और बहुत कम समय बचा था। तुम थोड़ा और इंतजार क्यों नहीं कर सके, ताकि हम इसे साथ में पूरा कर पाते?' जॉर्ज अपने बेटे लियोनेल के पूरे करियर में उनके साथ रहे। वे बार्सिलोना में मेसी के शुरुआती सालों से उनके साथ थे। पिता की इच्छा पर मेसी वर्ल्ड कप खेले-39 साल के अर्जेंटीना के कप्तान मेसी ने बताया कि वर्ल्ड कप में खेलने की एक वजह उनके पिता की इच्छा थी। अर्जेंटीना फाइनल में स्पेन से 1-0 से हार गई थी। मेसी ने टूर्नामेंट में 8 गोल किए थे। मेसी ने कहा- 'तुम हमेशा मुझसे फीफा वर्ल्ड कप में खेलने के लिए कहते थे। टूर्नामेंट शुरू होने से कुछ दिन पहले तुम्हारी तबीयत ज्यादा बिगड़ गई थी।' उन्होंने कहा- 'यह पहली बार था, जब तुम किसी टूर्नामेंट में नहीं रहने वाले थे। हर मैच खत्म होने के बाद मैं तुम्हारे मैसेज का इंतजार करता था।' अल्जीरिया के खिलाफ गोल के बाद रोए थे मेसी-वर्ल्ड कप के दौरान मेसी ने शुरुआती मैच में अल्जीरिया के खिलाफ हैट्रिक लगाई थी। वे अपना पहला गोल सेलिब्रेट करते समय रोने लगे। बाद में उन्होंने बताया इसकी वजह उनके पिता की खराब तबीयत थी। मेसी ने कहा कि वह फाइनल अपने पिता के लिए जीतना चाहते थे। मेरे पास दूसरा वर्ल्ड कप घर लाने की ऊर्जा नहीं बची थी। उन्होंने आगे कहा- 'हम चैंपियन नहीं बन सके, लेकिन तुम्हें पता नहीं है कि हमने हर मैच का कितना आनंद लिया। एक बार फिर तुम सही थे, मुझे वहां होना था और खेलना था।' कहा- बच्चों में पिता की याद को जिंदा रखूंगा-मेसी ने लिखा कि वह अपने बच्चों की परवरिश के जरिए पिता की याद को जिंदा रखेंगे।उन्होंने कहा- 'मुझे तुम्हारी बहुत याद आएगी, लेकिन तुम हमेशा मौजूद रहोगे। खासकर मेरे बच्चों की परवरिश में, क्योंकि मैं उन्हें उसी तरह सिखाऊंगा और पालूंगा, जैसे तुमने मुझे पाला।' लियोनेल मेसी और उनकी पत्नी एंटोनेला रोकुजो के तीन बेटे हैं। बड़े बेटे थियागो मेसी का जन्म 2012 में हुआ था। फिर 2015 में माटेओ मेसी का जन्म हुआ। 2018 में जन्मे सिरो मेसी सबसे छोटे बेटे हैं।

क्या भारत डब्लूटीसी के फाइनल में पहुंच सकता है,100फीसदी गारंटी के लिए सभी 9 मैच जीतने होंगे, श्रीलंका से हारे तो राह कठिन

स्पोर्ट डेस्क। टीम इंडिया वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप के मौजूदा

सीजन में अपने आधे मैच खेल चुकी है। टीम 48.15फीसदी पॉइंट्स के साथ 5वें स्थान पर है। फाइनल में पहुंचने के लिए टॉप-2 में रहना जरूरी है।। भारत अगर अपने बाकी 9 मैच जीत लेता है तो उसके 74.07 परसेंट पॉइंट्स होंगे और टॉप-2 फिनिश पक्का हो जाएगा। एक भी मैच हारने पर भारत के 68.52 परसेंट पॉइंट्स होंगे। इस स्थिति में भारतीय टीम को ऑस्ट्रेलिया और साउथ अफ्रीका जैसी टीमों के नतीजों पर निर्भर रहना होगा। 2 मैच हारने की स्थिति में भारत का फाइनल में पहुंचना लगभग असंभव हो जाएगा। श्रीलंका से हारे तो पाकिस्तान से भी पिछड़ सकते हैं-श्रीलंका दौरे के 5 पॉसिबल रिजल्ट हैं। 2-0 से सीरीज जीतने पर टीम इंडिया के 57.58फीसदी अंक हो जाएंगे। इसी दौरान अगर ऑस्ट्रेलियाई टीम बांग्लादेश को एक भी मैच हरा देती है, तो भारत चौथे स्थान पर आ जाएगा। वहीं, 0-2 से हारने की स्थिति पर भारतीय टीम के 36.36 परसेंट पॉइंट्स हो जाएंगे और वह श्रीलंका से भी नीचे हो जाएगी। यहां से फाइनल की राह बेहद मुश्किल हो जाएंगी। इस स्थिति में भारत पॉइंट्स टेबल में पाकिस्तान से भी पीछे हो सकता है। हालांकि, इसके लिए पाकिस्तान को इंग्लैंड पर 3-0 से जीत दर्ज करनी होगी। अभी 9 मुकाबले बाकी; 3 सीरीज खेलनी हैं-मौजूदा साइकल में भारतीय टीम को 9 मैच खेलने हैं। इनमें 2 मैच श्रीलंका, 2 मैच न्यूजीलैंड और 5 मैच ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ होम सीरीज में खेलने हैं। श्रीलंका दौरे के बाद टीम इंडिया को नवंबर महीने में न्यूजीलैंड दौरे पर जाना है। उसके बाद 5 मैचों की होम सीरीज में ऑस्ट्रेलिया की मेजबानी करनी है। साउथ अफ्रीका से क्लीन स्वीप ने नुकसान पहुंचाया-शुभमन गिल की कप्तानी वाली टीम इंडिया ने इंग्लैंड दौरे से अपने अभियान का आगाज किया। टीम ने वहां 5 मैचों की सीरीज 2-2 से ड्रॉ कराई। इंग्लैंड से लौटने के बाद वेस्टइंडीज को होम कंडीशंस में वेस्टइंडीज को 2-0 से हरा दिया। यहां तक सब ठीक था। लेकिन, पिछले साल उसे वर्ल्ड चैंपियन साउथ अफ्रीका ने 2 मैचों की सीरीज में 2-0 से हराते हुए क्लीन स्वीप किया। यहीं भारतीय टीम पॉइंट्स टेबल में पिछड़ गई।

बांग्लादेश के खिलाफ ऑस्ट्रेलिया का सबसे कम टेस्ट स्कोर,198 रन पर ऑलआउट,हसन महमूद ने लिए 6 विकेट, स्टीव स्मिथ की फिफ्टी

स्पोर्ट डेस्क। बांग्लादेश के खिलाफ डार्विन में खेले जा रहे पहले टेस्ट की पहली पारी में ऑस्ट्रेलिया 198 रन पर ऑलआउट हो गई। यह टेस्ट क्रिकेट में बांग्लादेश के खिलाफ ऑस्ट्रेलिया का सबसे कम स्कोर है। इससे पहले ऑस्ट्रेलिया का सबसे कम स्कोर 217 रन था। यह 2017 में मीरपुर टेस्ट में बना था।टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने उतरी ऑस्ट्रेलियाई टीम की शुरुआत खराब रही। लंच तक टीम ने 74 रन पर 4 विकेट गंवा दिए थे। इसके बाद स्टीव स्मिथ ने पारी संभालने की कोशिश की, लेकिन उनके आउट होने के बाद ऑस्ट्रेलिया के आखिरी चार विकेट भी जल्दी गिर गए। बांग्लादेश की ओर से हसन महमूद ने करियर का बेस्ट प्रदर्शन करते हुए 17 ओवर में 55 रन देकर 6 विकेट लिए। तस्कीन अहमद और इबादत हुसैन को 2-2 विकेट मिले। स्मिथ ने 71 रन की पारी खेली-ऑस्ट्रेलिया की ओर से स्टीव स्मिथ सबसे ज्यादा रन बनाने वाले बल्लेबाज रहे। उन्होंने 109 गेंदों पर 71 रन बनाए। उनकी पारी में 7 चौके और 1 छक्का शामिल रहा। स्मिथ ने एलेक्स कैरी के साथ पांचवें विकेट के लिए 55 रन की साझेदारी की। यह ऑस्ट्रेलिया की पारी की सबसे बड़ी साझेदारी रही। कैरी 19 रन बनाकर आउट हुए। 74 रन पर 4 विकेट गंवा दिए थे-ऑस्ट्रेलिया को पहला झटका हसन महमूद ने दिया। उन्होंने जेक वेदराल्ड को 23 रन पर आउट किया। इसके बाद अगले ही ओवर में ट्रैविस हेड को भी पवेलियन भेज दिया। मार्नस लाबुशेन सिर्फ 1 रन बनाकर आउट हुए, जबकि कैमरन ग्रीन 13 रन बना सके। इस तरह लंच तक ऑस्ट्रेलिया ने 74 रन पर 4 विकेट गंवा दिए थे। स्मिथ के आउट होते ही बिखरी पारी-दूसरे सेशन में स्मिथ और कैरी ने पारी को संभाला। दोनों ने 55 रन जोड़े, लेकिन कैरी के आउट होने के बाद ऑस्ट्रेलिया की पारी फिर लड़खड़ा गई। ब्यू वेबस्टर 12, पैट कमिंस 9 और मिचेल स्टार्क 1 रन बनाकर आउट हुए। स्मिथ भी 71 रन के स्कोर पर पवेलियन लौट गए। नाथन लायन 7 रन बनाकर हसन महमूद का छठा शिकार बने। हसन महमूद का बेस्ट टेस्ट प्रदर्शन-हसन महमूद ने 6/55 के आंकड़े के साथ टेस्ट में अपना बेस्ट गेंदबाजी प्रदर्शन किया। उन्होंने ऑस्ट्रेलिया के जेक वेदराल्ड, ट्रैविस हेड, स्टीव स्मिथ, पैट कमिंस, मिचेल स्टार्क और नाथन लायन को आउट किया। हसन के नाम अब टेस्ट क्रिकेट में 3 बार 5 विकेट लेने का कारनामा हो गया है। खास बात यह है कि उनके तीनों फाइव-विकेट हॉल विदेशी जमीन पर आए हैं। 2020 में हसन ने डेब्यू किया-हसन महमूद बांग्लादेश के दाएं हाथ के तेज गेंदबाज हैं। उनका जन्म 12 अक्टूबर 1999 को लक्ष्मीपुर, बांग्लादेश में हुआ था। उन्होंने 2020 में बांग्लादेश के लिए इंटरनेशनल क्रिकेट में डेब्यू किया। लाबुशेन फिर फेल हुए-ऑस्ट्रेलिया के बल्लेबाज मार्नस लाबुशेन का खराब फॉर्म इस मैच में भी जारी रहा। वे 20 गेंदों का सामना करने के बाद सिर्फ 1 रन बनाकर आउट हो गए। लाबुशेन को अपना खाता खोलने के लिए 14 गेंदों का इंतजार करना पड़ा। यह लगातार आठवीं टेस्ट पारी है, जब वह 50 रन के आंकड़े तक नहीं पहुंच सके हैं। पिछले साल दिसंबर से लाबुशेन अर्धशतक नहीं बना पाए हैं।

खेल मंत्रालय ने टेबल टेनिस फेडरेशन को सस्पेंड किया

स्पोर्ट डेस्क। भारतीय खेल मंत्रालय ने टेबल टेनिस फेडरेशन ऑफ इंडिया को सस्पेंड कर दिया। बुधवार को मंत्रालय ने फेडरेशन में मैनेजमेंट और शासन व्यवस्था से जुड़ी खामियों को इसकी वजह बताया। मंत्रालय ने भारतीय ओलिंपिक संघ को देशभर में टेबल टेनिस का एडमिनिस्ट्रेशन संभालने के लिए एक कमिटी बनाने का निर्देश दिया है। यह कमिटी TTFI में शासन व्यवस्था बहाल होने तक फेडरेशन के कामकाज की देखरेख करेगी। मंत्रालय के मुताबिक, TTFI की मान्यता निलंबित करने की एक बड़ी वजह तय समय सीमा के भीतर फेडरेशन के चुनाव नहीं कराना है। इस मामले में मंत्रालय ने TTFI को पहले कारण बताओ नोटिस जारी किया था। फेडरेशन की ओर से नोटिस के जवाब में अपना पक्ष रखा गया था। हालांकि, मंत्रालय ने इस जवाब को असंतोषजनक पाया।

मैंने क्रिकेट में कुछ नहीं किया,100 टेस्ट, पहली हैट्रिक वाहेगुरु की मेहर, उनकी मर्जी के बिना पत्ता भी नहीं हिलता-पूर्व क्रिकेटर हरभजन

जालंधर। जालंधर के रहने वाले पूर्व क्रिकेटर हरभजन सिंह ने अपनी करीब 30 साल की क्रिकेट यात्रा और सफलता के बारे में खुलकर बात की। एक इंटरव्यू में उन्होंने कहा कि भारत के लिए 100 टेस्ट मैच खेलना, टेस्ट क्रिकेट में देश की पहली हैट्रिक लेना और ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ एक सीरीज में 32 विकेट लेना वाहेगुरु की मेहर और परिवार के त्याग का नतीजा है। हरभजन ने कहा कि इंसान जीवन में जो कुछ हासिल करता है, उसमें उसकी भूमिका सिर्फ एक माध्यम की होती है। असली दिशा और आशीर्वाद ऊपर वाले का होता है। उन्होंने कहा कि 30 साल क्रिकेट खेलने के बाद भी वह अपनी सफलता का श्रेय सिर्फ अपनी मेहनत को नहीं, बल्कि वाहेगुरु की मेहर को देते हैं। हरभजन ने साल 2016 में भारत के लिए आखिरी मैच खेला था। इसके बाद 24 दिसंबर 2021 में क्रिकेट के सभी फॉर्मेट से संन्यास ले लिया था। इसके बाद मार्च 2022 में राजनीति में एंट्री की। उन्हें आप सरकार ने पंजाब से राज्यसभा सांसद बनाया। हालांकि 24 अप्रैल 2026 को वे आप छोड़कर बीजेपी में शामिल हो गए। हरभजन सिंह की 3 बड़ी बातें- 32 विकेट चटकाना वाहेगुरु की मर्जी का परिणाम: पूर्व क्रिकेटर हरभजन सिंह ने एक इंटरव्यू में कहा- भारत के लिए 100 टेस्ट मैच खेलना, टेस्ट क्रिकेट में देश की पहली हैट्रिक लेना और ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ ऐतिहासिक सीरीज में 32 विकेट चटकाना वाहेगुरु की मर्जी और परिवार के त्याग का परिणाम हैं। व्यक्ति जीवन में जो भी हासिल करता है, उसमें उसकी अपनी भूमिका केवल एक माध्यम की होती है। असली दिशा और आशीर्वाद ऊपर वाले का होता है। बहनों के तप के कारण ही मुझे सम्मान मिला: उन्होंने कहा कि मेरे पिता का आशीर्वाद, मां का दुलार और बहनों के तप के कारण ही मुझे जीवन में ये तमाम खुशियां और सम्मान हासिल हुआ है। यह कितना बड़ा वहम था कि मैं अहम था, खुदा के बंदे उस वाहेगुरु का शुक्र कर, यह तो उसका तेरे ऊपर रहम था। वाहेगुरु की मर्जी के बिना पत्ता भी नहीं हिलता: उन्होंने कहा कि जब इंसान को यह लगने लगता है कि उसने सब कुछ

स्वयं हासिल कर लिया है, तब उसे यह समझना चाहिए कि वाहेगुरु की मर्जी के बिना पत्ता भी नहीं हिलता। 30 साल तक क्रिकेट को समर्पित रहने के बाद भी मैं अपनी सफलताओं का श्रेय अपनी मेहनत से ज्यादा वाहेगुरु की मेहर और अपने प्रशंसकों व परिवार के समर्थन को देता हूं। 1998 में खेला था पहला टेस्ट-हरभजन सिंह ने अपना पहला टेस्ट मैच 1998 में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ खेला था। उन्होंने अपना आखिरी टेस्ट 2015 में श्रीलंका के खिलाफ खेला था। इसके अलावा पहला वनडे मैच न्यूजीलैंड के खिलाफ 1998 में खेला था। उनका आखिरी वनडे मुकाबला 2015 में साउथ अफ्रीका के खिलाफ था। 2016 एशिया कप में आखिरी मुकाबला खेला-2016 में हरभजन ने यूएई के खिलाफ एशिया कप में अपना आखिरी टी-20 मैच खेला था। यही उनका आखिरी इंटरनेशनल मैच भी था। इसमें हरभजन के नाम 163 मैच में 150 विकेट दर्ज है। वे मुंबई इंडियंस, चेन्नई सुपर किंग्स और कोलकाता नाइट राइडर्स के लिए खेल चुके हैं। हरभजन से जुड़े 5 पुराने विवाद जानिए-मंकीगेट विवाद (2008): साल 2008 के ऑस्ट्रेलिया दौरे पर सिडनी टेस्ट के दौरान ऑस्ट्रेलियाई ऑलराउंडर एंड्रयू साइमंड्स ने हरभजन सिंह पर नस्लीय टिप्पणी करने का आरोप लगाया। साइमंड्स का दावा था कि हरभजन ने उन्हें 'मंकी' (बंदर) कहा। इस घटना को क्रिकेट इतिहास में 'मंकीगेट' के नाम से जाना जाता है। मैच रेफरी ने हरभजन पर तीन मैचों का प्रतिबंध लगा दिया था, जिसके विरोध में भारतीय टीम ने दौरा रद्द करने की चेतावनी दी। बाद में अपील के बाद यह साबित नहीं हो सका कि टिप्पणी नस्लीय थी, जिसके बाद प्रतिबंध हटाकर केवल मैच फीस का 50 प्रतिशत जुर्माना लगाया गया। आईपीएल थप्पड़कांड (2008): इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) के पहले सीजन में मुंबई इंडियंस और किंग्स इलेवन पंजाब के बीच खेले गए मैच के बाद एक अभूतपूर्व विवाद खड़ा हो गया। मैच खत्म होने के बाद हरभजन सिंह ने पंजाब के तेज गेंदबाज एस. श्रीसंत को मैदान पर ही थप्पड़ मार दिया, जिसके बाद श्रीसंत कैमरे पर रोते हुए दिखे। इस गंभीर अनुशासनहीनता के चलते बीसीसीआई और आईपीएल गवर्निंग काउंसिल ने कड़ा रुख अपनाया। हरभजन सिंह को आईपीएल के बाकी बचे पूरे सीजन से निलंबित कर दिया गया और उन पर पांच अंतरराष्ट्रीय मैचों का प्रतिबंध भी लगाया गया। रॉयल स्टैग विज्ञापन और पगड़ी विवाद (2006): साल 2006 में हरभजन सिंह एक शराब ब्रांड (रॉयल स्टैग) के टीवी विज्ञापन में बिना पगड़ी के खुले बालों के साथ नजर आए। इस विज्ञापन के सामने आते ही सिख समुदाय में भारी रोष पैदा हो गया। अकाल तख्त और विभिन्न सिख धार्मिक संगठनों ने इसे सिख धर्म की मर्यादा और परंपराओं का उल्लंघन बताया। मामले की गंभीरता को देखते हुए और चौतरफा विरोध के बाद हरभजन सिंह को सिख समुदाय से सार्वजनिक रूप से बिना शर्त माफी मांगनी पड़ी थी। इसके बाद उस विज्ञापन को भी तुरंत प्रभाव से हटा दिया गया था। रवींद्र जडेजा के साथ मैदान पर बहस (2013): साल 2013 में वेस्टइंडीज में खेली गई त्रिकोणीय श्रृंखला के एक मैच के दौरान हरभजन सिंह और भारतीय टीम के साथी खिलाड़ी रवींद्र जडेजा के बीच मैदान पर ही तीखी बहस हो गई। वेस्टइंडीज की पारी के दौरान जडेजा की गेंद पर कैच छूटने के बाद दोनों खिलाड़ियों के बीच कहासुनी शुरू हुई, जो देखते ही देखते आक्रामक रूप लेने लगी। स्थिति बिगड़ती देख मैदान पर मौजूद अन्य खिलाड़ियों और कप्तान को बीच-बचाव करना पड़ा। टीवी कैमरों में कैद हुई इस घटना से भारतीय टीम के अनुशासन और ड्रेसिंग रूम के माहौल पर सवाल उठे थे। नेशनल क्रिकेट अकादमी (एनसीए) से निष्कासन (2000): करियर के शुरुआती दौर यानी साल 2000 में हरभजन सिंह को बेंगलुरु स्थित नेशनल क्रिकेट अकादमी (एनसीए) से बाहर कर दिया गया था। तत्कालीन एनसीए निदेशक और पूर्व भारतीय कप्तान कपिल देव ने उन पर अनुशासनहीनता, शिकायतें नजरअंदाज करने और ट्रेनिंग के नियमों का पालन न करने का आरोप लगाया था। इस विवाद के कारण उनका करियर शुरू होने से पहले ही संकट में आ गया था। हालांकि, इस झटके के बाद हरभजन ने अपने रवैये में सुधार किया और 2001 की ऑस्ट्रेलिया सीरीज से भारतीय टीम में शानदार वापसी की।

आपस में सुनने की आदत एक ब्रेकडाउन को ब्रेकथ्रू बनाती है

कई दशक पहले की बात है, मेरे कजिन की शादी थी। हमारी पीढ़ी में यह पहली शादी थी। हम सब कजिन इतने उत्साहित

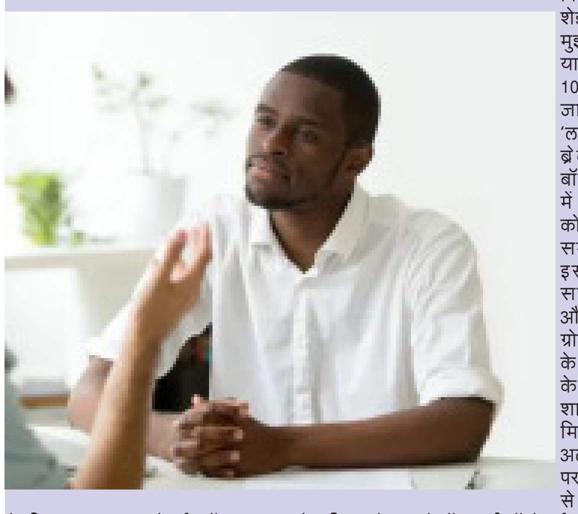

थे कि मद्रास (अब चेन्नई) में इकट्ठा हुए और तैयारियों में जुट गए। लेकिन हमेशा हंसने और खुश रहने वाली कजिन, जिसकी पांच दिन बाद शादी थी, वह अचानक हमें अवॉइड करने लगी। वह हमेशा अपने टेलीफोन वाले कमरे में बंद रहती। हम उसे सताने लगे कि उसे प्रेम हो गया है। वह गुस्से और शर्म की मिलीजुली-सी प्रतिक्रिया देती। लेकिन जब नानाजी ने आकर हमें एक अलग कहानी बताई तो लगा कि हम गलत समझ रहे थे। उन्होंने कहा कि 'वह पीड़ा में है, उसे परेशान मत करो। वह स्कूल की पुरानी ट्रॉफियां और फोटो एलबम छांट रही है। नए घर के लिए चंद सूटकेसों में उन्हें समेट नहीं पा रही। तुम्हें उसे परेशान नहीं करना चाहिए। जाओ और पैकिंग में उसकी मदद करो। इसके अलावा वह पैरेंट्स का साथ छूटने और एक नया पार्टनर पाने के बीच असमंजस में भी है।' उस दिन नानाजी ने कमान संभाली। चूंकि मैं भाई-बहनों में सबसे बड़ा था तो उन्होंने मुझसे साथ आने को कहा और उसके कमरे में जाकर उससे एक घंटे बातचीत की। उन्होंने खूबसूरती से समझाया कि वह अब अपने परिवार के दायरे में नए लोगों को शामिल करने वाली है।उन्होंने कहा कि 'किसी नए इंसान से शादी का मतलब माता-पिता को खोना नहीं, बल्कि एक प्रोटेक्टेड बेटी की भूमिका से बढ़कर ऐसी पार्टनर बनना है- जो दोनों परिवारों की देखभाल कर सके।' उनकी आखिरी लाइन मैं कभी नहीं भूलूंगा। उन्होंने कहा कि 'शादी ?महज नए इंसान को पाना ही नहीं, बल्कि किसी पुराने इंसान को छोड़ना भी है। जैसे कि मैं, कोई और चीज या स्कूल के पुराने एलबम भी।' वह उनसे लिपट कर रो पड़ी। उन्होंने पांच मिनट तक उसे खुलकर रोने दिया। उसी दिन मैंने अचानक-से उसमें बदलाव देखा। उसका सामान अब महज दो सूटकेसों में सिमट गया। उसी शाम हंसती, खिलखिलाती वो वापस आ गई थी। यकीन मानिए, दशकों बाद नानाजी की वो गहरी सलाह मेरे काम आई, जब मैंने अपनी बेटी को उसी स्थिति में देखा। जब वह अपना ब्राइडल ट्रूजो चुन नहीं पा रही थी, तो मैंने उससे वही बात कही। वह अकसर अपनी मां के साथ बूटीक जाती, खूबसूरत लहंगे देखती और यह कहते हुए खाली हाथ लौट आती कि उसे ब्लू का सही शेड नहीं मिल रहा। मुझे यह घटना तब याद आई, जब मैंने 10 फरवरी को ही जारी हुई किताब 'लव्स लेबर : हाउ टु ब्रेक एंड मेक द बॉन्ड्स ऑफ लव' में एक अच्छी शादी को लेकर बेहतरीन समझ को पढ़ा। इसमें प्रसिद्ध साइकोएनालिस्ट और लेखक स्टीफन ग्रोज ने 'सोफी' नाम के केन्द्रीय किरदार के इर्द-गिर्द प्यार, शादी, समझ और मिसअंडरस्टैंडिंग के अलग-अलग भावों पर बात की है। 40 से अधिक वर्षों तक मरीजों से हुई बातचीत के आधार पर वे यह बताते हैं कि जब हम सुनना सीखते हैं तो हमारी रिलेशनशिप हमें क्या सिखा सकती है। चूंकि वे पश्चिमी दुनिया से हैं, जहां शादियां अस्थिरताओं से गुजर कर तलाक तक पहुंच जाती हैं, तो वे बताते हैं कि जब हम अपने पार्टनर को सुनना सीख जाते हैं तो रिलेशनशिप हमें क्या सिखाती है। मसलन, अचानक से जब पति को उसका काम आनंद देने लगे तो कपल्स के बीच फ्रिक्शन शुरू हो सकता है। उनकी सलाह है कि काम के प्रति इस नए प्यार पर झगड़ने के बजाय दोनों को बात करनी चाहिए, क्योंकि 'रोमांस भी एक कार्य है और दोनों को इस पर भी कड़ी मेहनत करनी पड़ेगी।' फंडा यह है कि लेबर ऑफ लव जीवन भर का काम है। जब हम एक-दूसरे को ज्यादा सुनते हैं, तो इसका फल और भी मीठा हो जाता है। कभी-कभी कमियां भी सुननी चाहिए, क्योंकि इससे कई बार नया रास्ता भी निकल आता है।एन. रघुरामन

पार्टी की चर्चाओं में गर्मजोशी लानी है तो अपने पास हैरतअंगेज जानकारी रखिए

आपने कई ईवनिंग पार्टियों में देखा होगा कि कुछ लोग सबका ध्यान खींचते हैं। ऐसा नहीं कि वे

सेलेब्रिटी या बहुत अमीर लोग हों, जो अपना फैशन दिखा रहे हों, बल्कि वे वहां इकट्ठे लोगों को कुछ अनसुनी कहानियां सुना रहे होते हैं और इसीलिए पार्टी की जान बन जाते हैं। दूसरों के बारे में मैं नहीं जानता, लेकिन मैं तो मेहमानों की लिस्ट और उनकी संभावित रुचि के आधार पर प्लान कर लेता हूं कि उस शाम कौन-सी कहानियां शेयर करनी हैं। सोच रहे हैं कि यह कैसे प्लान होगा? यहां छोटा-सा सुझाव पेश है। अगर आप 14-16 मार्च, 2026 के दौरान किसी सोशल इवेंट या गेट-टुगेदर में शामिल हो रहे हैं तो यकीन मानिए 'ऑस्कर 2026' वहां मेहमानों के बीच चर्चा का विषय रहेगा। क्योंकि उस समय पूरी मीडिया इंडस्ट्री इसी के बारे में लिख और बोल रही होगी। इसी कारण यह उन चुनिंदा दिनों में बेहद हॉट टॉपिक होगा। मुंबई में तो वर्षों से यही रुझान रहा है। तो यहां कुछ चौंका देने वाली जानकारियां हैं, जो आपकी पार्टी की चर्चा में चमक बिखेर देंगी। इसे एकेडमी अवॉर्ड के नाम से जाना जाता है। इसका समारोह 15 मार्च, 2026 को लॉस एंजेलिस में हॉलीवुड के डॉल्बी थिएटर में होगा। इसे आप 16 मार्च 2026 को भारतीय समयानुसार सुबह 4.30 बजे अपने टीवी पर देख सकते हैं। थिएटर में लगभग 3,400 सीटें हैं, जो नॉमिनेटेड कलाकारों, उनके परिवारों, प्रजेंटर्स, ब्रॉडकास्ट क्रू, प्रमुख स्पॉन्सर्स और परफॉर्मर्स के लिए आरक्षित रहती हैं। ऑस्कर 2026 में इस बार 'बेस्ट कास्टिंग' के लिए भी एक नया अवॉर्ड दिया जाएगा, जिससे कुल कैटेगरीज अब 24 हो जाएंगी। ऑस्कर के जिन अनमोल स्टैचुएट्स को हर विजेता घर ले जाएगा, उनके भी बड़े रोचक तथ्य हैं। हर मूर्ति 13.5 इंच लंबी और 3.86-3.9 किलोग्राम वजनी होती है, यानी लगभग एक लैपटॉप के वजन के बराबर। हर विजेता को एक्सेप्टेंस स्पीच देते हुए इसे हाथ में थामना होता है।

ठोस कांस्य से बनी इस ट्रॉफी पर 24 कैरेट सोने की परत होती है। मेरे जैसा सामान्य व्यक्ति सोच सकता है कि ऑस्कर ट्रॉफियां बड़े पैमाने पर बनाई जाती होंगी। लेकिन आपको हैरानी होगी कि हर स्टेच्यू को 20 कारीगरों का एक समूह हाथों से बनाता है और हर साल निर्माण की इस प्रक्रिया में छह महीने लगते हैं। हर ऑस्कर अपने आप में एक मूर्ति है, जिसमें सबसे पहले वैक्स फिगर बनाया जाता है। इसके चारों ओर कठोर और हीट रेजिस्टेंट आवरण बनाने के लिए उसे सिरेमिक स्लरी और सिलिका सैंड में डुबोया जाता है। फिर मोम को पिघलाकर उसकी जगह पिघला कांस्य भरा जाता है। ठंडा होने पर सिरेमिक खोल तोड़ते हैं और उसमें रही किसी भी कमी को ठीक करने के लिए घिसाई और पॉलिश की जाती है। मूर्ति कई चरणों से गुजरती है और सबसे कठिन हिस्सा इसके होंठ बनाना होता है, क्योंकि वे बहुत छोटे होते हैं। अंतिम चरण में उस पर सोने की परत चढ़ाई जाती है। परत चढ़ाने की प्रक्रिया इतनी हाई-टेक होती है कि एकेडमी उसी एप्नर टेक्नोलॉजी कंपनी की सेवाएं लेती है, जो नासा के उपकरणों की प्लेटिंग करती है।

सोने की परत इलेक्ट्रोप्लेटिंग से चढ़ाई जाती है। मूर्ति को रासायनिक घोल में डुबोकर इलेक्ट्रिक करंट के जरिए सोने के कणों की निकल प्लेटेड कांस्य से बॉन्डिंग कराई जाती है। इससे सोना कभी उखड़ता नहीं है, हालांकि विजेताओं को आगाह किया जाता है कि इंसान के हाथों का तेल लगने से इसकी चमक कम हो सकती है। एक आखिरी बात। ऑस्कर की घोषणा से पहले अकाउंटिंग फर्म प्राइसवॉटरहाउसकूपर्स (पीडब्ल्यूसी) के केवल दो पार्टनरों को ही परिणाम की जानकारी होती है। समारोह के दौरान वे मंच के किनारों पर खड़े होते हैं, ताकि प्रजेन्टर्स को सही लिफाफे दे सकें। फंडा यह है कि अगर आप एक ऐसे स्टोरीटेलर हैं, जो अपनी कहानियों पर ज्ञान की नई परत चढ़ा सकते हैं तो मैं शर्तिया कह सकता हूं कि आप ही सब को आकर्षित करने वाली 'क्वीन हनी-बी' बनेंगे। एन. रघुरामन

गुलामी के प्रतीकों को हटाने का हमें स्वागत करना चाहिए

यूं तो मैं नई दिल्ली की सड़कों, प्रतिमाओं और इमारतों में सरकार द्वारा किए गए हर परिवर्तन का समर्थन नहीं करता हूं। मिसाल के तौर पर, मुझे समझ नहीं आता कि राजपथ का नाम बदलकर कर्तव्य पथ क्यों किया गया। न ही मैं यह समझ पाया हूं कि मुगल गार्डन्स का नाम बदलकर अमृत उद्यान क्यों किया गया, क्योंकि वह उद्यान मुगल शैली में ही निर्मित है। लेकिन इस महीने जब राष्ट्रपति द्रोपदी मुर्मु ने राष्ट्रपति भवन में एडविन लुटियन्स की प्रतिमा के स्थान पर सी. राजगोपालाचारी की प्रतिमा का अनावरण किया, तो इससे मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। लुटियन्स बेशक एक प्रतिभाशाली आर्किटेक्ट रहे होंगे, लेकिन वे असंदिग्ध नस्लवादी थे। भारतीयों के प्रति उनके मन में गहरी अवमानना की भावना थी, जिसे उन्होंने कभी नहीं छिपाया। इसका अकाट्य प्रमाण 1985 में प्रकाशित पुस्तक 'द लेटर्स ऑफ एडविन लुटियन्स टु हिज वाइफ लेडी एमिली' में मिलता है। भारत का कुछ भी लुटियन्स को प्रभावित नहीं कर सका था- न वास्तुकला, न दर्शन, न संस्कृति और यहां के लोगों की चमड़ी का रंग तो हरगिज नहीं। इंदौर के डेली कॉलेज में उन्होंने छात्रों को एक नस्लवादी शब्द से सम्बोधित किया था। बनारस में उन्होंने पाया कि यहां 'हर तरह के काले लोग, हर तरह का काम करते' हैं। मद्रास के लोगों के लिए तो उन्होंने और अभद्र टिप्पणी की।एक अन्य प्रसंग में उन्होंने लिखा कि 'भारत के लोगों से कोई उम्मीद नहीं की जा सकती'। भारतीय धर्मों में उन्हें कोई बौद्धिकता नजर नहीं आई। अपने निजी स्टाफ के नामों पर भी वे फब्ती कसने से नहीं चूके। उन्होंने कहा, 'ये लोग वो तमाम हरकतें करते हैं, जो किसी भी गोरे साहब को ऊबा सकती हैं।'भारतीय वास्तुकला भी उन्हें प्रभावित नहीं कर पाई। बनारस के घाटों के किनारे स्थित मंदिर उन्हें 'बच्चों के खिलौने वाले पेड़ों' जैसे प्रतीत हुए। कुतुब मीनार की गढ़न उनके अनुसार बेपरवाह और बेढंगी थी। मुम्बई में होलकर का महल उन्हें अभद्र और उदयपुर का राजप्रासाद उन्हें आदिम लगा था। ताजमहल को भी उन्होंने खारिज करते हुए कह दिया कि वह यूनानियों और रोमनों की कृतियों के आसपास भी नहीं ठहरता। उनके साथ काम करने वाले भारतीय शिल्पकारों के बारे में उनकी टिप्पणी थी कि 'इन्हें भद्दे पैटर्न्स और अनगढ़ देवप्रतिमाएं बनाने के सिवा कुछ नहीं आता'। एक निर्माण के अंतिम चरणों में काम का निरीक्षण करते हुए उन्होंने लिखा कि 'लापरवाह भारतीय हमेशा की तरह चीजें बरबाद कर रहे थे और बेतरतीबी फैला रहे थे'। वे अपनी पत्नी के लिए बुद्ध प्रतिमा खरीदना चाहते थे, पर उन्हें कुछ भी मानक के अनुरूप नहीं लगा। उन्होंने लिखा- 'हे भगवान, यहां सबकुछ कितना कुरूप है।' यहां तक कि राष्ट्रपति भवन के भव्य गुम्बद को भी लुटियन्स ने इस प्रकार कल्पित किया था कि वह 'ब्रिटिश सैनिक, अधिकारी, मिशनरी या वायसराय के टोपीधारी सिर की छवि' उत्पन्न करे, जबकि इसे लुटियन्स के समर्थक भारतीय वास्तुकला से प्रेरित बताते हैं। इन तमाम उद्धरणों से स्पष्ट है कि हम भारतीयों और हमारी महान सभ्यता के प्रति लुटियन्स का रवैया एक कुपढ़, बददिमाग और नस्लवादी व्यक्ति का था। ऐसे में स्वयं राष्ट्रपति भवन में लुटियन्स की प्रतिमा का होना हमारी औपनिवेशिक विस्मृति का दयनीय प्रतीक था। यह पूर्णतः उपयुक्त है कि अब लुटियन्स की प्रतिमा को हटाकर उन चक्रवर्ती राजगोपालाचारी की प्रतिमा को स्थापित किया गया है, जो स्वतंत्र भारत के प्रथम और एकमात्र गवर्नर-जनरल थे। राजाजी एक सच्चे गांधीवादी और स्वतंत्रता सेनानी थे, जिन्हें मद्रास प्रेसिडेंसी के प्रीमियर, पश्चिम बंगाल के राज्यपाल और केंद्रीय गृह मंत्री के रूप में व्यापक राजनीतिक-प्रशासनिक अनुभव प्राप्त था। वे चिंतक और लेखक भी थे। उनका साहित्यिक योगदान- जिसमें रामायण और महाभारत के अनुवादों से लेकर संस्कृति और राजनीति पर चिंतनपरक निबंध तक शामिल हैं- भारतीय बौद्धिक परम्परा को और समृद्ध बनाते हैं। हम ऐसे गणराज्य हैं, जो अपनी सार्वजनिक स्मृति को अपनी ही मिट्टी में रोपना चाहता है। हमें सरकार को इस निर्णय के लिए बधाई देनी चाहिए, जो औपनिवेशिक इमारतें बनाने वाले के बजाय राष्ट्र की अंतश्चेतना के निर्माण में योगदान देने वाले व्यक्ति की स्मृति को समर्पित है।

अपने बच्चों को संकट से निपटना सिखाएं

आज के दौर में 'अर्श से फर्श' तक पहुंचने वाले कई कारोबारी साम्राज्य उन लोगों

ने खड़े किए हैं, जिन्होंने जमीन पर उतरकर कड़ी मेहनत की है। लेकिन, उनकी अगली पीढ़ी एक ऐसे दौर में पली-बढ़ी है जहां सुख-सुविधाओं की कोई कमी नहीं रही।

उन्होंने कभी किसी बड़े आर्थिक संकट का कड़वा स्वाद नहीं चखा।

यही कारण है कि संपत्ति बनाने वाली पीढ़ी और उसे विरासत में पाने वाली पीढ़ी के बीच सोच की बड़ी खाई पैदा हो गई है। पिछले नौ दिनों से खाड़ी देशों और मिडिल ईस्ट में छिड़े युद्ध ने उन माता-पिता की नींद उड़ा दी है, जिन्होंने शून्य से कारोबार खड़ा किया।

जहां वे संपत्ति और गिरते वैल्युएशन को लेकर रात भर जाग रहे हैं, वहीं उनके बच्चे बेफिक्र नजर आते हैं।

यह बेफिक्री किसी बहादुरी का नतीजा नहीं, बल्कि जमीनी हकीकत और संकटों के अनुभव की कमी है। आज कई बड़े कारोबारी माता-पिता ठीक वैसी ही स्थिति में हैं, जैसी 2008 के वैश्विक संकट के दौरान 'लेहमैन ब्रदर्स' की थी।

याद कीजिए, बैलेंस शीट पर भारी-भरकम संपत्ति होने के बावजूद वह कंपनी

दिवालिया हो गई थी। कारण? जब संकट आया और वे अपनी संपत्तियों को बेचने बाजार निकले, तो उन्हें वो कीमत नहीं मिली जो कागजों पर दर्ज थी।

रातोंरात वे कीमती संपत्तियां 'कबाड़' बन गईं, जिनका कोई खरीदार नहीं बचा था।

2008 के संकट के दौरान गोल्डमैन सैक्स का नेतृत्व करने वाले लॉयड ब्लैंकफीन भी इसी बात का समर्थन करते हैं। 71 वर्षीय ब्लैंकफीन का उन चिंतित पिताओं को मशविरा है जो आने वाले आर्थिक संकट से डरे हुए हैं, 'संपत्तियों को लंबे समय तक दबाकर बैठने के बजाय, सही समय पर उन्हें बेच देने में ही समझदारी है। मैं यह नहीं कह रहा कि संकट कल ही आ जाएगा, लेकिन जब युद्ध जैसे हालात बनते हैं, तो आप पाएंगे कि जिन संपत्तियों को आपने ऊंची कीमतों पर रखा था, बाजार में उतनी कीमत नहीं रह गई।

' आज दुनिया के सामने 'स्टैगफ्लेशन' का खतरा मंडरा रहा है। आसान शब्दों में कहें तो आर्थिक विकास की रफ्तार थम जाना, पर महंगाई बढ़ते रहना। ऐसे में बच्चों को यह समझाना जरूरी है कि वे 'स्थायित्व के भ्रम' में न जिएं, बल्कि दुनिया में बदल रहे भू-राजनैतिक समीकरणों के आधार पर अपनी रणनीति बनाएं। मैनेजमेंट टिपः अपने बच्चों को 'संकट के लिए तैयार' रहना सिखाएं।

बदलते दौर में अपनी योजनाओं को लचीला और मजबूत रखने का यही एकमात्र तरीका है। बच्चों को उस दुनिया के लिए तैयार न करें जो अब अस्तित्व में ही नहीं है।

अपने बच्चों को सुरक्षा जरूर दें लेकिन चुनौतियों से डरें नहीं

हाल के दिनों में जापान से 'पंच' नामक एक बंदर के वीडियो लगातार वायरल हुए हैं। यह 7 महीने का मकाक बंदर है, जिसे एक चिड़ियाघर

में रखा गया है। उसकी मां ने उसे त्याग दिया था और अन्य बंदर उसे तंग कर रहे थे। उसको दुःखी देखकर चिड़ियाघर संचालक ने उसे एक सॉफ्ट टॉय दे दिया। फिर तो, 'पंच' उस सॉफ्ट टॉय को ही सीने से लगाए घूमता रहा, मानो उसकी खामोश मौजूदगी में अपने लिए सुकून खोज रहा हो। यह दृश्य संवेदनशील भी था और असहज करने वाला भी। एक सामाजिक प्राणी- जिसे प्रकृति ने दूसरों के संग-साथ के लिए तैयार किया था- वह अपनी भावनात्मक जरूरतों के लिए एक खिलौने का सहारा ले रहा था। एक डॉक्टर और पैरेंटिंग व बाल-विकास के क्षेत्र से जुड़ा व्यक्ति होने के नाते वह दृश्य मुझे दो गहरी सच्चाइयों की याद दिलाता है। पहली, सुकून, स्पर्श और भावनात्मक सुरक्षा की जरूरत हमारे जैविक ढांचे में गहराई से निहित है। दूसरी, खिलौने- चाहे वे इंसान के बच्चे हों या बंदर के- भावनाओं को संतुलित करने और बाल विकास में अहम भूमिका निभाते हैं। सॉफ्ट टॉय्ज विकासात्मक मनोविज्ञान में ट्रांजिशनल ऑब्जेक्ट कहे जाते हैं। टेडी बियर या कोई डॉल बच्चे को निर्भरता और स्वतंत्रता के बीच की दूरी पाटने में मदद करती है। जब कोई बच्चा सोते समय अपने टेडी को गले लगाता है, तो वह कमजोरी नहीं दिखा रहा होता; आत्म-सांत्वना का अभ्यास कर रहा होता है। वह सीख रहा होता है कि माता-पिता की अनुपस्थिति में भी सुरक्षा की भावना भीतर कैसे बनाई रखी जाए।भारतीय माता-पिता बाल विकास में अकसर दो चरम सीमाओं पर रहते हैं। एक ओर तो हम बच्चों के बेहद करीब रहते हैं- कई वर्षों तक साथ सुलाना, हर गतिविधि पर नजर रखना, समस्या आने से पहले ही समाधान दे देना। दूसरी ओर, कभी-कभी हम बच्चे के खिलौनों से भावनात्मक लगाव को बचकाना कहकर जल्दी छुड़ाने की कोशिश करते हैं। दोनों ही सही नहीं हैं। यदि उम्र के अनुरूप और संतुलित तरीके से इस्तेमाल करें, तो खिलौने बाल विकास का सशक्त साधन हैं। एक वर्ष तक के शिशुओं के लिए खिलौने संवेदनात्मक अनुभव का विकास करते हैं। एक से तीन वर्ष में वे उसकी कल्पनाशीलता के साथी बन जाते हैं। बच्चा उन्हें खाना खिलाता है, सुलाता है, डांटता है तो अपने ही अनुभवों को दोहरा रहा होता है। तीन से छह वर्ष की उम्र में गुड़िया, कठपुतली और कहानी आधारित पात्र भावनात्मक अभिव्यक्ति के माध्यम बन जाते हैं। जब बच्चा कहता है टेडी उदास है, तो वह अपनी ही उदासी व्यक्त कर रहा होता है। ऐसे में संवेदनशील संवाद उसकी भावनात्मक समझ को मजबूत करता है। लेकिन 'पंच' की कहानी का दूसरा पक्ष भी है। खिलौने सुकून दे सकते हैं, पर वे वास्तविक सामाजिक संबंधों और जीवन की चुनौतियों का स्थान नहीं ले सकते। भारतीय पैरेंटिंग में यही चूक दिखती है। प्यार और चिंता के चलते हम बच्चों को जरूरत से ज्यादा सुरक्षा देने लगते हैं। हर जगह साथ जाना, हर विवाद में हस्तक्षेप करना, हर छोटी असुविधा को तुरंत दूर करना- इससे बच्चों की निर्णय लेने की क्षमता देरी से विकसित हो पाती है। जबकि कई पश्चिमी समाजों में स्वायत्तता जल्दी दी जाती है- खुद अपने काम करना, जेब खर्च संभालना, दोस्तों के मतभेद सुलझाना। दोनों मॉडल पूर्ण नहीं हैं। भावनात्मक आधार के बिना अत्यधिक स्वतंत्रता उपेक्षा बन सकती है और चुनौतियों के बिना अत्यधिक संरक्षण दुर्बलता पैदा कर सकता है। बच्चे कठिनाइयों को हटाने से नहीं, छोटी-छोटी चुनौतियों का सामना करके परिपक्व होते हैं। बाल-विकास के शोध बताते हैं कि असली विकास कठिन परिस्थितियों में होता है। मंच पर बोलना, परीक्षा की घबराहट झेलना- इन सबमें बच्चे को स्वयं कोशिश करने देना जरूरी है। अभिभावकों के लिए संदेश साफ है : कृत्रिम कठिनाइयां पैदा न करें, न ही स्नेह कम करें, बल्कि संतुलन बनाएं। यदि कोई प्रिय टेडी बच्चे को सुकून देता है, तो समझें कि वह बच्चे के भावनात्मक विकास का साथी है। साथ ही बच्चों के अनुभवों का दायरा बढ़ाएं।

पंजाब के पूर्व डिप्टी सीएम सुखबीर बादल पर हमला,2024 में स्वर्ण मंदिर में सुखबीर पर हुई थी फायरिंग

लुधियाना। महाराष्ट्र के नांदेड़ में गुरुवार को शिरोमणि अकाली दल (एसएडी) के अध्यक्ष और पंजाब के पूर्व उपमुख्यमंत्री सुखबीर सिंह बादल पर हमला हुआ। पुलिस ने बताया कि गुरुद्वारा माता साहिब कौर में एक निहंग ने उन पर कृपाण से हमला किया। बादल के हाथ पर चोट लगी है। उनकी सुरक्षा में तैनात एक पुलिसकर्मी भी घायल हुआ है। सुखबीर सिंह बादल परिवार के साथ नांदेड़ गुरुद्वारा में माथा टेकने गए थे। सुखबीर बादल को यशोसाई अस्पताल में भर्ती किया गया है। सुखबीर बादल पर दिसंबर 2024 में भी हमला हुआ था। स्वर्ण मंदिर में सेवादारी के दौरान उन पर फायरिंग की गई थी। महाराष्ट्र सीएम फडणवीस ने जांच के आदेश दिए-महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने नांदेड़ के पुलिस अधीक्षक से बात की और पंजाब के पूर्व डिप्टी सीएम और शिरोमणि अकाली दल के प्रमुख सुखबीर सिंह बादल पर हुए हमले की जांच के आदेश दिए। इस हमले के दौरान बादल के सुरक्षाकर्मी ने भी हमलावर को रोकने का प्रयास किया, जिसमें वह भी घायल हुआ। हमलावर को हिरासत में लेकर पूछताछ की जा रही है।

घटना से जुड़े सीसीटीवी फुटेज तथा प्रत्यक्षदर्शियों से जानकारी जुटाई जा रही है। सुखबीर सिंह बादल पर 4 दिसंबर 2024 को अमृतसर के गोल्डन टेंपल के प्रवेश द्वार पर जानलेवा फायरिंग की गई थी। इसमें वह बाल-बाल बच गए थे। यह हमला उस समय हुआ था जब वह अकाल तख्त की ओर से सुनाई गई एक धार्मिक सजा (तनखैया) काट रहे थे। सुखबीर बादल को सिखों की सर्वोच्च संस्था अकाल तख्त ने धार्मिक रूप से दोषी घोषित किया था। यह सजा अकाली दल सरकार के दौरान हुई गुरु ग्रंथ साहिब की बेअदबी की घटनाओं के प्रायश्चित के रूप में दी गई थी। उस दिन उनकी सजा का दूसरा दिन था। पैर में फ्रैक्चर होने के कारण वह व्हीलचेयर पर बैठे थे। गले में पट्टी लटकी हुई थी, नीली पोशाक पहने थे और हाथ में भाला लेकर द्वार पर पहरेदार के रूप में सेवा दे रहे थे। एक बुजुर्ग व्यक्ति भीड़ के बीच से धीरे-धीरे सुखबीर बादल की ओर बढ़ा। उसने अपनी जेब से 9एमएम की पिस्टल निकाली और सीधे बादल पर निशाना साधकर गोली चला दी।

'टाइम100' फेम एरियाना ने हफिंगटन पोस्ट को ग्लोबल ब्रांड बनाया,आइडेंटिटी ट्रैप पर कहा- कई सीईओ जॉब से नाखुश, फिर भी नहीं छोड़ पाते पद

वॉशिंगटन। करोड़ों की सैलरी, सीईओ जैसा पद और दुनिया भर में रुतबा हासिल करने के बाद भी कई दिग्गज खुश नहीं हैं। ये कहना है ग्लोबल मीडिया ब्रांड हफिंगटन पोस्ट की संस्थापक एरियाना हफिंगटन (76) का। वो कहती हैं कि उनके कई सीईओ दोस्त अपनी नौकरी से लगाव खत्म होने के बावजूद छोड़ने से घबराते हैं। इसकी वजह 'आइडेंटिटी ट्रैप' यानी पहचान का जाल है। जब कोई बड़ा पद किसी व्यक्ति की पूरी पहचान बन जाता है, तो उसे छोड़ना सिर्फ सैलरी नहीं, बल्कि अपने अस्तित्व को खोने जैसा लगने लगता है। 11 वर्ष में कंपनी शिखर पर पहुंचाई, फिर खुद ही छोड़ा पद-एरियाना निजी अनुभवों से बताती हैं कि 11 वर्षों की कड़ी मेहनत से उन्होंने अपनी कंपनी को शीर्ष पर पहुंचाया।

दो बार 'टाइम 100' सूची में आईं। हजार करोड़ नेटवर्थ वाली एरियाना ने 2016 में शीर्ष पर पहुंचकर पद छोड़ा और नई हेल्थ-वेलनेस कंपनी शुरू की। वे कहती हैं कि अगर पुरानी सफलता, पद और सुरक्षा को बचाए रखने के लिए वहां टिकी रहतीं, तो यह खुद के साथ धोखा होता। एरियाना का मानना है कि किसी नौकरी या सफलता को अपनी पूरी पहचान नहीं बनने देना चाहिए। पद कितना प्रतिष्ठित दिखता है, उससे ज्यादा अहम यह है कि वह काम व्यक्ति को भीतर से कैसा महसूस करा रहा है। 4 सीईओ बता रहे कामयाबी के बाद भी क्यों लगा अधूरापन-शीर्ष पर पहुंचकर 4300 करोड़ कमाने के बावजूद भी खालीपन-अमेरिकी फूड चेन कंपनी 'विंगस्टॉप यूके' के सह-संस्थापक टॉम ग्रोगन ने कंपनी को सफल बनाया। इस बीच शेयर्स बेचकर 4300 करोड़ रुपए कमाए। लक्ष्य तो हासिल हो गया, लेकिन खुशी के बजाय उन्हें सिर्फ खालीपन महसूस हुआ। उनका कहना था कि सफलता ही उनकी पहचान बन गई थी, लक्ष्य पूरा होते ही आगे बढ़ने की वजह और मकसद धुंधला पड़ गया। शोहरत और पैसा मिला, लेकिन जिंदगी का मकसद खो गया-ट्रैवल कंपनी 'एयरबीएनबी' के सह-संस्थापक ब्रायन मानते थे कि सफलता सारी समस्याएं हल कर देगी। 2020 में वे अरबपति बनें, लेकिन बाद का समय उदासी भरा था। - टेक कंपनी लूम के को-फाउंडर विनय हायरमैथ ने कंपनी बेचने के बाद खुद को दिशाहीन पाया।

कंपनी से जुड़ी पहचान हटते ही लगा कि खुद को खो चुके हैं। पद ही पहचान 'बड़ा संकट'- अमेरिकी कंपनी (टीआईएए) की सीईओ थसुंडा कहती हैं कि नौकरी के बिना उनकी पहचान कुछ नहीं है। हालांकि, पद अस्थायी होते हैं लेकिन मौजूदा दिनों में इसके उलट भावना देखने को मिल रही है।

लोग इन दिनों पद को ही पहचान मानने लगे हैं।

यूपी के 16 जिलों में बाढ़, रिहाइशी इलाकों में नाव चलीं,हिमाचल में रेल ट्रैक पर लैंडस्लाइड

नयी दिल्ली /लखनऊ। मानसून ने देश भर में फिर रफ्तार पकड़ ली है। पहाड़ी इलाकों से लेकर मैदानी क्षेत्रों तक बारिश और बाढ़ जैसे हालात हैं। यूपी के 16 जिलों में 80 से ज्यादा गांव बाढ़ प्रभावित हैं। उन्नाव में पानी घरों में घुस गया है। लोग छतों पर रहने को मजबूर हैं। कॉलोनियों में नाव चल रही हैं। कानपुर में गंगा का पानी खतरे के निशान के करीब पहुंच गया है। वाराणसी में गंगा का जलस्तर बढ़ने से घाट किनारे 100 से ज्यादा छोटे मंदिर डूब गए हैं। बिहार के कई जिलों में 13 अगस्त की शाम बारिश ने उमस भरी गर्मी से राहत दिलाई। पटना में अधिकतम तापमान 36.3 डिग्री और न्यूनतम 29.4 डिग्री दर्ज किया गया। वहीं, छपरा में 45 मिनट की तेज बारिश से शहर के कई इलाकों में डेढ़ से ढाई फीट तक पानी भर गया। करीब 100 दुकानों में भी पानी घुस गया। राज्य के 18 जिलों में आज आंधी, बारिश की संभावना है। हिमाचल प्रदेश में भारी बारिश और लैंडस्लाइड ने रेल और सड़क यातायात प्रभावित किया है। कांगड़ा में पठानकोट-बैजनाथ पपरोला रेल सेक्शन पर ट्रैक पर चट्टानें गिरने से 4 ट्रेन सेवाएं अगले आदेश तक रद्द कर दी गई हैं। सोलन के वकनाघाट में चंडीगढ़-शिमला हाईवे पर भारी बारिश के बाद घना कोहरा छाया, जिससे विजिबिलिटी काफी कम हो गई और वाहन चालकों को परेशानी हुई। हरियाणा के अंबाला, पंचकूला, यमुनानगर और कुरुक्षेत्र में शुक्रवार को भारी बारिश का अलर्ट जारी किया गया है। करनाल और कैथल समेत आसपास के जिलों में तेज बारिश हो सकती है। राज्य के 12 अन्य जिलों में हल्की से मध्यम बारिश के आसार हैं। उत्तर प्रदेश में मानसून फिर एक्टिव हो गया है।

लखनऊ और बरेली में तेज बारिश हो रही है। मौसम विभाग ने शुक्रवार को प्रदेश के सभी 75 जिलों में बारिश का अलर्ट जारी किया है। इनमें 15 जिलों में भारी बारिश की संभावना है। गंगा, यमुना और शारदा समेत 10 नदियां उफान पर हैं और 16 जिलों के 80 से ज्यादा गांव बाढ़ की चपेट में हैं। उत्तराखंड में लगातार बारिश के बीच देहरादून, पिथौरागढ़, बागेश्वर और नैनीताल में ऑरेंज अलर्ट जारी किया गया है। खराब मौसम को देखते हुए पिथौरागढ़, देहरादून और नैनीताल में 12वीं तक के स्कूल बंद कर दिए गए हैं। वहीं, प्रदेश में 61 सड़कें बंद हैं। चमोली के पीपलकोटी में निर्माणाधीन 3 किमी लंबी टनल में पानी और मलबा भरने से 22 मजदूर फंस गए। हादसे में 7 मजदूरों की मौत हुई है। बिहार में मानसून फिर एक्टिव होने वाला है। मौसम विभाग ने पटना समेत 18 जिलों में बारिश का यलो अलर्ट जारी किया है। इस दौरान 40 किमी/घंटे की रफ्तार से हवाएं चल सकती हैं और कुछ जगहों पर बिजली गिरने की भी आशंका है। वहीं, छपरा में तेज बारिश के बाद डेढ़ से ढाई फीट तक जलजमाव हो गया और 100 से ज्यादा दुकानों में पानी घुस गया। मौसम विभाग के मुताबिक, 18 अगस्त को कई जिलों में तेज बारिश हो सकती है। राजस्थान में भारी बारिश का दौर अब धीमा पड़ गया है, लेकिन शुक्रवार को भी 18 जिलों में तेज बारिश का अलर्ट है। जैसलमेर, जोधपुर, बाड़मेर और सिरोही में गुरुवार को 2 इंच तक बारिश हुई, जिससे जैसलमेर में बरसाती नदियां बहने लगीं। वहीं त्रिवेणी नदी के बहाव से बीसलपुर बांध में पानी की आवक बढ़ी है और पिछले 48 घंटे में जलस्तर 27 सेंटीमीटर बढ़ा। मौसम विभाग के मुताबिक, 16 अगस्त से बारिश कमजोर पड़ने और ज्यादातर इलाकों में हल्की बारिश या बूंदाबांदी होने की संभावना है। मध्य प्रदेश में मानसून फिर एक्टिव हो गया है। जबलपुर, रीवा, शहडोल और सागर संभाग में शुक्रवार को भारी बारिश का अलर्ट जारी किया गया है। मौसम विभाग के मुताबिक, 12 जिलों में अगले 24 घंटे के दौरान 4 इंच या उससे ज्यादा बारिश हो सकती है। वहीं भोपाल और इंदौर समेत कई जिलों में हल्की से तेज बारिश होने का अनुमान है। बंगाल की खाड़ी में बने डिप्रेशन के असर से प्रदेश में अगले कुछ दिनों तक बारिश का दौर जारी रहने की संभावना है।

लाल किला धमाका अलकायदा ने कराया,यूएन की रिपोर्ट में दावा,एनआईए की जांच में भी यही निकला था-11 मौतें हुई थीं

नयी दिल्ली। जिनसे बड़ी संख्या में लोगों को नुकसान पहुंचाया जा सके। हालांकि, अब तक वे इसमें पूरी तरह सफल नहीं हो पाए हैं, क्योंकि ऐसे हथियार बनाना बेहद मुश्किल काम है। रिपोर्ट के मुताबिक, इन आतंकी की गतिविधियां पाकिस्तान, भारत और बांग्लादेश में भी बताई गई हैं। यह संगठन बड़े हमलों के बजाय छोटे-छोटे सेल के जरिए काम करता है और हत्या, हथियारबंद हमले, घात लगाकर हमला और आत्मघाती हमले

संगठनों से जुड़े ऑनलाइन नेटवर्क पर अब भी ऐसे जहरीले पदार्थ बनाने के तरीके और जानकारी साझा की जा रही है। फरवरी में ISIL की अंग्रेजी पत्रिका 'इनवेड' में बोटुलिनम टॉक्सिन और साइनाइड जैसे जहरीले पदार्थ तैयार करने से जुड़े निर्देश प्रकाशित किए गए थे। रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि ISIL-K ने पिछले 12 महीनों के दौरान अपने नेटवर्क में 'राइसिन' नाम के एक बेहद जहरीले विष को तैयार करने से जुड़ी जानकारी भी साझा की है। 2014 में बना था एक्यूआईएस- एक्यूआईएस अलकायदा का दक्षिण एशिया में सक्रिय संगठन है। इसको सितंबर 2014 में अलकायदा प्रमुख अयमान अल-जवाहिरी ने बनाया था। इसका मकसद भारत, पाकिस्तान और बांग्लादेश जैसे देशों में अलकायदा का नेटवर्क बढ़ाना था। अमेरिकी नेशनल काउंटरटेररिज्म सेंटर के मुताबिक, एक्यूआईएस फिलहाल मुख्य रूप से अफगानिस्तान में सक्रिय है, जबकि इसके नेटवर्क जैसी गतिविधियों में शामिल रहा है। अमेरिका ने 2016 में इसे विदेशी आतंकी संगठन घोषित किया था। यूएनएससी दिल्ली ब्लास्ट रिपोर्ट क्यों दे रहा? संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (यूएनएससी) आतंकवादी संगठनों की गतिविधियों पर नजर रखता है। इसके लिए एक मॉनिटरिंग टीम काम करती है, जो आतंकी संगठनों के नेटवर्क, फंडिंग और गतिविधियों की जानकारी जुटाकर रिपोर्ट तैयार करती है। अलकायदा और आईसिस से जुड़े संगठनों के लिए यूएनएससी की 1267 सैंक्शंस कमेटी काम करती है। इसके तहत मॉनिटरिंग टीम अलग-अलग देशों से मिली जानकारी के आधार पर आतंकी संगठनों से जुड़े खतरे का आकलन करती है। यूएनएससी ऐसे संगठनों और उनसे जुड़े लोगों पर यात्रा प्रतिबंध, हथियारों पर रोक और संपत्ति फ्रीज जैसे प्रतिबंध भी लगाता है। लाल किला ब्लास्ट में यूएनएससी इसलिए अहम है, क्योंकि उसकी मॉनिटरिंग टीम की रिपोर्ट में इस हमले को एक्यूआईएस से जोड़ा गया है। एनआईए ने भी एक्यूआईएस का हाथ बताया था-एनआईए ने मई में 11 आरोपियों के खिलाफ करीब 7,500 पेज की चार्जशीट दाखिल की है। राउज एवेन्यू कोर्ट इस पर 27 अगस्त को सुनवाई करेगा। चार्जशीट में 580 से ज्यादा गवाहों के बयान भी शामिल हैं। इसमें दावा किया गया था कि सभी आरोपी आतंकी संगठन सार गजवत-उल-हिंद और अलकायदा इन इंडियन सबकॉन्टिनेंट (एक्यूआईएस) से जुड़े थे। दिल्ली के लाल किला इलाके में 10 नवंबर 2025 की शाम जोरदार धमाका हुआ था। इससे आसपास खड़ी गाड़ियों के शीशे टूट गए थे। कई दुकानों और इमारतों को भी नुकसान पहुंचा था। 11 लोगों की मौत हुई थी। कई लोग गंभीर रूप से घायल हुए थे। शुरुआती जांच में ही जांच एजेंसियों को शक हो गया था कि यह हाई-इंटेंसिटी ब्र्र्छि अटैक था। इस केस की गंभीरता को देखते हुए जांच राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) को सौंप दी गई थी। एनआईए की जांच में सामने आया था कि कुछ आरोपी कट्टरपंथी विचारधारा से प्रभावित मेडिकल प्रोफेशनल थे। 2022 में श्रीनगर में हुई एक गुप्त बैठक में उन्होंने 'AGuH Interim' नाम से संगठन को फिर सक्रिय किया और 'Operation Heavenly Hind' शुरू किया था। आरोपियों ने नए सदस्यों की भर्ती और बड़े पैमाने पर विस्फोटक तैयार किया था। एजेंसी ने बताया कि धमाके में इस्तेमाल टीएटीपी विस्फोटक आरोपियों ने खुद तैयार किया था।

इसके लिए केमिकल और उपकरण ऑनलाइन-ऑफलाइन जुटाए गए थे। जांच में यह भी सामने आया था कि आरोपी एके-47, Krinkov राइफल और अन्य हथियार जुटाने के साथ-साथ ड्रोन और रॉकेट ऑपरेटेड आईईडी पर भी प्रयोग कर रहे थे। आईए ने अब तक इस मामले में 11 लोगों को गिरफ्तार किया है। फरार आरोपियों की तलाश जारी है।

हैदराबाद लॉ यूनिवर्सिटी ग्रेजुएट्स के विरोध पर सुप्रीम कोर्ट कठोर,सीजेआई बोले- ये छात्रों और मेरे बीच की बात, बार काउंसिल कौन होता है दखल देने वाला

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने शुक्रवार को हैदराबाद की नेशनल एकेडमी ऑफ लीगल स्टडीज एंड रिसर्च (NALSAR) यूनिवर्सिटी में छात्रों के एनरोलमेंट विवाद को लेकर काउंसिल ऑफ इंडिया (बीसीआई) को नोटिस जारी कर जवाब मांगा है। सीजेआई सूर्यकांत की अगुवाई वाली बेंच ने कहा कि NALSAR के छात्रों और फैकल्टी के खिलाफ कोई दंडात्मक कार्रवाई नहीं की जाए। सुनवाई के दौरान सीजेआई सूर्यकांत ने बीसीआई के सर्कुलर पर नाराजगी जताई। उन्होंने कहा- यह बिल्कुल बेवजह था। मैं खुद ऐसा छात्र रहा हूं जो विरोध प्रदर्शनों में सक्रिय रूप से शामिल होता था। यह छात्रों और मेरे बीच की बातचीत है, बीसीआई कौन होता है इसमें दखल देने वाला? सूर्यकांत ने कहा कि अगर छात्र कानून के दायरे में रहकर अपनी बात रख रहे हैं, तो उन्हें अपनी आवाज उठाने की अनुमति होनी

चाहिए। क्या है पूरा मामला? NALSA के करीब 450 छात्रों ने सीजेआई सूर्यकांत को यूनिवर्सिटी के दीक्षांत समारोह में मुख्य अतिथि बनाए जाने का विरोध किया था। छात्रों ने यूनिवर्सिटी प्रशासन को पत्र लिखकर न्योता वापस लेने की मांग की थी। यह विरोध सीजेआई की उन हालिया टिप्पणियों को लेकर था, जिन्हें छात्रों ने प्रदर्शनकारियों से जुड़े एक मामले की सुनवाई के दौरान किया गया बताया था। इसके बाद बीसीआई ने 13 अगस्त को सभी स्टेट बार काउंसिलों को निर्देश दिया था कि NALSAR के 2026 बैच के लॉ ग्रेजुएट्स का वकील के तौर पर एनरोलमेंट अगले आदेश तक न किया जाए। साथ ही यूनिवर्सिटी के वाइस चांसलर से तीन दिन में रिपोर्ट मांगकर विरोध अभियान शुरू करने, उसे आयोजित करने या छात्रों को जुटाने वालों की जानकारी मांगी गई थी। कुछ घंटों में बीसीआई ने फैसला बदला-विरोध के बाद बीसीआई ने उसी दिन अपना फैसला बदल दिया। परिषद ने कहा कि 2026 बैच के ज्यादातर छात्र निर्दोष हैं और उन्हें किसी दूसरे की गलती के लिए नुकसान नहीं उठाना चाहिए। अब सभी NALSAR छात्र अपनी पसंद की स्टेट बार काउंसिल में एनरोल हो सकते हैं। बीसीआई ने हालांकि कहा कि वह यूनिवर्सिटी से मांगी गई रिपोर्ट का इंतजार करेगी और उसके आधार पर आगे की कार्रवाई पर फैसला लिया जा सकता है। बाद में बीसीआई ने 2026 बैच के खिलाफ अपनी कार्यवाही भी बंद कर दी और कहा कि बैच के छात्रों की किसी गड़बड़ी या आंदोलन में भूमिका नहीं मिली। एससीबीए ने भी बीसीआई के कदम पर सवाल उठाए थे-बीसीआई के शुरुआती आदेश पर सुप्रीम कोर्ट बार एसोसिएशन (एससीबीए) के अध्यक्ष और वरिष्ठ वकील विकास सिंह ने भी आपत्ति जताई थी।उन्होंने इसे मनमाना, गैरकानूनी और जरूरत से ज्यादा कार्रवाई बताते हुए कहा था कि छात्रों को अपनी बात रखने के कारण वकालत में प्रवेश से वंचित करने की धमकी नहीं दी जानी चाहिए।

राहुल बोले-बीजेपी-आरएसएस मनुवादी सोच को बढ़ावा दे रही,खड़गे की रैली के बाद शुद्धिकरण से संविधान का अपमान

कांग्रेस देश के हर जिले में सत्याग्रह करेगी

नयी दिल्ली। लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने बीजेपी-आरएसएस पर मनुवादी सोच को बढ़ावा देने का आरोप लगाया। उन्होंने यह बात कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे की हल्द्वानी रैली के बाद मंच के शुद्धिकरण को लेकर कही। राहुल ने गुरुवार को प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा कि यह ऐसी मानसिकता है, जो आज भी इंसान की हैसियत उसके जन्म से तय करती है, न कि समानता और इंसानियत से। कांग्रेस ने भी इस मुद्दे को लेकर 14 अगस्त को देशभर के जिला मुख्यालयों पर मार्च और सत्याग्रह करने का ऐलान किया है। राहुल गांधी कांग्रेस सांसद- 'यह सिर्फ किसी एक व्यक्ति का अपमान नहीं, बल्कि उस संविधान का अपमान है, जिसने छुआछूत को अपराध घोषित किया है। यह कोई अकेली घटना नहीं है, बल्कि बीजेपी-आरएसएस की सालों पुरानी विचारधारा का हिस्सा है।' खड़गे बोले- कभी किसी के आगे अपनी रक्षा के लिए गिड़गिड़ाए नहीं-मल्लिकार्जुन खड़गे ने गुरुवार को राज्यसभा में आरोप लगाया था कि 8 अगस्त को हल्द्वानी के रामलीला मैदान में मंच से भाषण दिया था, जहां लाखों लोग मौजूद थे। उस वक्त मैंने किसी समाज का, किसी धर्म का नाम नहीं लिया। सिर्फ लोगों की समस्याओं को वहां पर बताया। लेकिन मेरी स्पीच होने के बाद बीजेपी के लोगों ने हवन करके मंच का शुद्धिकरण किया। खड़गे ने कहा कि वे अनुसूचित जाति से आते हैं और सालों से संसद में हैं, लेकिन कभी किसी के आगे अपनी रक्षा के लिए गिड़गिड़ाए नहीं। उन्होंने मांग की कि हल्द्वानी में मंच का शुद्धिकरण करने वालों के खिलाफ अनटचेबिलिटी एक्ट के तहत केस दर्ज कर उन्हें गिरफ्तार किया जाए।

टाटा संस में चंद्रशेखरन की जगह ले सकते हैं नरेंद्रन,चेयरमैन की रेस में टाटा स्टील के एमडी आगे,1988 से ग्रुप से जुड़े हैं

मुंबई। टाटा संस के चेयरमैन एन चंद्रशेखरन के अचानक इस्तीफे के बाद नए उत्तराधिकारी की तलाश शुरू हो गई है। सर दोराबजी टाटा ट्रस्ट ने आज 13 अगस्त को एक प्रस्ताव पास कर 5 सदस्यीय सिलेक्शन कमेटी गठित करने की प्रक्रिया शुरू कर दी है। इस पद की रेस में टाटा स्टील के मैनेजिंग डायरेक्टर टीवी नरेंद्रन का नाम सबसे आगे है। नरेंद्रन 1988 से टाटा ग्रुप से जुड़े हुए हैं। उनका पूरा करियर टाटा स्टील में ही रहा है। चेयरमैन चुनने के लिए फरवरी 2027 तक का समय-चंद्रशेखरन ने भले ही इस्तीफा दे दिया हो लेकिन वे फरवरी 2027 तक टाटा संस के चेयरमैन पद पर बने रहेंगे। यानी वे अपना कार्यकाल पूरा करेंगे। इस वजह से टाटा संस के पास नया प्रमुख को चुनने और उनके स्मूथ ट्रांजैक्शन की योजना बनाने के लिए लगभग 6 महीने का वक्त है।5 सदस्यीय कमेटी नए चेयरमैन का फैसला करेगी-टाटा संस के नियमों के मुताबिक चेयरमैन के चयन के लिए 5 सदस्यों की एक खास कमेटी बनाई जाती है। नामों की स्क्रूटनी के बाद कमेटी उनका इंटरव्यू करती है। फिर टाटा संस बोर्ड को अंतिम नाम की सिफारिश की जाती है। 3 सदस्यः सर दोराबजी टाटा ट्रस्ट और सर रतन टाटा ट्रस्ट से नामित। 1 सदस्यः टाटा संस बोर्ड की ओर से नामित। 1 स्वतंत्र सदस्यः टाटा संस बोर्ड द्वारा चुना गया न्यूट्रल मेंबर।नरेंद्रन का नाम चर्चा में आने की तीन वजह-मुश्किल दौर में शानदार परफॉर्मेंसः नरेंद्रन ने जब पद संभाला, तब टाटा स्टील भारी कर्ज, वैश्विक बाजार में उतार-चढ़ाव और महंगे विदेशी अधिग्रहणों से जूझ रही थी। उन्होंने कर्ज कम करने, कैश फ्लो सुधारने और डोमेस्टिक पोजीशन मजबूत करने पर काम किया। यूके और नीदरलैंड्स में कठिन रीस्ट्रक्चरिंग फैसलों को भी संभाला। टाटा कल्चर की गहरी समझः 2016 के सायरस मिस्त्री विवाद के बाद, टाटा ग्रुप अपनी पुरानी परंपराओं, मूल्यों और समूह के साथ जुड़ाव को बनाए रखने पर सबसे ज्यादा जोर दे रहा है। चंद्रशेखरन की तरह, नरेंद्रन भी लगभग 4 दशक से टाटा ग्रुप का हिस्सा रहे हैं और इसकी कार्यशैली और सिद्धांतों को गहराई से समझते हैं। ऑपरेशन्स का अनुभवः चेयरमैन पद केवल रोजमर्रा के काम संभालने का नहीं, बल्कि कैपिटल एलोकेटर और रणनीतिकार का होता है। ग्रुप ऐतिहासिक रूप से ऐसे लीडर्स को तरजीह देता है जो बड़े ऑपरेशन्स, लेबर इश्यूज, रेगुलेशन और लंबे

इन्वेस्टमेंट साइकिल को समझते हों। चयन प्रक्रिया में कानूनी अड़चनः चैरिटी कमिश्नर के आदेश से फंसा पेंच-नए चेयरमैन के चयन की प्रक्रिया में प्रशासनिक और कानूनी अड़चन है। महाराष्ट्र चैरिटी कमिश्नर के एक निर्देश के कारण सर रतन टाटा ट्रस्ट (एसआरटीटी) फिलहाल अपने ट्रस्टियों की बैठक आयोजित नहीं कर पा रहा है। इस वजह से कमेटी में ट्रस्ट की ओर से 3 सदस्यों को नामित करने की प्रक्रिया प्रभावित हो सकती है, जो चंद्रशेखरन के उत्तराधिकारी के चयन में एक नया पेंच बन गया है। नोएल टाटा क्यों नहीं बन सकते अंतरिम चेयरमैन? 2016 में जब साइरस मिस्त्री को पद से हटाया गया था, तब रतन टाटा ने 78 साल की उम्र में अंतरिम चेयरमैन की जिम्मेदारी संभाली थी। इसके बाद चंद्रशेखरन को चेयरमैन बनाया गया था। हालांकि, नोएल टाटा इस बार वह रास्ता नहीं अपना सकते। साल 2022 में टाटा संस के नियमों में संशोधन किया गया था, जिसके तहत टाटा ट्रस्ट्स का चेयरमैन एक साथ टाटा संस का चेयरमैन नहीं बन सकता। रतन टाटा ही अंतिम व्यक्ति थे जिन्होंने दोनों पदों को एक साथ संभाला था। नोएल टाटा का क्या रोल रहेगा?नोएल टाटा इस साल नवंबर में 70 साल के हो रहे हैं। टाटा ग्रुप की नीति के अनुसार नॉन-एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर्स के लिए रिटायरमेंट की उम्र 70 साल तय है। इसके तहत वे ग्रुप की अन्य कंपनियों के बोर्ड से रिटायर हो जाएंगे। हालांकि, वे टाटा संस के बोर्ड में डायरेक्टर बने रहेंगे, क्योंकि वे ट्रस्ट के नॉमिनी हैं। ट्रस्ट नॉमिनी पर रिटायरमेंट उम्र की सीमा लागू नहीं होती। नॉलेज पार्टः जानें क्या है टाटा संस और टाटा ट्रस्ट्स का स्ट्रक्चर-टाटा संसः टाटा ग्रुप की मुख्य होल्डिंग कंपनी है, जो समूह की तमाम कंपनियों (जैसे टीसीएस, टाटा मोटर्स, टाटा स्टील) में मुख्य हिस्सेदारी रखती है। टाटा ट्रस्ट्सः टाटा संस में 66फीसदी की हिस्सेदारी सर दोराबजी टाटा ट्रस्ट और सर रतन टाटा ट्रस्ट के पास है। ये परोपकारी ट्रस्ट हैं जो सामाजिक कार्यों के लिए काम करते हैं।

फुकेत-दिल्ली फ्लाइट हादसा- पायलट ने 4 सेकेंड तक कंट्रोल खोयाःजांच में खुलासा, हाइड्रोलिक सिस्टम बंद होने से विमान 300 फीट नीचे आ गया था

नयी दिल्ली। एअर इंडिया की फुकेट-दिल्ली फ्लाइट के करीब 300 फीट नीचे आने की घटना में नया खुलासा हुआ है। मीडिया रिपोर्ट्स में एयरबस की शुरुआती ब्लैक बॉक्स जांच के मुताबिक, विमान के तीनों हाइड्रोलिक सिस्टम एक साथ फेल हो गए थे। इस वजह से 4 सेकंड तक विमान पायलट के कंट्रोल से बाहर हो गया था। हाइड्रोलिक सिस्टम विमान को चलाने में मदद करते हैं। जांच के मुताबिक, इसी दौरान फ्लाइट का ऑटोपायलट भी डिस्कनेक्ट हो गया और विमान का कंट्रोल बिगड़ गया था। इसके बाद विमान करीब 300 फीट नीचे आ गया। इस दौरान यात्रियों और केबिन क्रू को झटके लगे थे। कई लोग विमान की छत से जा टकराए। 24 लोग पैसेंजर घायल हो गए। फ्लाइट में 137 पैसेंजर और 8 क्रू मेंबर सवार थे। कुछ सेकंड बाद तीनों हाइड्रोलिक सिस्टम दोबारा काम करने लगे। इसके बाद विमान को कंट्रोल में लिया गया और फ्लाइट ने दिल्ली में सुरक्षित लैंडिंग की। 4 सेकंड में क्या हुआ, एयरबस की रिपोर्ट से सिलसिलेवार समझें-1. तीनों हाइड्रोलिक सिस्टम फेलः ग्रीन, ब्लू और यलो यानी तीनों सिस्टम में एक साथ खराबी आई। इससे विमान के कंट्रोल सिस्टम फेल हो गया। 2. एलिवेटर-एलेरॉन ने कमांड नहीं मानीः पायलट के इनपुट के बावजूद एलिवेटर और एलेरॉन ने रिस्पॉन्स नहीं किया। स्पॉइलर भी काम नहीं कर रहे थे। 3. ऑटोपायलट डिस्कनेक्ट हुआः फ्लाइट का ऑटोपायलट डिस्कनेक्ट हो गया। कॉकपिट में स्टॉल की चेतावनी मिलने के बाद को-पायलट ने विमान की नोज नीचे करने के लिए कंट्रोल स्टिक आगे किया। 4. कंट्रोल इनपुट का असर नहीं हुआः हाइड्रोलिक पावर नहीं होने के कारण को-पायलट के कंट्रोल स्टिक आगे करने पर भी विमान की नोज तुरंत नीचे नहीं गई। 5. विमान तेजी से नीचे आयाः तीनों हाइड्रोलिक सिस्टम दोबारा काम करने लगे तो विमान की नोज तेजी से नीचे गई। यात्रियों और क्रू को जोरदार झटका लगा। 6. विमान फिर कंट्रोल में आयाः सिस्टम के एक्टिव होने के बाद पायलट विमान को कंट्रोल में ले सके और फ्लाइट ने सुरक्षित लैंडिंग की।

एयरबस जांच में मदद क्यों कर रहा है एयरबस इस जांच में इसलिए शामिल है क्योंकि विमान उसी कंपनी ने बनाया है। भारत की जांच एजेंसी एएआईबी मामले की जांच कर रही है। एयरबस विमान के तकनीकी सिस्टम और ब्लैक बॉक्स के डेटा को समझने में मदद कर रहा है। शुरुआती जांच में एयरबस ने हाइड्रोलिक सिस्टम के प्रेशर सेंसर में खराबी की आशंका जताई है, लेकिन इसकी पक्की वजह अभी सामने नहीं आई है।

भारत की सबसे बड़ी फिल्म रामायण में बनीं सीता साई पल्लवी,कंगना की फिल्म में जूनियर आर्टिस्ट थीं डांस शो से बाहर किया था

मुंबई। 2017 में भारतीय सिनेमा की सबसे बड़ी फिल्म रामायण की घोषणा हुई। देशभर के नामी लोग इस प्रोजेक्ट से जुड़े और 2021 में फिल्म की को-

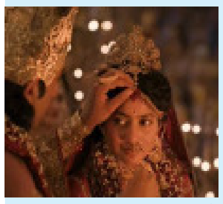

प्रोड्यूसर मधु मंटेना ने घोषणा की कि इस फिल्म में भारतीय सिनेमा के इतिहास की सबसे बड़ी स्टार कास्ट होगी। रणबीर कपूर और यश, भगवान राम और रावण के रोल के लिए चुने गए। हर किसी को इंतजार था कि आखिर माता सीता के रोल के लिए किस एक्ट्रेस का चुनाव होगा। आलिया भट्ट, दीपिका पादुकोण जैसे कई नाम की चर्चाएं हुईं। मेकर्स को एक ऐसे चेहरे की तलाश थी, जिसमें सादगी और खूबसूरती हो और उस नाम के साथ कोई स्कैंडल या विवाद न हो। और फिर अगस्त 2023 में इस रोल के लिए साउथ एक्ट्रेस साई पल्लवी के नाम की घोषणा हुई।साई पल्लवी, एक ऐसी एक्ट्रेस, जो कुछ सालों पहले तक एक जूनियर आर्टिस्ट हुआ करती थीं। फिल्म में उन्हें छोटे-मोटे रोल दिए जाते थे, जिनके डायलॉग भी कम ही हुआ करते थे। वहीं फिल्मों में आने से पहले साई पल्लवी एक मेडिकल स्टूडेंट थीं और साउथ के एक डांस रियलिटी शो की कंटेस्टेंट थीं। वो शो की फाइनलिस्ट रहीं, लेकिन जीत नहीं सकीं, लेकिन कुछ सालों बाद इन्हीं साई पल्लवी के गाने राउडी बेबी ने 1 बिलियन व्यूज हासिल कर इतिहास रच दिया। 9 मई 1992-तमिलनाडू के कोयम्बटूर में एक्साइज ऑफिसर के घर साई पल्लवी का जन्म हुआ। उनका परिवार तमिलनाडु के कोटागिरी से ताल्लुक रखता है। शुरुआती पढ़ाई अविला कॉन्वेंट स्कूल से हुई। वो बैडमिंटन की भी बेहतरीन प्लेयर रहीं। लव लेटर लिखने पर घर में हुई पिटाई-साई पल्लवी स्कूल के दिनों में बेहद शरारती थीं और स्कूल में पॉपुलर थीं। वह दूसरे बच्चों का जमकर मजाक उड़ाती थीं। देखने में बेहद खूबसूरत साई को कई लड़के अप्रोच करते थे। एक बार 7वीं क्लास में एक लड़के ने उनके बैग में लव लेटर रख दिया था। शाम को जब उनके पिता ने उनका बैग चेक किया तो उसमें लेटर

निकला। ये देखकर उन्हें पिता की खूब मार पड़ी थी। साई ने खुद नेटफ्लिक्स के शो माय विलेज में ये किस्सा बताया था। कंगना की फिल्म में बनीं जूनियर आर्टिस्ट-उनका फिल्म इंडस्ट्री से दूर-दूर तक कोई ताल्लुक नहीं था, इसके बावजूद घर में टीवी देखते हुए उनका झुकाव डांस और एक्टिंग की तरफ था। उन्होंने टीवी शो देखकर डांस सीखा। पहली बार उनका फिल्मी दुनिया से परिचय 2005 की फिल्म कस्तूरी मान से हुआ। वो फिल्म से हीरो-हीरोइन के पीछे डांस करने

वालीं बैकग्राउंड डांसर के तौर पर जुड़ीं, लेकिन फिर फिल्म में उन्हें चाइल्ड आर्टिस्ट के तौर पर काम करने का मौका मिला। कुछ लोगों से जान-पहचान की मदद से वो टीनएज में फिल्म धाम धूम (2008) में जूनियर आर्टिस्ट रहीं। वह छठी क्लास में थीं। इस फिल्म से बॉलीवुड में नई-नई आईं कंगना रनोट ने तमिल सिनेमा में डेब्यू किया था। साई पल्लवी को फिल्म में कंगना रनोट के पीछे खड़े हुए देखा जा सकता है। इन फिल्मों में छोटे रोल करने के बाद साई पल्लवी ने पढ़ाई पर फोकस किया, हालांकि स्कूल में उन्होंने कल्चरल इवेंट में हिस्सा लेना जारी रखा। वो लोकल डांस कॉम्पिटिशन में भी हिस्सा लिया करती थीं। डांस स्कूल के कुछ साथियों की मदद से साई पल्लवी ने 2008 में साउथ के तमिल डांस रियलिटी शो उंगलिल यार अदुथा प्रभु देवा (कौन बनेगा अगला प्रभु देवा) में हिस्सा लिया। शो का फाइनलिस्ट बनने पर कंटेस्टेंट को प्रभु देवा से मिलने का मौका दिया जाने वाला था। साई इसके लिए बेहद एक्साइटेड थीं, लेकिन फिनाले से ठीक पहले उनका एलिमिनेशन हो गया। दुर्भाग्य से जिस दिन वो एलिमिनेट हुईं, उस दिन उनका बर्थडे था। साई का मानना था कि अगर बर्थडे के दिन रोए, तो पूरे साल रोना पड़ेगा। एलिमिनेशन की घोषणा के बाद साई भावुक हो गईं, लेकिन आंसू रोककर रखे। घर लौटकर साई ने बर्थडे नहीं मनाया और सीधे बिस्तर पर लेट गईं। मां उनकी उदासी समझ गईं और कहा- 'बेटा जिंदगी में जो होता है, अच्छे के लिए होता है। तुम अभी रोना चाहो, तो रो लो, आज के बाद कभी रोना नहीं पड़ेगा।' पहले डांस शो से निकलने के बाद साई ने 2009 में धी अल्टीमेट डांस शो (डी4) में हिस्सा लिया और फाइनलिस्ट रहीं। शो के एक एपिसोड में डांट पड़ने से साई पल्लवी मंच पर खड़ीं भावुक हो गईं। कैमरा उन्हें रोते हुए कैप्चर न करें, इसलिए वो पलट गईं और देर तक पीछे मुड़कर रोती

रहीं। फ्राइज एंज पोटैटो को दिए इंटरव्यू में साई ने कहा था, 'एक मास्टर ने मुझे डांटा तो मैं पीछे मुड़कर रोने लगी। शो की एंकर राम्या मुझे धीरे से कह रही थीं कि तुम्हें पलटना होगा। लेकिन मैंने कहा, नहीं, मैं नहीं चाहती कि लोग मुझे रोते हुए देखें। मैं दुखी लड़की की तरह नहीं लगना चाहती थी।' शो न जीतने के बावजूद उनकी बेहतरीन हाई-एनर्जी डांस परफॉर्मेंस की वीडियो क्लिप अक्सर फेसबुक पर वायरल होती थीं। एक एपिसोड में सामंथा बतौर गेस्ट पहुंचीं और

साई की जमकर तारीफ की थी। बेहतरीन कैमरा अपीयरेंस के चलते उन्हें कुछ टीवी एड और शॉर्ट फिल्म 'काची पिजाई' में काम मिला। शो के बाद साई पल्लवी की मां ने उन्हें मेडिकल स्टडीज के लिए जॉर्जिया भेजने का मन बना लिया। साई जाना नहीं चाहती थीं, लेकिन मां ने कहा कि उनकी कजिन भी बाहर जाकर पढ़ाई कर रही हैं, उन्हें शादी के लिए अच्छे लड़के मिलेंगे, अगर साई नहीं गईं, तो वो कजिन से पीछे रह जाएंगी। मां की बात मानकर साई ने जॉर्जिया जाने का फैसला किया। डांस रियलिटी शो की बदौलत कई फिल्में ऑफर हुईं, हर रोल ठुकराया-साउथ फिल्ममेकर शेखर काम्मुला ने साई के डांस रियलिटी शो की एक क्लिप देखकर उन्हें फिल्म हैप्पी डेज ऑफर की। हालांकि साई ने पढ़ाई के लिए फिल्म ठुकरा दी। कुछ दिनों बाद उन्हें फिल्म मद्रास (2014) में लीड रोल ऑफर हुआ, लेकिन साई ने एकेडमिक्स के लिए ये ऑफर भी ठुकरा दिया। साई पल्लवी ने फ्राइज एंड पटेटो को दिए इंटरव्यू में कहा था, 'जॉर्जिया जाने से पहले मेरे भाई बहन ने मुझे एक लेटर दिया था। बाद में जब मैंने वो पढ़ा था, तो उसमें लिखा था, अच्छे मार्क के साथ लौटना। लेटर में मार्क का इशारा एग्जाम रिजल्ट नहीं, बल्कि लड़के की ओर था। मैं बालों में तेल लगाकर कॉलेज जाती थी। लड़के मुझे देखते भी नहीं थे। सारे लड़के जॉर्जिया की सुंदर लड़कियों को देखते थे। मुझे बिल्कुल भी अटेंशन नहीं मिलता था।'मेडिकल स्टडीज के फाइनल ईयर में साई छुट्टियां मनाने भारत आई थीं। इस समय उन्हें फेसबुक के जरिए फिल्मों के ऑफर मिलते थे। एक दिन अल्फोंस नाम के एक शख्स ने उन्हें मैसेज कर फिल्म में काम करने का ऑफर दिया। साई को लगा कोई मजाक कर रहा है, तो उन्होंने मैसेज इग्नोर कर दिया। कुछ दिनों बाद साई के घर में कॉल आया। कॉल करने वाले शख्स ने कहा कि वो अल्फोंस हैं। फिल्में बनाते हैं और साई को अपनी फिल्म में कास्ट करना चाहते हैं। साई को लगा कि ये किसी स्कैमर का कॉल है। उनकी मां पास ही खड़ी थीं। साई की मां ने जैसे ही उनके हाथ से फोन लिया, साई ने फुसफुसाते हुए कहा- 'मां ये एक स्कैमर है, बातों पर ध्यान मत देना।' उनकी बात कॉलर ने सुन ली और मां से कहा, 'मैं फिल्ममेकर हूं, आप गूगल में मेरे बारे में पता कर सकती हैं। आप चाहें तो मैं अपनी फोटो भेजने के लिए भी तैयार हूं।' कॉल करने वाले शख्स वाकई में साउथ के जाने-माने फिल्ममेकर अल्फोंस थे। गलतफहमी दूर होने के बाद साई ने उनसे बात की। उन्होंने बताया कि 6 साल पहले साई के डांस रियलिटी शो की क्लिप देखने के बाद उनसे संपर्क किया था, लेकिन तब साई ने पढ़ाई का हवाला देकर इनकार कर दिया था। साई ने इस बार ऑफर में दिलचस्पी दिखाई तो अल्फोंस की टीम खासतौर पर साई का ऑडिशन लेने कोयम्बटूर पहुंची। स्क्रीनटेस्ट सफल रहा और इस तरह साई को पहली फिल्म 'प्रेमम' मिली। साई की ये पहली फिल्म थी, इसके बावजूद उन्होंने अपनी 3 खास शर्तें रखीं। पहली शर्त- जब तक कॉलेज की छुट्टी है, तब तक ही फिल्म की शूटिंग करूंगी। दूसरी शर्त- छोटे कपड़े नहीं पहनूंगी, जो कपड़े सहज लगे, वही पहनाएं जाएं। तीसरी शर्त- मेकअप नहीं करूंगी। तब करीब 22 साल की साई पल्लवी के चेहरे पर कई मुंहासे थे। कोई भी लड़की इन्हें फिल्म में छिपाना चाहती,

लेकिन साई ने मेकअप न करने का फैसला किया। छुट्टियों में ही साई ने पूरी फिल्म शूट की और फिर जॉर्जिया जाकर एग्जाम दिया। साई पल्लवी फिल्म 'प्रेमम' का फर्स्ट डे फर्स्ट शो देखने के लिए जॉर्जिया से भारत आईं। जैसे ही थिएटर में फिल्म खत्म हुई, पूरा थिएटर तालियों से गूंज उठा। इसे क्रिटिक्स और दर्शकों का खूब प्यार मिला। इस फिल्म के लिए न्यूकमर साई पल्लवी को 1-2 नहीं बल्कि पूरे 6 अवॉर्ड मिले थे। उनके बिना मेकअप काम करने की भी काफी चर्चा रही। पहली फिल्म प्रेमम की बदौलत साई पल्लवी को कई फिल्मों के ऑफर मिलने लगे, लेकिन मां ने कहा कि उन्हें पढ़ाई पूरी करनी होगी। अगले एक साल तक साई जॉर्जिया में ही रहीं। वहां साउथ के कई और स्टूडेंट थे, जिन्होंने प्रेमम देखी थी। ऐसे में जब साई आम कपड़े पहनकर कॉलेज जातीं, तो लोग उनके पहनावे पर सवाल उठाते थे। भारत आकर 2016 में साई ने दुलकर सलमान के साथ मलयाली फिल्म 'काली' की। ये फिल्म भी हिट रही और साई पल्लवी को बेस्ट एक्ट्रेस का नॉमिनेशन मिला। मलयाली फिल्मों में स्टारडम हासिल करने के बाद साई ने 2017 में तेलुगु फिल्म 'फिदा' की, जो ब्लॉकबस्टर रही। इस फिल्म में साई पल्लवी की परफॉर्मेंस को 100 ग्रेटेस्ट परफॉर्मेंस ऑफ द डीकेड्स में शामिल किया है। आगे उन्होंने 'मिडिल क्लास अब्बाई', 'मारी 2', 'एथिरन', 'लव स्टोरी' जैसी बेहतरीन फिल्में करते हुए खुद को साउथ की टॉप एक्ट्रेसेस में शामिल किया। साई पल्लवी बैक-टु-बैक कई फिल्में शूट करती हैं, जिसके लिए उन्हें कई बार नाइट शिफ्ट में काम करना पड़ता है। देर रात काम करने से नींद न आए, इसलिए साई हमेशा अपने पास एक ड्राइंग बुक और क्रेयॉन्स रखती हैं। वो सेट पर फ्री समय में नींद से बचने के लिए ड्राइंग बनाती हैं। किसिंग सीन, तो कभी गहराई न होने पर ठुकराईं कई फिल्में-साल 2018 में साई पल्लवी ने विजय देवरकोंडा के साथ डेब्यूटेंट डायरेक्टर भरत कम्मा के साथ फिल्म साइन की थी।

आधी उम्र के बाद हड्डियां होतीं हैं कमजोर,शरीर के इशारों को न करें इग्नोर, डॉक्टर से जानें हड्डियां मजबूत बनाने के टिप्स

नयी दिल्ली। 40 की उम्र के बाद हड्डियों में कमजोरी एक 'साइलेंट' प्रॉब्लम है, जो धीरे-धीरे

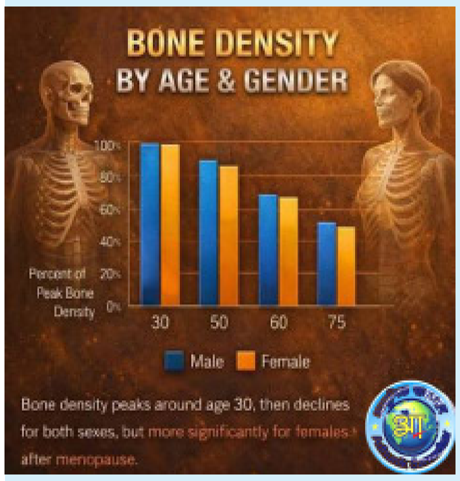

बढ़ती है। यह अक्सर तब सामने आती है, जब फ्रैक्चर या दर्द होता है। दरअसल उम्र बढ़ने के साथ शरीर में कैल्शियम का अवशोषण कम हो जाता है और बोन डेंसिटी घटने लगती है। महिलाओं में मेनोपॉज के बाद यह प्रक्रिया और तेज हो जाती है। खराब लाइफस्टाइल, विटामिन डी की कमी, एक्सरसाइज की कमी और गलत खानपान इस खतरे को बढ़ा सकते हैं। परेशानी की बात यह है कि शुरुआत में इसके लक्षण बहुत स्पष्ट नहीं होते। इसलिए लोग इसे नजरअंदाज कर देते हैं। अगर समय रहते इस पर ध्यान दिया जाए तो बोन लॉस की प्रक्रिया को थोड़ा स्लो किया जा सकता है। आज 'जरूरत की खबर' में बोन हेल्थ पर बात करेंगे। साथ ही जानेंगे-हड्डियों की कमजोरी के क्या संकेत हैं? स्ट्रॉन्ग बोन हेल्थ के लिए लाइफस्टाइल कैसी होनी चाहिए? विषय को समझेंगे एक्सपर्ट: डॉ. अभिषेक कुमार मिश्रा, सीनियर कंसल्टेंट, ऑर्थोपेडिक्स एंड स्पाइन, अपोलो स्पेक्ट्रा हॉस्पिटल, दिल्ली जी के साथ सवाल जवाब के माध्यम से। कैल्शियम की कमी-उम्र बढ़ने के साथ शरीर में कैल्शियम का अवशोषण कम हो जाता है। अगर डाइट से पर्याप्त कैल्शियम नहीं मिलता तो शरीर हड्डियों से कैल्शियम लेने लगता है। इससे हड्डियां कमजोर होने लगती हैं। विटामिन डी की कमी-विटामिन डी कैल्शियम को शरीर में एब्जॉर्ब करने में मदद करता है। धूप में कम समय बिताने और खराब लाइफस्टाइल के कारण इसकी कमी हो जाती है। इससे हड्डियां कमजोर होती हैं। हॉर्मोनल बदलाव (खासकर महिलाओं में) महिलाओं में मेनोपॉज के बाद एस्ट्रोजेन हॉर्मोन तेजी से घटता है। यह हॉर्मोन हड्डियों को मजबूत रखने में मदद करता है। इसकी कमी से बोन लॉस बढ़ सकता है। बोन रिमॉडलिंग इंबैलेंस-हमारी हड्डियां लगातार टूटती और बनती रहती हैं। 30-35 साल की उम्र तक ये अपनी पीक स्ट्रेंथ पर होती हैं। 40 के बाद हड्डियां घिसने की प्रक्रिया तेज और बनने की प्रक्रिया स्लो हो जाती है.इसके कारण

हड्डियां धीरे-धीरे पतली और कमजोर होने लगती हैं। लो फिजिकल एक्टिविटी-40 के बाद ज्यादातर लोग एक्टिव नहीं रहते हैं। हड्डियों की मजबूती के लिए फिजिकल एक्टिविटी जरूरी है। इसकी कमी से हड्डियां कमजोर पड़ती हैं। खराब लाइफस्टाइल-ज्यादा नमक, जंक फूड, कैफीन, शराब और स्मोकिंग हड्डियों से कैल्शियम कम करती हैं और बोन डेंसिटी घटाती हैं। कुछ बीमारियां और दवाएं-थायरॉइड, किडनी डिजीज जैसी बीमारियां हड्डियों को कमजोर बना सकती हैं। लंबे समय तक स्टेरॉयड लेने से भी हड्डियां कमजोर हो सकती हैं। सवाल- हड्डियों की कमजोरी के क्या संकेत हैं? जवाब- हड्डियों की कमजोरी के शुरुआती संकेत बहुत हल्के होते हैं। इसलिए लोग इसे नजरअंदाज कर देते हैं। लेकिन समय रहते ये लक्षण पहचान लिए जाएं तो बड़ी समस्या से बचा जा सकता है। सवाल- 40़ एज में किन लोगों को बोन लॉस का रिस्क ज्यादा होता है? जवाब- कुछ लोगों को इसका रिस्क ज्यादा होता है। इसके पीछे शरीर, लाइफस्टाइल और मेडिकल फैक्टर्स जिम्मेदार हैं। पॉइंटर्स में देखिए किन्हें ज्यादा रिस्क है- जिन्हें कैल्शियम/विटामिन डी की कमी है। जो फिजिकली कम एक्टिव रहते हैं। जो स्मोकिंग/ड्रिंकिग करते हैं। जिनका बीएमआई बहुत कम है। जिनकी बोन डिजीज की फैमिली हिस्ट्री है। जिन्हें थायरॉइड है। जिन्हें किडनी डिजीज है। जिन्हें रूमेटाइड आर्थराइटिस है। जो मेडिकेशन पर हैं। जिनका सनलाइट एक्सपोजर कम है। जिनकी लाइफस्टाल खराब है। जिनकी उम्र 50 से ऊपर है। जिन महिलाओं को मेनोपॉज हो चुका है। सवाल-हड्डियां कमजोर होने से किन बीमारियों का रिस्क बढ़ता है? जवाब- कमजोर हड्डियां दर्द या थकान के साथ कई गंभीर बीमारियों का रिस्क बढ़ा सकती हैं। 40+ उम्र में यह रिस्क और ज्यादा हो जाता है। सवाल- बोन हेल्थ का पता कैसे लगाया जाता है? जवाब- बोन हेल्थ का सही आकलन सिर्फ लक्षणों से नहीं लगाया जा सकता है। इसके साथ टेस्ट और मेडिकल एसेसमेंट की भी जरूरत होती है.जैसेकि-बीएमडी (बोन मिनरल डेंसिटी) टेस्ट इसमें हड्डियों की डेंसिटी मापी जाती है। डुअल-एनर्जी एक्स-रे एब्जॉर्प्टियोमेट्री स्कैन किया जाता है। इससे पता चलता है कि हड्डियां नॉर्मल हैं, कमजोर हैं या ऑस्टियोपोरोसिस (हड्डियां पतली या कमजोर होना) है। एक्स-रे-इससे हड्डियों के स्ट्रक्चर और फ्रैक्चर का पता चलता है। हालांकि शुरुआती बोन लॉस इसमें नहीं दिखता है। ब्लड टेस्ट-कैल्शियम और विटामिन डी का लेवल जांचा जाता है। थायरॉइड या अन्य समस्याओं का भी पता चलता है। इससे हड्डियों की कमजोरी की वजह समझने में मदद मिलती है। फ्रैक्चर रिस्क एसेसमेंट टूल स्कोर यह एक कैलकुलेशन टूल है। यह उम्र, वजन, लाइफस्टाइल और मेडिकल हिस्ट्री के आधार पर फ्रैक्चर रिस्क बताता है। शारीरिक संकेतडॉक्टर कुछ लक्षणों के आधार पर अंदाजा लगाते हैं। जैसे- बार-बार फ्रैक्चर लगातार हड्डियों में दर्द -लाइफस्टाइल (डाइट, एक्सरसाइज) मेडिकल हिस्ट्री सवाल- लाइफस्टाइल का बोन हेल्थ पर क्या प्रभाव पड़ता है? जवाब- संतुलित डाइट, रेगुलर एक्सरसाइज और पर्याप्त धूप लेने से हड्डियां मजबूत होती हैं। जबकि खराब खानपान, लो फिजिकल एक्टिविटी, स्मोकिंग और ड्रिंकिंग हड्डियों को कमजोर करते हैं। गलत आदतें धीरे-धीरे बोन डेंसिटी कम करती हैं और समय के साथ ऑस्टियोपोरोसिस का रिस्क बढ़ा सकती हैं। सवाल- स्ट्रॉन्ग बोन हेल्थ के लिए लाइफस्टाइल कैसी होनी चाहिए? जवाब- हेल्दी लाइफस्टाइल और सही आदतें बोन हेल्थ को स्ट्रॉन्ग बनाने में मदद करती हैं। बोन हेल्थ से जुड़े कॉमन सवाल और जवाब-सवाल- क्या बिना टेस्ट के भी बोन हेल्थ का पता चल सकता है? जवाब- नहीं, केवल लक्षणों से सटीक पता नहीं चलता।सही आकलन के लिए टेस्ट जरूरी होते हैं। सवाल- क्या बोन लॉस को पूरी तरह रोका जा सकता है? जवाब- पूरी तरह तो नहीं, लेकिन सही डाइट, रेगुलर एक्सरसाइज और हेल्दी लाइफस्टाइल से इसे काफी हद तक धीमा किया जा सकता है। सवाल- क्या हर व्यक्ति को 40 के बाद बोन डेंसिटी टेस्ट कराना चाहिए? जवाब- हां, लेकिन जिन्हें ज्यादा रिस्क है, उन्हें जरूर कराना चाहिए। जैसेकि-मेनोपॉज होने पर। जिन्हें पहले फ्रैक्चर हो चुका हो। जिन्हें कैल्शियम/विटामिन फ्रैक्चर रिस्क एसेसमेंट टूल की कमी है। जो लंबे समय से स्टेरॉयड ले रहे हैं। सवाल- क्या सिर्फ सप्लीमेंट लेने से हड्डियां मजबूत हो सकती हैं? जवाब- नहीं, सप्लीमेंट के साथ संतुलित डाइट और हेल्दी लाइफस्टाइल भी जरूरी है।सवाल- किन स्थितियों में डॉक्टर की सलाह लेना जरूरी है? जवाब- इन स्थितियों में डॉक्टर से सलाह लेना जरूरी है- किसी खास कारण के बिना लगातार हड्डियों में दर्द बना रहे।मामूली झटके में हड्डी टूट जाए। चलने-फिरने में दिक्कत या बैलेंस खराब हो। कमजोरी, थकान या मसल्स में दर्द हो। अगर बोन डिजीज की फैमिली हिस्ट्री हो। लंबे समय से स्टेरॉयड या अन्य दवाएं ले रहे हों। 50 साल से ज्यादा उम्र हो। सवाल- 40 की उम्र के बाद हड्डियां कमजोर क्यों होने लगती हैं? जवाब- 40 की उम्र के बाद हड्डियों का कमजोर होना एक सामान्य प्रक्रिया है, लेकिन यह अचानक नहीं होता। इसके पीछे कई कारण हैं।

उसे देख नहीं पाती तो बेचैनी होती हैं, और कोई अच्छा भी नहीं लगता, ये प्रेम तो नहीं या सिर्फ अट्रैक्शन

नोएडा। विषय को समझेंगे एक्सपर्ट: डॉ. जया सुकुल, क्लिनिकल साइकोलॉजिस्ट, नोएडा जी के साथ सवाल जवाब के माध्यम से। सवाल- मैं बीएससी सेकेंड ईयर का स्टूडेंट हूं। मेरी क्लास की एक लड़की

से मेरी काफी अच्छी दोस्ती है। हम साथ बैठकर पढ़ते हैं और अपनी पर्सनल बातें भी शेयर करते हैं। वीकेंड्स पर हम साथ घूमने भी जाते हैं। पिछले कुछ समय से मुझे महसूस हो रहा है कि मेरे मन में उसके लिए अलग तरह की फीलिंग्स आने लगी हैं। उसे देखते ही खुशी होती है, उससे बात न हो तो बेचैनी होने लगती है। मैं अक्सर उसके बारे में ही सोचता रहता हूं। लेकिन मुझे समझ नहीं आ रहा कि ये सच में प्यार है या सिर्फ अट्रैक्शन। मैं अपनी फीलिंग्स को कैसे समझूं और इस सिचुएशन में मुझे क्या करना चाहिए? जवाब- आप जीवन के उस पड़ाव पर हैं, जहां भावनाएं बहुत तीव्र होती हैं। इस उम्र में किसी की तरफ अट्रैक्ट होना, हर वक्त उसके बारे में सोचना, बेचैनी होना बहुत स्वाभाविक है। ये अच्छी बात है कि आप अपनी भावनाओं को लेकर अवेयर हैं और जल्दबाजी में किसी फैसले से पहले इसे समझना चाहते हैं। चलिए अब आपकी उलझन को सुलझाने की कोशिश करते हैं।

प्यार और अट्रैक्शन में फर्क-प्यार और अट्रैक्शन के बीच थिन लाइन होती है, दोनों पेट में तितलियों जैसा एहसास कराते हैं। हालांकि, इनके मायने थोड़े अलग हैं। अट्रैक्शन-यह आमतौर पर बाहरी चीजों पर निर्भर करता है। जैसे लुक, स्टाइल, बात करने का तरीका, हंसी या कोई खास टैलेंट। यह बहुत तेजी से होता है और कई बार बहुत तीव्र भी होता है, लेकिन यह जरूरी नहीं कि टिकाऊ भी हो। प्यार-यह एक गहरा एहसास है, जो समय के साथ विकसित होता है। यह सिर्फ बाहरी सुंदरता पर निर्भर नहीं होता है। यह व्यक्ति के विचारों, उसके स्वभाव, उसकी अच्छाइयों-कमियों सबको स्वीकारने पर आता है। प्यार में स्थायित्व होता है और अक्सर लंबे समय तक टिका रहता है। ये प्यार है या आकर्षण? अपनी भावनाओं की गहराई नापने के लिए खुद से कुछ सवाल पूछें और ईमानदारी से उनके जवाब दें। यह कोई मनोवैज्ञानिक साइंटिफिक टेस्ट नहीं है। ये सवाल सिर्फ इसलिए है, ताकि आप खुद से पूछकर यह समझ सकें कि आप जो फील कर रहे हैं, वह प्यार है या आकर्षण। अगर सेक्शन 'ए' (प्यार) के ज्यादातर सवालों का जवाब 'हां' है तो इसका मतलब आप प्यार में हैं। अगर सेक्शन 'बी' (आकर्षण) के ज्यादातर सवालों का जवाब 'हां' है तो आपको आकर्षण है। यह वैल्यू जजमेंट की बात नहीं है। अगर प्यार है तो भी सुंदर है। अगर आकर्षण है तो भी उतना ही सुंदर है। अमूमन लोग अट्रैक्शन को 'कमतर' और प्यार को 'बड़ा' मानते हैं। लेकिन हकीकत यह है कि कई बार गहरे प्यार की शुरुआत एक छोटे से आकर्षण

से ही होती है। इसलिए अपनी फीलिंग्स को जज न करें।नतीजे पर पहुंचने की जल्दी क्यों? इस वक्त में जो है, उसे महसूस करें-आपकी उम्र अभी सिर्फ 21 साल है। यह करियर बनाने और खुद को समझने का समय है। इतनी जल्दी किसी रिश्ते को 'प्यार' का नाम देकर खुद पर दबाव न डालें। इस वक्त जो है, उसे महसूस करें। दोस्ती बहुत अनमोल होती है। हो सकता है कि आप दोनों का यह तालमेल समय के साथ और गहरा हो जाए और स्वाभाविक रूप से प्यार में बदल जाए। ये भी हो सकता है कि यह रिश्ता सिर्फ एक अच्छी दोस्ती ही रहे। जो भी हो, उसे स्वाभाविक तरीके से होने दें। कुछ भी 'चेज' (पीछा) न करें या जबरदस्ती हासिल करने की कोशिश न करें। इसके साथ आपको यह भी समझने की जरूरत कि प्यार वो नहीं है, जो किताबों में अक्सर पढ़ने को मिलता है। प्यार वो नहीं, जो

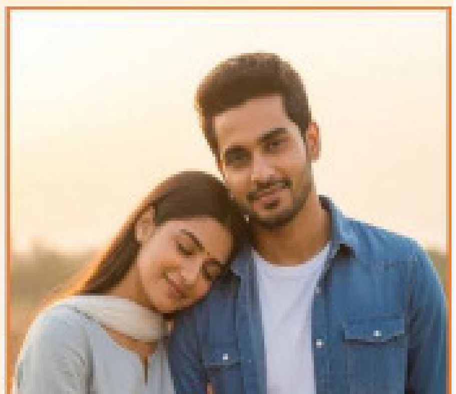

रोमांटिक किताबें हमें बताती हैं-फिल्मों और किताबों में प्यार को अक्सर विरह, तड़प, बेचैनी और पागलपन की तरह दिखाया जाता है। जबकि असल जिंदगी में प्यार का पैरामीटर बिल्कुल बुनियादी होना चाहिए। प्यार वो नहीं है, जो आपको कमजोर या असुरक्षित बनाए।

जब भी लगे प्यार है, खुद से पूछें ये सवाल-जिंदगी में जब भी ये कन्फ्यूजन हो कि ये प्यार है या नहीं, तो खुद से एक ही सवाल पूछें- 'जब मैं उसके साथ होता हूं, तो अपने बारे में कैसा महसूस करता हूं?' अगर किसी के साथ होकर आप खुद को ज्यादा बेहतर, ज्यादा आत्मविश्वास से भरे, ज्यादा सुरक्षित और खुश महसूस करते हैं, तो इसका मतलब कि वह एक हेल्दी रिश्ता है। अगर किसी के साथ आप खुद को इनसिक्योर, छोटा या परेशान महसूस करते हैं तो वह प्यार नहीं, बल्कि एक टॉक्सिक सिचुएशन हो सकती है।प्यार सिर्फ खुशी है, प्यार सुंदरता है, प्यार मौज है। प्यार दुख-दर्द, पीड़ा और बोझ नहीं है।अंतिम सलाह-अभी आप सिर्फ अपनी दोस्ती को एन्जॉय करें। एक-दूसरे को और बेहतर तरीके से जानें। वक्त को अपना काम करने दें। अगर यह सच्चा प्यार होगा तो यह समय की कसौटी पर खरा उतरेगा और आपको खुद-ब-खुद इसका जवाब मिल जाएगा। जल्दबाजी न करें, जर्नी का आनंद लें।

स्वत्वाधिकारी एवं मुद्रक
डॉ. दीपक अरोरा
द्वारा रामा प्रिंटर्स
53/25/1 ए बेली रोड
न्यू कटरा प्रयागराज
(उ.प्र) 211002 से
मुद्रित एवं सी-41यूपी
एसआईडीसी औद्योगिक
क्षेत्र नैनी प्रयागराज।
संपादक/प्रकाशक
डा.पुनीत अरोरा
मो.न.09415608710
RNINO.UPHIN/2015/63398
www.adhuniksamachar.com

नोटः- इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी0आर0बी0 एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होगा।